३

श्री धनमुनि 'प्रथम'

वक्तृत्वकला के बीज

भाग ३

वक्तृत्व-कला के बीज

श्री धनमुनि "प्रथम"

वक्तृत्वकला के बीज
तीसरा भाग

समन्वय प्रकाशन

प्र० सं०

* मोतीलाल पारख
* ब्रह्मदेव सिंह
गोंडा (प्रतापगढ़)

प्रकाशक :

* श्री गणपतलाल छोटालाल
एण्ड कं०
C/o भगवतप्रसाद रणछोडलाल
४४, न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद-२

प्रथम आवृत्ति : २०००
बसन्त पंचमी, वि० सं० २०२८
जनवरी १९७२

*

मूल्य : पाँच रुपए, पचास पैसे

सम्पर्क सूत्र :
संजय साहित्य संगम
दासबिल्डिग नं० ५
बिल्लोचपुरा, आगरा-२

मुद्रक :
श्री विष्णु प्रिंटिंग प्रेस
राजा की मण्डी,
आगरा-२

उन जिज्ञासुओं को,
जिनकी उर्वर-मनोभूमि में
ये बीज
अंकुरित
पुष्पित
फलित हो
अपना विराट् रूप प्राप्त कर सकें !

प्राप्ति केन्द्र :

*** श्री सम्पतराय बोरड़**

C/o मदनचन्द सम्पतराय बोरड़
४०, धानमण्डी
श्री गंगानगर (राजस्थान)

*** श्री मोतीलाल पारख**

दि अहमदाबाद लक्ष्मी कॉटन् मिल्स कं० लि०
पो० बाक्स नं० ४२
अहमदाबाद-२२

*** श्री गणपतलाल छोटालाल एण्ड कं०**

श्री भगवतप्रसाद रणछोडलाल
४४, न्यू क्लोथ मार्केट
अहमदाबाद-२

प्राक्कथन

मानव जीवन में वाचा की उपलब्धि एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। हमारे प्राचीन आचार्यों की दृष्टि में वाचा ही सरस्वती का अधिष्ठान है, **वाचा सरस्वती भिषग्**[1]—वाचा ज्ञान की अधिष्ठात्री होने से स्वयं सरस्वती रूप है, और समाज के विकृत आचार-विचार-रूप रोगों को दूर करने के कारण यह कुशल वैद्य भी है।

अन्तर के भावों को एक दूसरे तक पहुँचाने का एक बहुत बड़ा माध्यम वाचा ही है। यदि मानव के पास वाचा न होती तो, उसकी क्या दशा होती ? क्या वह भी मूकपशुओं की तरह भीतर ही भीतर घुटकर समाप्त नहीं हो जाता ? मनुष्य, जो गूंगा होता है, वह अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए कितने हाथ-पैर मारता है, कितना छटपटाता है फिर भी अपना सही आशय कहां समझा पाता है दूसरों को ?

बोलना वाचा का एक गुण है, किंतु बोलना एक अलग चीज है, और वक्ता होना वस्तुतः एक अलग चीज है। बोलने को हर कोई बोलता है, पर वह कोई कला नहीं है, किंतु वक्तृत्व एक कला है। वक्ता साधारण से विषय को भी कितने सुन्दर और मनोहारी रूप से प्रस्तुत करता है कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। वक्ता के बोल श्रोता के हृदय में ऐसे उतर जाते हैं कि वह उन्हें जीवन भर नहीं भूलता।

कर्मयोगी श्रीकृष्ण, भगवान्‌महावीर, तथागतबुद्ध, व्यास और भद्रबाहु आदि भारतीय प्रवचन-परम्परा के ऐसे महान् प्रवक्ता थे,

---

१ यजुर्वेद १६।१२

जिनकी वाणी का नाद आज भी हजारों-लाखों लोगों के हृदयों को आप्यायित कर रहा है। महाकाल की तूफानी हवाओं में भी उनकी वाणी की दिव्य ज्योति न बुझी है और न बुझेगी।

हर कोई वाचा का धारक, वाचा का स्वामी नहीं बन सकता। वाचा का स्वामी ही वाग्मी या वक्ता कहलाता है। वक्ता होने के लिए ज्ञान एवं अनुभव का आयाम बहुत ही विस्तृत होना चाहिए। विशाल अध्ययन, मनन-चिंतन एवं अनुभव का परिपाक वाणी को तेजस्वी एवं चिरस्थायी बनाता है। विना अध्ययन एवं विषय की व्यापक जानकारी के भाषण केवल भषण (भोंकना) मात्र रह जाता है, वक्ता कितना ही चीखे-चिल्लाये, उछले-कूदे यदि प्रस्तावित विषय पर उसका सक्षम अधिकार नहीं है, तो वह सभा में हास्यास्पद हो जाता है, उसके व्यक्तित्व की गरिमा लुप्त हो जाती है। इसीलिए बहुत प्राचीनयुग में एक ऋषि ने कहा था—**वक्ता शतसहस्रेषु**, अर्थात् लाखों में कोई एक वक्ता होता है।

शतावधानी मुनि श्री धनराज जी जैनजगत के यशस्वी प्रवक्ता हैं। उनका प्रवचन, वस्तुतः प्रवचन होता है। श्रोताओं को अपने प्रस्तावित विषय पर केन्द्रित एवं मंत्र-मुग्ध कर देना उनका सहज कर्म है। और यह उनका वक्तृत्व—एक बहुत बड़े व्यापक एवं गंभीर अध्ययन पर आधारित है। उनका संस्कृत-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं का ज्ञान विस्तृत है, साथ ही तलस्पर्शी भी! मालूम होता है, उन्होंने पांडित्य को केवल छुआ भर नहीं है, किंतु समग्रशक्ति के साथ उसे गहराई से अधिग्रहण किया है। उनकी प्रस्तुत पुस्तक **'वक्तृत्वकला के बीज'** में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

प्रस्तुत कृति में जैन आगम, बौद्धवाङ्मय, वेदों से लेकर उपनिषद ब्राह्मण, पुराण, स्मृति आदि वैदिक साहित्य तथा लोककथानक, कहावतें, रूपक, ऐतिहासिक घटनाएँ, ज्ञान-विज्ञान की उपयोगी चर्चाएँ—

इसप्रकार शृंखलाबद्ध रूप में संकलित है कि किसी भी विषय पर हम बहुत कुछ विचार-सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सचमुच वक्तृत्व-कला के अगणित बीज इसमें सन्निहित हैं। सूक्तियों का तो एक प्रकार से यह रत्नाकर ही है। अंग्रेजी साहित्य व अन्य धर्मग्रंथों के उद्धरण भी काफी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रसंग और स्थल तो ऐसे हैं, जो केवल सूक्ति और सुभाषित ही नहीं है, उनमें विषय की तलस्पर्शी गहराई भी है और उसपर से कोई भी अध्येता अपने ज्ञान के आयाम को और अधिक व्यापक बना सकता है। लगता है, जैसे मुनि श्री जी वाङ्मय के रूप में विराट् पुरुष हो गए हैं। जहां पर भी दृष्टि पड़ती है, कोई-न-कोई वचन ऐसा मिल ही जाता है. जो हृदय को छू जाता है और यदि प्रवक्ता प्रसंगत: अपने भाषण में उपयोग करे, तो अवश्य ही श्रोताओं के मस्तक झूम उठेंगे।

प्रश्न हो सकता है—'वक्तृत्वकला के बीज' में मुनि श्री का अपना क्या है ? यह एक संग्रह है और संग्रह केवल पुरानी निधि होती है; परन्तु मैं कहूँगा— कि फूलों की माला का निर्माता माली जब विभिन्न जाति एवं विभिन्न रंगों के मोहक पुष्पों की माला बनाता है तो उसमें उसका अपना क्या है ? बिखरे फूल, फूल हैं, माली नहीं। माला का अपना एक अलग ही विलक्षण सौन्दर्य है। रंग-बिरंगे फूलों का उपयुक्त चुनाव करना और उनका कलात्मक रूप में संयोजन करना—यही तो मालाकार का कर्म है, जो स्वयं में एक विलक्षण एवं विशिष्ट कलाकर्म है। मुनि श्री जी वक्तृत्वकला के बीज में ऐसे ही विलक्षण मालाकार हैं। विषयों का उपयुक्त चयन एवं तत्सम्बन्धित सूक्तियों आदि का संकलन इतना शानदार हुआ है कि इस प्रकार का संकलन अन्यत्र इस रूप में नहीं देखा गया।

एक बात और—श्री चन्दनमुनि जी की संस्कृत-प्राकृत रचनाओं ने मुझे यथावसर काफी प्रभावित किया है। मैं उनकी विद्वत्ता का प्रशंसक रहा हूँ। श्री धनमुनि जी उनके बड़े भाई हैं—जब यह मुझे

ज्ञात हुआ तो मेरे हर्ष की सीमाओं का और भी अधिक विस्तार हो गया। अब मैं कैसे कहूँ कि इन दोनों में कौन बड़ा है और कौन छोटा ? अच्छा यही होगा कि एक को दूसरे से उपमित कर दूँ। उनकी बहुश्रुतता एवं इनकी संग्रह-कुशलता से मेरा मन मुग्ध हो गया है।

मैं मुनि श्री जी, और उनकी इस महत्वपूर्णकृति का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। विभिन्न भागों में प्रकाशित होने वाली इस विराट् कृति से प्रवचनकार, लेखक एवं स्वाध्यायप्रेमीजन मुनि श्री के प्रति ऋणी रहेंगे। वे जब भी चाहेंगे, वक्तृत्व के बीज में से उन्हें कुछ मिलेगा ही, वे रिक्तहस्त नहीं रहेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रवक्तृ-समाज—मुनि श्री जी का एतदर्थ आभारी है और आभारी रहेगा।

जैन भवन
आश्विन शुक्ला-३
आगरा

—**उपाध्याय अमरमुनि**

●●

सम्पादकीय

वक्तृत्वगुण एक कला है, और वह बहुत बड़ी साधना की अपेक्षा करता है। आगम का ज्ञान, लोकव्यवहार का ज्ञान, लोकमानस का ज्ञान और समय एवं परिस्थितियों का ज्ञान तथा इन सबके साथ निस्पृहता, निर्भयता, स्वर की मधुरता, ओजस्विता आदि गुणों की साधना एवं विकास से ही वक्तृत्वकला का विकास हो सकता है, और ऐसे वक्ता वस्तुतः हजारों लाखों में कोई एकाध ही मिलते हैं।

तेरापंथ के अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्रीतुलसी में वक्तृत्वकला के ये विशिष्ट गुण चमत्कारी ढंग से विकसित हुए हैं। उनकी वाणी का जादू श्रोताओं के मन-मस्तिष्क को आन्दोलित कर देता है। भारतवर्ष की सुदीर्घ पदयात्राओं के मध्य लाखों नर-नारियों ने उनकी ओजस्विनी वाणी सुनी है और उसके मधुर प्रभाव को जीवन में अनुभव किया है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक मुनि श्री धनराजजी भी वास्तव में वक्तृत्वकला के महान गुणों के धनी एक कुशल प्रवक्ता संत हैं। वे कवि भी हैं, गायक भी हैं, और तेरापंथ शासन में सर्वप्रथम अवधानकार भी है; इन सबके साथ-साथ बहुत बड़े विद्वान तो हैं ही। उनके प्रवचन जहां भी होते हैं, श्रोताओं की अपार भीड़ उमड़ आती है। आपके विहार करने के बाद भी श्रोता आपकी याद करते रहते हैं।

आपकी भावना है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी वक्तृत्वकला का विकास करें और उसका सदुपयोग करें, अतः जन-समाज के लाभार्थ आपने वक्तृत्व के योग्य विभिन्न सामग्रियों का यह विशाल संग्रह प्रस्तुत किया है।

बहुत समय से जनता की, विद्वानों की और वक्तृत्वकला के अभ्यासियों की माँग थी कि इस दुर्लभ सामग्री का जन-हिताय प्रकाशन किया जाय तो बहुत लोगों को लाभ मिलेगा। जनता की भावना के अनुसार हमने मुनिश्री की इस सामग्री को धारणा प्रारंभ किया। इस कार्य को सम्पन्न करने में श्री डूंगरगढ़, मोमासर, भादरा, हिसार, टोहाना, नरवाना कैथल, हांसी, भिवानी, तोसाम, ऊमरा, सिसाय, जमालपुर, सिरसा और भटिंडा आदि के विद्यार्थियों एवं युवकों ने अथक परिश्रम किया है। फलस्वरूप लगभग सौ कापियों व १५०० विषयों में यह सामग्री संकलित हुई है। हम इस विशाल संग्रह को विभिन्न भागों में प्रकाशित करने का संकल्प लेकर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हुए हैं।

वक्तृत्वकला के बीज का यह तीसरा भाग पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन का समस्त अर्थभार श्री गणपतलाल छोटालाल एंड कंपनी, अहमदाबाद ने वहन किया है। इस अनुकरणीय उदारता के लिए हम उनके हृदय से आभारी हैं।

वक्तृत्वकला के बीज का यह दूसरा भाग पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। इसके प्रकाशन एवं प्रूफ संशोधन आदि में श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' तथा श्री ब्रह्मदेवसिंह जी आदि का जो हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ है—उसके लिए भी हम हृदय से कृतज्ञता-ज्ञापित करते हैं। आशा है यह पुस्तक जन-जन के लिए, वक्ताओं और लेखकों के लिए एक इनसाईक्लोपीड़िया (विश्वकोश) का काम देगी और युग-युग तक इसका लाभ मिलता रहेगा....

●●

आत्म निवेदन

'मनुष्य की प्रकृति का बदलना अत्यन्त कठिन है'—यह सूक्ति मेरे लिए सवा सोलह आना ठीक साबित हुई। बचपन में जब मैं कलकत्ता—श्री जैनेश्वेताम्बर-तेरापंथी-विद्यालय में पढ़ता था, जहाँ तक याद है, मुझे जलपान के लिए प्रायः प्रतिदिन एक आना मिलता था। प्रकृति में संग्रह करने की भावना अधिक थी, अतः मैं खर्च करके भी उसमें से कुछ न कुछ बचा ही लेता था। इस प्रकार मेरे पास कई रुपये इकट्ठे हो गये थे और मैं उनको एक डिब्बी में रखा करता था।

विक्रम संवत् १९७९ में अचानक माताजी की मृत्यु होने से विरक्त होकर हम (पिता श्री केवलचन्द जी, मैं, छोटी बहन दीपांजी और छोटे भाई चन्दनमल जी) परमकृपालु श्री कालुगणीजी के पास दीक्षित हो गए। यद्यपि दीक्षित होकर रुपयों-पैसो का संग्रह छोड़ दिया, फिर भी संग्रहवृत्ति नहीं छूट सकी। वह धनसंग्रह से हटकर ज्ञानसंग्रह की ओर झुक गई। श्री कालुगणी के चरणों में हम अनेक बालक मुनि आगम-व्याकरण-काव्य-कोष आदि पढ़ रहे थे। लेकिन मेरी प्रकृति इस प्रकार की बन गई थी कि जो भी दोहा-छन्द-श्लोक-ढाल-व्याख्यान-कथा आदि सुनने या पढ़ने में अच्छे लगते, मैं तत्काल उन्हें लिख लेता या संसार-पक्षीय पिताजी से लिखवा लेता। फलस्वरूप उपरोक्त सामग्री का काफी अच्छा संग्रह हो गया। उसे देखकर अनेक मुनि विनोद की भाषा में कह दिया करते थे कि "धन्नू तो न्यारा में जाने की (अलग विहार करने की) तैयारी कर रहा है।" उत्तर में मैं कहा करता—"क्या आप गारंटी दे सकते हैं कि इतने (१० या १५) साल तक आचार्य श्री हमें अपने साथ ही रखेंगे? क्या पता, कल ही अलग विहार करने

का फरमान करदें। व्याख्यानादि का संग्रह होगा तो धर्मोपदेश या धर्म-प्रचार करने में सहायता मिलेगी।"

समय-समय पर उपरोक्त साथी मुनियों का हास्य-विनोद चल ही रहा था कि वि० सं० १९८६ में श्री कालुगणी ने अचानक ही श्रीकेवलमुनि को अग्रगण्य बनाकर रतननगर (थेलासर) चातुर्मास करने का हुक्म दे दिया। हम दोनों भाई (मैं और चन्दन मुनि) उनके साथ थे। व्याख्यान आदि का किया हुआ संग्रह उस चातुर्मास में बहुत काम आया एवं भविष्य के लिए उत्तमोत्तम ज्ञानसंग्रह करने की भावना बलवती बनी। हम कुछ वर्ष तक पिताजी के साथ विचरते रहे। उनके दिवंगत होने के पश्चात् दोनों भाई अग्रगण्य के रूप में पृथक्-पृथक् विहार करने लगे।

विशेष प्रेरणा—एक बार मैंने 'वक्ता बनो' नाम की पुस्तक पढ़ी। उसमें वक्ता बनने के विषय में खासी अच्छी बातें बताई हुई थीं। पढ़ते-पढ़ते यह पंक्ति दृष्टिगोचर हुई कि "कोई भी ग्रन्थ या शास्त्र पढ़ो, उसमें जो भी बात अपने काम की लगे, उसे तत्काल लिख लो।" इस पंक्ति ने मेरी संग्रह करने की प्रवृत्ति को पूर्वापेक्षया अत्यधिक तेज बना दिया। मुझे कोई भी नई युक्ति, सूक्ति या कहानी मिलती, उसे तुरंत लिख लेता। फिर जो उनमें विशेष उपयोगी लगती, उसे औपदेशिक भजन, स्तवन या व्याख्यान के रूप में गूंथ लेता। इस प्रवृत्ति के कारण मेरे पास अनेक भाषाओं में निबद्ध स्वरचित सैकड़ों भजन और सैकड़ों व्याख्यान इकट्ठे हो गए। फिर जैन-कथा साहित्य एवं तात्त्विकसाहित्य की ओर रुचि बढ़ी। फलस्वरूप दोनों ही विषयों पर अनेक पुस्तकों की रचना हुई। उनमें छोटी-बड़ी लगभग २९ पुस्तकें तो प्रकाश में आ चुकी, शेष ३०-३२ अप्रकाशित ही हैं।

एक बार संगृहीत-सामग्री के विषय में यह सुझाव आया कि यदि प्राचीन संग्रह को व्यवस्थित करके एक ग्रन्थ का रूप दे दिया जाए, तो यह उत्कृष्ट उपयोगी चीज बन जाए। मैंने इस सुझाव को स्वीकार किया और अपने प्राचीन संग्रह को व्यवस्थित करने में जुट गया। लेकिन पुराने संग्रह में कौन-सी सूक्ति, श्लोक या हेतु किस ग्रन्थ या शास्त्र के है अथवा किस कवि, वक्ता या लेखक के हैं—यह प्रायः लिखा हुआ नहीं था। अतः ग्रन्थों या शास्त्रों आदि की साक्षियां प्राप्त करने के लिए—इन आठ-नौ वर्षों में वेद, उपनिषद्, इतिहास, स्मृति, पुराण, कुरान, बाइबिल, जैनशास्त्र, बौद्धशास्त्र, नीतिशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, दर्शन-शास्त्र, संगीत-शास्त्र तथा अनेक हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, राजस्थानी, गुजराती मराठी एवं पंजाबी सूक्तिसंग्रहों का ध्यानपूर्वक यथासम्भव अध्ययन किया। उससे काफी नया संग्रह बना और प्राचीन संग्रह को साक्षी सम्पन्न बनाने में सहायता मिली। फिर भी खेद है कि अनेक सूक्तियाँ एवं श्लोक आदि बिना साक्षी के ही रह गए। प्रयत्न करने पर भी उनकी साक्षियां नहीं मिल सकीं। जिन-जिन की साक्षियां मिली हैं, उन-उनके आगे वे लगा दी गई हैं। जिनकी साक्षियां उपलब्ध नहीं हो सकीं, उनके आगे स्थान रिक्त छोड़ दिया गया है। कई जगह प्राचीन संग्रह के आधार पर केवल महाभारत, वाल्मीकि रामायण, योग-शास्त्र आदि महान् ग्रन्थों के नाममात्र लगाए हैं; अस्तु !

इस ग्रंथ के संकलन में किसी भी मत या सम्प्रदाय विशेष का खण्डन-मण्डन करने की दृष्टि नहीं है, केवल यही दिखलाने का प्रयत्न किया गया है कि कौन क्या कहता है या क्या मानता है। यद्यपि विश्व के विभिन्न देशनिवासी मनीषियों के मतों का संकलन होने से ग्रन्थ में भाषा की एकरूपता नहीं रह

सकी है। कहीं प्राकृत-संस्कृत, पारसी, उर्दू एवं अंग्रेजी भाषा है तो कहीं हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पंजाबी और बंगाली भाषा के प्रयोग हैं, फिर भी कठिन भाषाओं के श्लोक, वाक्य आदि का अर्थ हिन्दी भाषा में कर दिया गया है। दूसरे प्रकार से भी इस ग्रन्थ में भाषा की विविधता है। कई ग्रन्थों, कवियों, लेखकों एवं विचारकों ने अपने सिद्धान्त निरवद्यभाषा में व्यक्त किए हैं तो कई साफ-साफ सावद्यभाषा में ही बोले हैं। मुझे जिस रूप में जिसके जो विचार मिले हैं, उन्हें मैंने उसी रूप में अंकित किया है, लेकिन मेरा अनुमोदन केवल निर्वद्य-सिद्धान्तों के साथ है।

ग्रन्थ की सर्वोपयोगिता— इस ग्रन्थ में उच्चस्तरीय विद्वानों के लिए जहाँ जैन-बौद्ध आगमों के गम्भीर पद्य हैं, वेदों, उपनिषदों के अद्‌भुत मंत्र हैं, स्मृति एवं नीति के हृदयग्राही श्लोक हैं वहाँ सर्वसाधारण के लिए सीधी-सादी भाषा के दोहे, छन्द, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ, हेतु, दृष्टान्त एवं छोटी-छोटी कहानियाँ भी हैं। अतः यह ग्रन्थ निःसंदेह हर एक व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—ऐसी मेरी मान्यता है। वक्ता, कवि और लेखक इस ग्रन्थ से विशेष लाभ उठा सकेंगे, क्योंकि इसके सहारे वे अपने भाषण, काव्य और लेख को ठोस, सजीव, एवं हृदयग्राही बना सकेंगे एवं अद्‌भुत विचारों का विचित्र चित्रण करके उनमें निखार ला सकेंगे, अस्तु!

ग्रन्थ का नामकरण—इस ग्रन्थ का नाम 'वक्तृत्वकला के बीज' रखा गया है। वक्तृत्वकला की उपज के निमित्त यहाँ केवल बीज इकट्ठे किए गए हैं। बीजों का वपन किसलिए, कैसे, कब और कहां करना—यह वप्ता (बीच बोनेवालों) की भावना एवं बुद्धिमत्ता पर निर्भर करेगा। फिर भी मेरी मनोकामना तो यही है कि वप्ता परमात्मपदप्राप्ति रूप फलों

के लिए शास्त्रोक्तविधि से अच्छे अवसर पर उत्तम क्षेत्रों में इन बीजों का वपन करेंगे। अस्तु !

यहाँ मैं इस बात को भी कहे बिना नहीं रह सकता कि जिन ग्रन्थों, लेखों, समाचार पत्रों एवं व्यक्तियों से इस ग्रन्थ के संकलन में सहयोग मिला है—वे सभी सहायक रूप से मेरे लिए चिरस्मरणीय रहेंगे।

यह ग्रंथ कई भागों में विभक्त है एवं उनमें सैकड़ों विषयों का संकलन है। उक्त संग्रह बालोतरा मर्यादा-महोत्सव के समय मैंने आचार्य श्रीतुलसी को भेंट किया। उन्होंने देखकर बहुत प्रसन्नता व्यक्त की एवं फरमाया कि इसमें छोटी-छोटी कहानियाँ एवं घटनाएँ भी लगा देनी चाहिये ताकि विशेष उपयोगी बन जाए। आचार्य श्री का आदेश स्वीकार करके इसे संक्षिप्त कहानियाँ तथा घटनाओं से सम्पन्न किया गया।

मुनिश्री चन्दनमलजी, डूंगरमलजी, नथमलजी, नगराज जी, मधुकरजी, राकेशजी, रूपचन्दजी आदि अनेक साधु एवं साध्वियों ने भी इस ग्रन्थ को विशेष उपयोगी माना। बीदासर-महोत्सव पर कई संतों का यह अनुरोध रहा कि इस संग्रह को अवश्य धरा दिया जाए।

सर्व प्रथम वि० सं० २०२३ में श्री डूँगरगढ़ के श्रावकों ने इसे धारणा शुरू किया। फिर थली, हरियाणा एवं पंजाब के अनेक ग्रामों-नगरों के उत्साही युवकों ने तीन वर्षों के अथक-परिश्रम से धारकर इसे प्रकाशन के योग्य बनाया।

मुझे दृढ़विश्वास है कि पाठकगण इसके अध्ययन, चिन्तन एवं मनन से अपने बुद्धि-वैभव को क्रमशः बढ़ाते जायेंगे—

वि० सं० २०२७ मृगसर बदी ४
मंगलवार, रामामंडी, (पंजाब)

—धनमुनि 'प्रथम'

अनुक्रमणिका

पहला कोष्ठक पृष्ठ १ से ८३

१ विनय की परिभाषा, २ विनय की महिमा, ३ विनय का उपदेश, ४ विनय के भेद, ५ विनीत, ६ अविनीत, ७ नम्रता, ८ नम्रता से लाभ, ९ नम्र, १० वन्दना, ११ नमस्कार, १२ लघुता, १३ अभिमान, १४ अभिमान के दुर्गुण, १५ तू-मैं, १६ अभिमान के भेद आदि, १७ मान-त्याग, १८ व्यर्थ अभिमान, १९ तुच्छ व्यक्तियों में अधिक अभिमान, २० अभिमानी, २१ अभिमान के उदाहरण, २२ अपमान, २३ अपमान-निषेध, २४ महत् पुरुषों का धन मान, २५ इज्जत-सम्मान-प्रतिष्ठा, २६ सम्मान की इच्छा का निषेध, २७ प्रशंसा, २८ आत्म-स्तुति-स्वप्रशंसा-निषेध, २९ स्वप्रशंसक, ३० ख्याति-प्रसिद्धि, ३१ यश-कीर्ति, ३२ आर्जव-सरलता, ३३ सरल एवं कुटिल व्यक्ति, ३४ माया-कपट, ३५ मायावी व्यक्ति, ३६ मायात्याग का उपदेश, ३७ कषाय, ३८ कषायत्याग, ३९ मंदकषायी-तीव्रकषायी, ४० प्रमाद-आलस्य, ४१ प्रमाद के भेद, ४२ प्रमादत्याग, ४३ प्रमादी-आलसी, ४४ प्रमादी के विषय में कहावतें ।

दूसरा कोष्ठक पृष्ठ ८४ से १६७

१ निद्रा २ निद्रा से लाभ, ३ निद्रा-निषेध, ४ सोने का समय, ५ स्वप्न, ६ निद्रा के भेद, ७ नींद की अद्भुत करतूतें, ८ जागरण, ९ जागृत और सुप्त, १० चिन्ता. ११ चिन्ता से हानि, १२ चिन्ता-निषेध, १३ शोक, १४ शोक-निषेध, १५ घृणा, १३ रोदन, १७ आंसू, १८ भय, १९ भय आवश्यक, २० अभयदाता, २१ भयभीत, २२ भय सम्बन्धी कहावतें, २३ भय सम्बन्धी दृष्टान्त, २४ हास्य, २५ हास्य-निषेध, २६ उपहास-मज़ाक-विनोद, २७ उपहास-निषेध, २८ लज्जा, २९ लज्जानिषेध, ३० निर्लज्ज, ३१ स्वार्थ, ३२ मतलब, ३३ गरज, ३४ हाँजीड़े (खुशामदी), ३५ भूल, ३६ भूल पर हास्य, ३७ भूल सुधार, ३८ भूल को स्वीकार करना कठिन, ३९ भूल के विषय में विविध, ४० भयंकर भूलें, ४१ हठ (आग्रह), ४२ रिवाज (रूढ़ि), ४३ प्रसन्नता (खुशमिजाज़ी), ४४ प्रसन्न ।

तीसरा कोष्ठक पृष्ठ १६८ से २४७

१ वैराग्य, २ वैराग्य की महिमा, ३ वैराग्यवान, ४ ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति-आदि), ५ ज्ञान की आवश्यकता, ६ ज्ञान से लाभ, ७ ज्ञान की महिमा, ८ ज्ञान का उपदेश, ९ ज्ञान के भेद, १० सम्यक्ज्ञान, ११ अतिज्ञान और अल्पज्ञान, १२ ज्ञानी, १३ विज्ञान एवं वैज्ञानिक, १४ ज्ञान और क्रिया, १५ विना ज्ञान की क्रिया, १६ अज्ञान, १७ अज्ञानी, १८ ज्ञानी-अज्ञानी में अन्तर, १९ विद्या, २० विद्या की महिमा, २१ विद्या प्राप्ति के साधन, २२ विद्याध्ययन की प्रेरणा, २३ विद्या की आवश्यकता, २४ विद्या के पात्र-अपात्र, २५ विद्या के भेद, २६ विद्यार्थी, २७ विद्यार्थी और परीक्षा, २८ शिक्षा, २९ शिक्षा-ग्रहण, ३० शिक्षादान, ३१ शिक्षा के योग्य-अयोग्य बातें, ३२ महत्व-पूर्ण शिक्षाएँ ।

चौथा कोष्ठक पृष्ठ २४८ से ३०४

१ विद्वान् २ बुद्धि का महत्व, ३ बुद्धि के भेद, ४ सुबुद्धि एवं कुबुद्धि, ५ बुद्धि एवं उसके फल और गुण, ६ अक्ल के विषय में कहावतें, ७ बुद्धिमत्ता, ८ बुद्धिमान, ९ विशिष्ट बुद्धिवाले व्यक्ति, १० बुद्धिमानों के कर्त्तव्य, ११ बुद्धिमान एवं मूर्ख में अन्तर, १२ पण्डित, १३ पंडितों की विशेषता, १४ परोपदेश-कुशल पण्डित, १५ चतुर, १६ हाजिर-जवाब, १७ मूर्ख, १८ मूर्ख को उपदेश, १९ मूर्खों की मान्यता, २० निन्दनीय मूर्खजीवन, २१ मूर्ख का संग त्याज्य, २२ मूर्खता, २३ मूर्खता के उदाहरण।

चारों कोष्ठकों में कुल १४५ विषय तथा दस भागों में लगभग १५०० विषय हैं।

तीसरा भाग

वक्तृत्वकला के बीज

पहला कोष्ठक

१ विनय की परिभाषा

१. अनाशातना बहुमानकरणं च विनयः।

—**जैनसिद्धान्तदीपिका ५।२५**

आशातना नहीं करना एवं योग्य व्यक्तियों का बहुमान करना विनय है।

२. व्रत-विद्या-वयोऽधिकेषु नीचैराचरणं विनयः।

—**नीतिवाक्यामृत ११।६**

व्रत, विद्या एवं उम्र में बड़ों के सामने नम्र आचरण करना विनय है।

३. जम्हा विणयइ कम्मं, अट्ठविहं चाउरंतमोक्खाय।
तम्हाउ वयंति विउ, विणयंति विलीणसंसारा॥

—**स्थानांग ६।५११ टीका**

विनय आठों कर्मों को दूर करता है, उससे चारगति के अन्त रूप मोक्ष की प्राप्ति होती है—इसीलिए सर्वज्ञ भगवान—इसको विनय कहते हैं।

४. विनयति क्लेशकारकमष्टप्रकारं कर्म इतिः विनय।
देश-कालाद्यपेक्षया यथोचितप्रतिपत्तिलक्षणे॥

—**प्रवचन सारोद्धार**

क्लेशकारी आठ कर्मों को दूर करता है, इसलिये वह विनय है। देश-काल आदि की अपेक्षा से यथायोग्य प्रतिपत्ति के अर्थ में यह विनय शब्द काम आता है। ★

विनय की महिमा

१. विणओ जिणसासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे ।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो ।।

—हारिभद्र आवश्यक निर्युक्ति १२।१६

विनय जिनशासन का मूल है । विनीत ही संयत होता है । जो विनय से शून्य है, उसका क्या धर्म और क्या तप ?

२. मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स, खंधाओ पच्छा समुवेंति साहा।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता, तओ से पुप्फं च फलं रसो य।।
एवं धम्मस्स विणओ, मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण किर्त्ति सुयं सिग्घं, निस्सेसं चाभिगच्छई ।।

—दशवैकालिक ९।२।१-२

वृक्ष के मूल से स्कन्ध उत्पन्न होता है, स्कन्ध के पश्चात् शाखाएँ निकलती हैं । उसके पश्चात् पत्र, पुष्प, फल और रस होता है । इसी प्रकार धर्म का मूल है 'विनय' और उसका परम (अन्तिम) फल है मोक्ष । विनय के द्वारा मुनि कीर्ति, श्लाघनीय-श्रुत और समस्त इष्ट तत्त्वों को प्राप्त होता है ।

३. विनयायत्ताश्चगुणाः सर्वे । —प्रशमरति

समस्त गुण विनय के आधीन हैं ।

४. सकलगुणभूषा च विनयः ।

विनय समस्त गुणों का श्रृंगार है ।

५. विणएण णरो, गंधेण चंदणं सोमयाइ रयणियरो ।
महुररसेण अमयं, जणपियत्तं लहइ भुवणे ।

—धर्मरत्न प्रकरण, १ अधिकार

जैसे सुगन्ध के कारण चंदन, सौम्यता के कारण चन्द्रमा और मधुरता के कारण अमृत जगत्प्रिय है, ऐसे ही विनय के कारण मनुष्य लोगों में प्रिय बन जाता है ।

६. विनयाद् याति पात्रताम् । **—हितो० प्रास्ताविका ६**

विनय से पात्रता प्राप्त होती है ।

७. मद्दवयाएणं अणुस्सियत्तं जणयइ ।
अट्ठमयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ।।

—उत्तराध्ययन २६।४६

मृदु भाव से जीव अनुद्धतता को प्राप्त होता है । आठ मद स्थानों का नाश करता है ।

★

३ विनय का उपदेश

१. विणए ठविज्ज अप्पाणं, इच्छंतो हियमप्पणो ।

—उत्तराध्ययन १।६

आत्महितैषी पुरुष को अपनी आत्मा विनय में स्थापित करनी चाहिए ।

२. रायणिएसु विणयं पउंजे···· —दशवैकालिक ८।४१

रत्नाधिक-ज्ञान, दर्शन, चारित्र में बड़े पुरुषों के प्रति विनय रखना चाहिए ।

३. तम्हा विणयमेसिज्जा, सोलं पडिलभेज्जओ ।

—उत्तराध्ययन १।७

विनय से शील-सदाचार मिलता है अतः उसकी खोज करनी चाहिए ।

☆

४ विनय के भेद

१. सत्तविहे विणए पण्णत्ते तं जहा—
णाणविणए, दंसणविणए, चरित्तविणए, मणविणए,
वयविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए।

— औपपातिक सूत्र सम० अधिकार-तपवर्णन
स्थानांग ७।५८५ : भगवती २५।७

विनय सात प्रकार का है—(१) ज्ञानविनय, (२) दर्शनविनय, (३) चारित्रविनय, (४) मनविनय, (५) वचनविनय, (६) कायविनय, (७) लोकोपचारविनय।

२. लोगोवयारविणओ, अत्थनिमित्तं च कामहेउं च।
भयविणय-मुक्खविणओ, विणओ खलु पंचहा होई॥

—विशेषावश्यकभाष्य ३१०

विनय पांच प्रकार का होता है—(१) लोकोपचार विनय-लोकव्यवहार निभाने के लिए सत्कार-सेवा-पूजादि करना। (२) भय-विनय—अपराध होने पर मजिस्ट्रेट, शिक्षक या गुरु का विनय करना। (३) अर्थ-विनय—धन के लिए सेठ, मैनेजर आदि का विनय करना। (४) काम-विनय—कामपिपासा की पूर्ति के लिये वेश्या आदि के सामने विनय करना। (५) मोक्ष-विनय—आत्मकल्याण के लिये गुरु आदि का विनय करना।

३. सुस्सुसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते तं जहा—
अब्भुट्ठाणाइ वा, आसणाभिग्गहेइ वा, आसणप्पयाणेइ

वा, सक्कारेइ वा, सम्माणेइ वा, कित्तिकम्मेइ वा, अंजलिपग्गहेइ वा, इत्तस्स अणुगच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छंतस्स पडिसंसाहणया।

—औपपातिक सूत्र-समवसरण अधिकार

दर्शनविनय के अन्तर्गत शुश्रूषा-सेवारूप विनय अनेक प्रकार का है, जैसे—गुरु आदि के आने पर खड़ा होना, आसन का आमंत्रण देना, आसन देना, वस्त्रादिक से सत्कार करना, स्तुति से सम्मान करना, कृतिकर्म-द्वादशावर्त वंदन करना, हाथ जोड़कर सम्मुख बैठना, आये सुनकर सम्मुख जाना, ठहरे हों तो सेवा करना, जाते हों तो पहुँचाने जाना।

४. लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते तं जहा—
(१) अब्भासवत्तियं, (२) परछंदाणुवत्तियं, (३) कज्जहेउं, (४) कयपडिकिरिया, (५) अत्तगवेसणया, (६) देशकालन्नुया, (७) सव्वट्ठेसु अप्पडिलोमया।

—औपातिक सूत्र तप-अधिकार
भगवती २५।७

लोकोपचार विनय सात प्रकार का है—
(१) गुरु आदि के निकट रहना, (२) उनकी इच्छानुसार वर्तन करना, (३) कार्य सिद्धि के लिए साधन जुठकार नेना, (४) किये हुए उपकार का बदला चुकाना, (५) रोगी की सेवा सभाल करना, (६) अवसरोचित प्रवृत्ति करना, (७) सब कार्यों में अनुकूल प्रवृत्ति करना।

५

विनीत

१. सुविणीअप्पा···दीसंति सुहमेहंता ।

—दशवैकालिक ९।२।६

सुविनीत आत्माएँ···विश्व में सुखी नजर आ रही हैं ।

२. दक्षः श्रियमधिगच्छति, पथ्याशी कल्पतां सुखमरोगी ।
उद्युक्तो विद्यान्तं, धर्मार्थयशांसि च विनीतः ॥

—हितोपदेश ३।११६

निपुणव्यक्ति संपत्ति पाता है। पथ्य से भोजन करनेवाला नीरोगता पाता है। निरोगव्यक्ति सुख पाता है। उद्यमी विद्या का पार पाता है एवं विनीत धर्म, अर्थ और यश को प्राप्त करता है।

३. हिरिमं पडिसंलीणे, सुविणीए ।

—उत्तराध्ययन ११।१३

लज्जाशील और इन्द्रियों का दमन करनेवाला व्यक्ति सुविनीत कहलाता है ।

४ विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ति विणियस्स य ।

—दशवैकालिक ९।२।२२

अविनीत को विपत्ति और विनीत को संपत्ति-ज्ञानादि गुणों की प्राप्ति होती है ।

★

६ अविनीत

१. अविणीअप्पा····दीसंति दुहमेहंता। —**दशवैकालिक ९।२।५**

अविनीत आत्माएं····विश्व में दुःखी नजर आ रही हैं।

२. यो युक्तायुक्तयोरविवेकी विपर्यस्तमतिर्वा स दुर्विनीतः।

—**नीतिवाक्यामृत**

जो युक्तअयुक्त कार्य में अविवेकी हो या विपरीत बुद्धिवाला हो, वह दुर्विनीत होता है।

३. जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
बुज्झइ से अविणीयप्पा, कट्ठं सोयगयं जहा॥

—**दशवैकालिक ९।२।३**

जो चण्ड, अज्ञ (मृग) स्तब्ध, अप्रियवादी, मायावी और शठ है, वह अविनीततातात्मा संसार-स्रोत में वैसे ही प्रवाहित होता रहता है—जैसे नदी के स्रोत में पड़ा हुआ काठ।

४. विणयंपि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पइ नरो।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए॥

— **दशवैकालिक ९।२।४**

विनय में उपाय के द्वारा भी प्रेरित करने पर जो कुपित होता है, वह आती हुई दिव्य-लक्ष्मी को डंडे से रोकता है।

★

नम्रता

१. नम्रता का अर्थ है अहंभाव का आत्यन्तिक क्षय।

—गांधी

२. कभी नहीं टूटने वाला एक कवच है—नम्रता।

— कन्फ्यूसियस

३. चापलूसी दोष है, नम्रता गुण है।

४. निंदक पीछे से काटता है चापलूस सामने से, काटता है।

— शेक्सपियर

५. सद्गुणों के सामने झुकना नम्रता है और स्वार्थ के वश झुकना दीनता है। भगवान ने नम्रता का उपदेश दिया है, दीनता का नहीं।

६. नम्रता के तीन लक्षण हैं—(१) कड़वी बात का मीठा उत्तर देना, (२) क्रोध आने पर चुप रहना, (३) अपराधी को दण्ड देते समय भी कोमलता रखना।

—जीवनसौरभ पृष्ठ ३

★

नम्रता से लाभ

१. नम्रता, प्रेमपूर्ण व्यवहार और सहनशीलता से मनुष्य तो क्या, देवता भी तुम्हारे वश हो सकते हैं।

—महात्मा तिलक

२. 'रज्जब'! रज ऊँची चढ़े, नरमाई तें जान।
रोड़े ठोकर खात हैं, करड़ाई के पाण॥

३. आपरी नरमाई पैला ने खावे। —राजस्थानी कहावत

४. नगीने नरम सोने में ही लगते हैं।

५. न हंस के सीखा है, न रोके सीखा है।
जो कुछ भी सीखा है, किसी का होके सीखा है॥

६. बिना नम्रता के कहां, सूना ज्ञान पड़ा।
बिना झुके 'धन' कूप में, भर सकता न घड़ा॥

—दोहा-संदोह

७. नर की अरु नल-नीरकी, एके गति करि जोय।
जैतो नीचो हो चले, तैतो ऊँचो होय।—बिहारी

नम्रता का उपदेश

(क) तीन शिक्षाएँ—कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ।

(ख) इखलाक सबसे रखना, तस्वीर है तो ये है।
खाक अपने को समझना, अक्सीर है तो ये है॥—उर्दू शेर

(ग) नम्रता में ईसू और सुकरात का अनुकरण करो।

—फ्रैंकलीन

★

६ नम्र

१. नमइ मेहावी। —उत्तराध्ययन १।४५

मेधावी—विद्वान् व्यक्ति नमन करता है।

२. झुकता वही है जिसमें कुछ जान है,
अकड़पन तो खास मुर्दे की पहचान है। —उर्दू शेर

३ अधिक दानोंवाले पौधे ज्यादा झुकते हैं एवं भूसेवाले अकड़े हुए खड़े रहते हैं।

४. नमन्ति फलिता वृक्षा, नमन्ति विबुधा नराः।
शुष्कं काष्ठं च मूर्खश्च, न नमन्ति त्रुटन्ति च ॥

फले हुए वृक्ष नमते हैं, विद्वान् मनुष्य नमते हैं, लेकिन सूखा काठ और मूर्ख मनुष्य कभी नहीं नमते, पर टूट जाते हैं।

५. भजन्ति वेतसीं वृत्तिं, विद्वांसः कालवेदिनः।

अवसर पर विद्वान् बेंत की तरह नम्रता धारण करते हैं।

६. सूको काठ टूट जावै पण निंवै कोनी।
—राजस्थानी कहावत

७. प्रबल शत्रु के सामने झुकनेवाले स्थानभ्रष्ट नहीं होते। जैसे—नदी प्रवाह के सामने बेंतों के वृक्ष।

★

वन्दना

१. शिरसाभिवादने वाचा स्तुतौ च ।

वंदना अर्थात् सिर झुकाकर अभिवादन करना एवं वचन से स्तुति करना ।

२. वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं कम्मं निबंधइ । सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वतेइ ।

—**उत्तराध्ययन** २६।१०

त्यागी पुरुषों को वंदन-नमस्कार करने से जीव नीचगोत्रकर्म का क्षय करता है, उच्चगोत्र कर्म का उपार्जन करता है और अप्रतिहत-सौभाग्य को प्राप्त करता है ।

३. समणं भगवं महावीरं पंच अभिगमणेणं अभिगच्छति, तंजहा—(१) सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए (२) अचिताणं दव्वाणं अविउसरणयाए ( ) एगसाडिय-मुत्तरासंगकरणेणं (४) चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं (५) मणसो एगत्तभावकरणेणं । —**औपपातिक समवसरण०**

कूणिक राजा पांच अभिगमन सहित भगवान के सम्मुख आया। पांच अभिगमन यथा—(१) सचित्त द्रव्यों को छोड़ना (२) अचित्त द्रव्य को व्यवस्थित करना (३) अखण्ड-बिनासिले हुए दुपट्टे आदि वस्त्र से उत्तरासन करना (४) धर्मगुरु के दृष्टि-गोचर होते ही हाथ जोड़ना (५) मन को एकाग्र करना । ★

११ नमस्कार

१. नमस्कार अहंकार का शत्रु है। मैं-मैं करना अहंकार है और नमः-नमः करना नमस्कार है। (नमः अर्थात् न मम-मेरा नहीं है। वैदिक व्याकरणनुसार म का विसर्ग बन जाता है)

—**नकुलेश्वर**

२. नमस्कार पांच कारण से किया जाता है—(१) हास्य से, (२) विनय से, (३) प्रेम से, (४) प्रभुत्व से, (५) भाव से।

३. राजगृहनिवासी श्रेष्ठिपुत्र श्रृगाल, पिता के अन्तिम कथनानुसार छहीं दिशाओं को नमस्कार करता था, किन्तु वह 'छह दिशा' के वास्तविक मर्म को नहीं जान पा रहा था। तथागत बुद्ध ने 'छह दिशा' की यह वास्तविक व्याख्या उसे बताई—

माता-पिता दिसा पुव्वा, आचरिय दक्खिणा दिसा।
पुत्त-दारा दिसा पच्छा, मित्तमच्चा च उत्तरा॥
दास-कम्मकरा हेट्ठा, उद्धं समण-ब्राह्मणा।
एता दिसा नमस्सेय्य, अलमत्तो कुले गिहा॥

—**दीघनिकाय ३।८।५**

माता-पिता पूर्वदिशा है, आचार्य (शिक्षक) दक्षिणदिशा हैं, स्त्री-पुत्र पश्चिमदिशा है, मित्र-अमात्य उत्तर दिशा हैं।

दास और कर्मकर—नौकर अधोदिशा—नीचे की दिशा है। श्रमण-ब्राह्मण ऊर्ध्वदिशा—ऊपर की दिशा है। गृहस्थ को अपने कुल में इन छहों दिशाओं को अच्छी तरह नमस्कार करना चाहिए अर्थात् इनकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिए।

४. स्वभावकठिनस्यास्य, कृत्रिमां बिभ्रतो नतिम्।
गुणोऽपि परहिंसायै, चापस्य च खलस्य च॥

—शार्ङ्गधर

स्वभाव से ही कठोर धनुष्य और खल—दुष्ट पुरुष जो कृत्रिम नम्रता धारण करते हैं, वह उनका नम्रता रूप गुण भी दूसरों की हिंसा के लिये ही होता है।

५. नमन-नमन सब कोइ कहै, नमन-नमन में बाण।
दगादार दूणों नमै, चोतो चोर कबाण॥

६. ते ह वै घोरतरा अशान्ततराय उभयतो नमस्काराः।

—शतपथब्राह्मण ६।१।१।२०

दोनों ओर के नमस्कार भयंकर और अशान्ति के हेतु होते हैं। तत्त्व यह है कि दो विरुद्ध पक्षों के संघर्ष में हां में हां मिलाना खतरनाक है।

★

१२ लघुता

१. लघुता से प्रभुता मिले, प्रभु से प्रभुता दूर।
जो लघुता धारण करो, प्रभुता आप हजूर ।।

२. लघुता से प्रभुता मिले, प्रभु से प्रभुता दूर।
कीड़ी शक्कर ले चली, हाथी के सिर धूर ।।

—कबीर

३. सबतें लघुताई भली, लघुता ते सब होय।
जस द्वितिया को चन्द्रमा, शीश नवें सब कोय ।।

—कबीर

४. गुरु पै लघुता कर अर्जुन ने,
'धन' बानकला असमान गही।
हरि पै लघुता करके द्रुपदी,
पति पंच की जान बचाय लई।
रघु पै लघुता कर भूप विभीषण,
सोवनलंक अवंक पई।
इम सोच प्रवीन गहो लघुता!
लघुता सम लोक में चीज नहीं ।।
तन कै सब अंग-उपंगन में,
चरणों ने गही लघुता उमहो।

तो निहारो कहे जन पाय लगूं,
परि, शीश लगूं कहे कौन मही ?
शिर देवन के भी न पूजत को
'धन' पूज रहे पगले सब ही।
इम सोच प्रवीन गहो लघुता !
लघुता सम लोक में चीज़ नहीं।

—**सवैयाशतक ८४।८५**

५. गोडा तो पगांनैं ही निवसी। —**राजस्थानी कहावत**

६. 'रहिमन' देख बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करे तलवारि।।

७. देख ! छोटों को है अल्लाह बड़ाई देता।
आस्मां आंख के तिल में है दिखाई देता।। —**जौक**

८. काम छोटों से निकलता है बड़ा,
यह सबक भी आंख के तिल से मिला। —**हाफिज**

९. दूसरों को छोटा समझना आसान है, अपने को छोटा समझना कठिन। —**पीटर बैरो**

१०. दुनिया को छोटी समझनेवाले आकाश में उड़ती हुई पतंग की तरह दुनिया की दृष्टि में बिलकुल छोटे हो जाते हैं। —**जीवन-सौरभ**

★

१३ अभिमान

१. मानश्चित्तोन्नतिः । —अभिधान चिन्तामणि २।२३१

मन की उद्धतता का नाम मान है ।

२. हमारा अहंकार ही है, जिससे हमें अपनी आलोचना सुनकर दुःख होता है । —मेरीकोन एडी

३. अहं कच्चाई है, इसलिए उसमें कच्चे आलू की तरह कड़ापन है । —रामतीर्थ

४. सोडावाटर की शीशी की गोलीवत् अभिमान न तो अन्दर की गंदगी को बाहर निकलने देता है और न वाहर की ताजी हवा को अन्दर आने देता ।

—जीवनसौरभ पृ० ३५

५. जहां तक अन्दर अहंभाव की हवा भरी रहेगी वहां तक इन्सान फुटबॉल की तरह ठोकरें खाता ही रहेगा ।

—जीवनसौरभ पृ० ३५

६. अभिमान बोलता है—तुम मुझे क्या समझते हो ? अहंकार बोलता है—मैं तुझे कुछ नहीं समझता ।

७. अभिमान से आदमी फूल सकता है, पर फैल नहीं सकता । —रस्किन

८ उन्नयमाणे य नरे, महामोहे पमुज्झई। —आचारांग ५।४

अभिमान करता हुआ मनुष्य महामोह से विवेकशून्य होता है।

९. गब्भाओ गब्भं, जम्माओ जम्मं, माराओ मारं, णरगाओ णरगं, चंडे थद्धे चवले पणिया वि भवइ।

—सूत्रकृतांग श्रुतस्कंध २ अ० २ सू०११

जातिकुल आदि का अभिमान करनेवाला चपल एवं रौद्र प्राणी गर्भ से गर्भ में, जन्म से जन्म में, मरण से मरण में, नरक से नरक में दुःखों का भोक्ता बनता है।

१०. जाति-लाभ-कुलैश्वर्य - बल-रूप-तपः श्रुतैः।
कुर्वन् मदं पुनस्तानि, हीनानि लभते जनः॥

—योगशास्त्र ४।१३

जाति लाभ आदि का मद करता हुआ जीव भवान्तर में हीन-जाति आदि को प्राप्त करता है।

★

अभिमान के दुर्गुण

१. माणो विणयनासणो। —दशवैकालिक ८।३८

मान विनय का नाश करनेवाला है।

२. हरकसे पन्रोज़ नौबते ऊस। —पारसी कहावत

घमंड केवल चार दिन रहता है।

३. Pride goes before it falls. —अंग्रेजी कहावत

प्राइड गोज बिफोर इट फाल्स

अभिमान अन्त में गिरता है।

४. माणेण अहमागई —उत्तराध्ययन ९।५४

अभिमान से नीच गति की प्राप्ति होती है।

५. पराभवस्य है तन्मुखं यदतिमानः।

—शतपथब्राह्मण ५।१।१।१

अति अभिमान पराभव का मुख द्वार है।

६. अति गर्वाद्धतो बलो। —संस्कृत कहावत

अति अभिमान से बली मारा गया।

७. लुप्यते मानतः पुंसां, विवेकामललोचनम्।

—शुभचद्राचार्य

अभिमान से मनुष्यों का विवेक-नेत्र नष्ट हो जाता है।

८. ज्ञानमार्गे ह्यहंकारः परिघो दुरतिक्रमः।—कथासरित् सागर

ज्ञान मार्ग में अहंकार दुर्लंघ्य अर्गला है।

९. Such as boast must fail much　　　　**—अंग्रेजी कहावत**

सच एज बोस्ट मस्ट फैल मच

अहंकार मौत की निशानी है।

१०. मान-वड़ाई और सुख-चैन शायद ही कभी साथ रहते हों।

११. जरारूपं हरतिधैयमाशा, मृत्युः प्राणान् धर्मचर्यामसूया।
क्रोधः श्रियं शीलमनार्यसेवा, ह्रियं कामः सर्वमेवाभिमानः।

—विदुरनीति ३।५०

जरा रूप को, आशा धैर्य को, मृत्यु प्राणों को, ईर्ष्या धर्मचर्या को, क्रोध लक्ष्मी को, अनार्यसेवा शील को एवं काम लज्जा को नष्ट करता है लेकिन, अभिमान सर्वगुणों को नष्ट करने वाला है।

★

१५

तू-मैं

१. जहां राम तहँ मैं नहीं, मैं तहँ नाहीं राम।
'दादू' महल वरीक है, दूजै को नहीं ठाम॥
'दादू' आया जब लगे, तब लग दूजा होय।
जब यह आया मिट गया, तब दूजा नहीं कोय॥
'दादू' है का भय घणा, नाहीं को कुछ नाहीं।
दादू नाहीं होय रह! अपणे साहिब माँय॥
मैं नाहीं तब एक है, मैं आई तब दोई।
मैं-तैं पड़दा हट गया, तब ज्यूं था त्यूं होई॥

२. मैं-मैं-मैं बकरा कहे, नित उठ गला कटाय।
मैं ना-मैं ना मैना कहे, नित उठ मेवा खाय॥

३. फकर बकरे ने किया, मेरे सिवा कोई नहीं।
मैं ही मैं हूं इस जहाँ, दूसरा कोई नहीं।
जब न छोड़ी मैं-मैं, बेमाया ओ असबाब ने।
फेर दी गर्दन पै, तंग आके छुरी जल्लाद ने।
गोश्त हड्डी और चमड़ा, जो था जिस्मेजार में।
कुछ पका, कुछ बिक गया, कुछ फिक गया
बाजार में।

अब रहीं आंते फकत, मैं-मैं सुनाने के लिए।
ले गया, नद्दाफ उन्हें, धुनकी बनाने के लिए।
तांत पर पड़ने लगी, चोटें तो घबड़ाने लगीं।
'मैं' के बदले 'तू' ही 'तू' की, फिर सदा आने लगी।

—उर्दू शेर

४. शिष्य--परमात्मा को पाने के लिए क्या करूं?
गुरु—मैं को शून्य करलो या पूर्ण कर लो!

—आचार्य रजनीश

★

१६ अभिमान के भेद आदि

१. अट्ठ मयट्ठाणे पण्णत्ते, तंजहा—जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुयमए,लाभमए, इस्सरियमए ।

—**स्थानांग ८।६०६**

आठ मदस्थान—अहंकार उत्पन्न होने के कारण है । तद्यथा-(१) जाति, (२) कुल, (३) बल, (४) रूप,(५) तप, (६) श्रुत-शास्त्र (७) लाभ, (८) ऐश्वर्य ।

२. दसहिं ठाणेहिं अहमंतीति थंभिज्जा तंजहा—जातिमएण वा जाव इस्सरियमएण वा (९) नागसुवन्ना वा मे अंतियं हव्वमागच्छंति (१०) पुरिसधम्माओ वा मे उत्तरिए अहोधिए णाण-दंसणे समुप्पन्ने । —**स्थानांग १०।७११**

इन दस कारणों से जीव "मैं उत्कृष्ट हूं अतिशयवान हूं ।" ऐसे अभिमान करता है—जाति आदि आठ कारण उपर्युक्त ही हैं (९) मेरे पास नाग एवं गरुड़देव आते हैं (१०) साधारण-मनुष्यों की अपेक्षा मुझे उत्कृष्ट अवधिज्ञान-अवधिदर्शन उत्पन्न हुए हैं ।

३. **स्वाभिमान**—अभिमान और स्वाभिमान में स्वाभाविक गर्मी एवं ज्वर की गर्मी जितना अन्तर है । स्वाभिमान आत्मा, जाति, देश आदि का होता है । स्वाभिमान धूल की भी है, ठोकर मारते ही उड़कर सिर पर जा चढ़ती है । ★

१७ मान–त्याग

१. मयाणि एयाणि विगिंच धीरा,
न ताणि सेवंति सुधीरधम्मा ।
सव्वगोत्तावगया महेसी ।
उच्चं अगोत्तं च गइं वयंति । —सूत्र० १३।१६

साधक को बुद्धि आदि का मद त्याग देना चाहिए क्योंकि ज्ञानादिसम्पन्न महात्मा-इन मदों का सेवन नहीं किया करते, अतएव वे सभी गोत्रों से रहित होकर गोत्ररहित सर्वोच्च मोक्ष गति को प्राप्त होते हैं ।

२. जो परिभवइ परं जणं, संसारे परिवत्तइ महं ।
अदु इंखिणिया उ पाविया, इइ संखाय मुणी न मज्जइ ॥
—सूत्रकृतांग २।२।२

जो दूसरों का तिरस्कार करता है, वह संसार में अत्यन्त परिभ्रमण करता है । परनिन्दा स्पष्ट रूप से पापकारिणी है—यों समझकर मुनि जाति आदि का मद न करे ।

३. न बाहिरं परिभवे, अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुअलाभे न मज्जिज्जा, जच्चा तवस्सि बुद्धिए ॥
—दशवैकालिक ८।३०

दूसरों का तिरस्कार मत करो ! और मैं ज्ञानी हूं, लब्धिमान हूं, जातिसम्पन्न हूं, तपस्वी हूं, बुद्धिमान हूं । ऐसे अपने आपको बड़ा मत समझो !

४. असइं उच्चागोए, असइं नीयागोए, णो हीणे णो अइरित्ते। —आचारांग २।३।१

संसारी जीव अनंतबार उच्चगोत्र में एवं अनन्तवार नीचगोत्र में उत्पन्न हो चुका है, अतः कोई हीन नहीं और कोई अधिक नहीं (ऐसे जानकर मद न करे)

५. उच्चं नीचाचरणं, उच्चं नीचं भवे गोत्तं।

—गोम्मटसार कर्मकाण्ड

ऊंच-नीच आचरण ही वस्तुतः ऊंच-नीच गोत्र होते हैं।

६. माणं मद्दवया जिणे। —दशवैकालिक ८।३९

मान को मार्दव-नम्रता से जीतो।

७. मा कुरु ! तन-धन-यौवनगर्वम्। —शंकराचार्य

तन धन और यौवन का अभिमान मत करो।

८. अकड़ने से नाहक को टूटेगा सर।
अगर दर है नीचा, तो झुककर गुजर!

९. एक दिन हम जा रहे थे सैर को,
इधर था शमसान उधर कब्रिस्तान था।
एक हड्डी ने पांव से लिपट कर यूं कहा-
अरे देख के चल ! हम भी कभी इन्सान थे।

१०. गहरी लाली देख के, फूल गुमान भए।
तो सरिखें इस बाग में, लग-लग सूख गए।

११. लंका को अधीस दश शीश भुजा बीस जाके,
दयो वर ईश अवनीशता सराहिबी।
सागर-सी खाई कुम्भकरन से भाई जाकी,
दुस्सह दुहाई ठकुराई अवगाहिबी।

ACHARYA SRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR

एसौ राज-साज गयो, भयो जो अकाज एतो,
हाथ प्रभु हो के लाज 'किसन' निबाहिबो।
झूठ ही में झूले नीति-लता उन्मूले फूले,
साहिब को भूले डूले, ऐसी कैसी साहिबी !

—**किसनबावनी**

१२. अस्सी कोड़ गज वंध, अडब दो तुरी तुखारं,
क्षत्रिय कोड़ पचास, पायदल नील अठारं।
दस सहंस सामंत, पांच लख पनरै रांजा,
सहु को मानें शंक सुणे अमरापुर बाजा।
चालंत सूरडरतो रहे, देख चंद घर में गयो।
रे नर; मत कर गर्व दिल, कह! रावण किण दिशि गयो ?

भाषा-श्लोक सागर

१३. 'कबीरा' गर्व न कीजिए, नेक न हंसिए कोय।
अजहु नाव समुद्र में, ना जाने क्या होय ?

१४. कंचन तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह।
मान बड़ाई ईर्ष्या, 'तुलसी' दुर्लभ एह।।

१५. अपनी ही घड़ी से दुनियां भर की घड़ियाँ ठीक करनी न चाहो।

१६. सुख कोई बाहर की चीज नहीं, हमारे अन्दर ही है, पर अहंकार छोड़े बिना नहीं मिलती। —**विवेकानन्द**

१७. अगर तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तक की एक भी पंक्ति बांचे बिना व किसी मन्दिर में पैर रखे बिना जहां बैठे हो, मोक्ष प्राप्त हो जायेगा।

—**विवेकानन्द**

★

१८ व्यर्थ अभिमान

१. धूँआ आसमान से शेखी बघारता है और राख पृथ्वी से कि हम अग्निवंश के हैं। —टैगोर

२. टींटोड़ी पग ऊंचा करीने सूवे, ते एम धारे के आकाश मारा पग परज अद्धर रह्यु छे। —गुजराती कहावत

३. अक्सर मुर्गी जिसने सिर्फ अण्डे को जन्म दिया है, ऐसे ककड़ाती है, जैसे किसी नक्षत्र को जन्म दिया हो। —मार्कटेन

४. मुर्गा समझता है कि सूर्य उसकी बाँग सुनने के लिए ही उगता है। —जार्ज इलियट

५. इफ वन विल नॉट अनावर विल —अंग्रेजी कहावत
क्या मुर्गा होता है, वहीं सुबह होती है ?

६. गाड़ा तले कुतरु, ने जाणे वधो भार हूं ताणु छु। —गुजराती कहावत

७. कुत्तो जाणै म्हारै ही ताण गाडो चालै है। —राजस्थानी कहावत

८. मिजाज बादशाह की, औकात भड़भूंजे की। —हिन्दी कहावत

९. पगे कथीर नुं कल्लुं ने नाक नुं नसकोरूं नवगज लाबुं। —गुजराती कहावत

१०. हवेली मींये वाकर दी, विच सलेमों आकड़ दी ।
मामे कनीं तीरवालियां भनैवा आकड़िया फिरे ।
—पंजाबी कहावत

किसी सम्बन्धी की अमीरी पर अहंकार करना ।

११. मामैरै कान में मुरक्यां र भाणजो भार्यां मरै ।
—राजस्थानी कहावत

१२. राबड़ी कहै मनैं ही दातां स्यूं खावो ! ,, ,,
१३. सबड़ के सवाद लागे, आब नावे जाबड़ी, ,, ,,
गब देसी पेट भरै, धन हे माता राबड़ी ! ,, ,,
१४. डेढ़ घोड़ो र डीडवाणै री पायगां । ,, ,,
१५. डेढ़ ईंट री मस्जिद न्यारी ही बणावै । ,, ,,
१६. ढ़ाई चावल री खीचड़ी न्यारी ही पकावै । ,, ,,
१७. दुनियां में डेढ़ अक्कल, आखी में आप र
आधी में दूजा । ,, ,,
१८. अपने मुँह मीयाँ मिट्ठू । —हिन्दी कहावत
१९. हम चोड़े और बाजार सांकड़ा । ,, ,,

१६ तुच्छ व्यक्तियों में अधिक अभिमान

१. विषभार सहस्रेण, गर्वं नायाति वासुकिः।
वृश्चिको बिन्दुमात्रेणा— प्यूर्ध्वं वहति कण्टकम् ॥

महान विष होने पर भी वासुकि-सर्पराज गर्व नहीं करता, किन्तु बिन्दुमात्र विषवाला-बिच्छू अपना कांटा ऊपर की तरफ रखता है।

२. मणिधर विष अणमाव, धारै पण नाणै मगज।
बिच्छू पूँछ-बणाव, राखै सिर पर राजिया !

३. दिव्यच्यूतरसं पीत्वा, गर्वं नो याति कोकिलः।
पीत्वा कर्दमपानीयं, भेको टर-टरायते।

—**भामिनीविलास**

दिव्य आम का रस पीकर भी कोयल अहंकार नहीं करती, लेकिन कर्दममिश्रित पानी-पीकर मेंढक शोर मचाता है।

४. अगाधजल-संचारी, न गर्वं याति रोहितः।
अङ्गुष्ठोदकमात्रेण, शफरी फुर्फुरायते।

—**सुभाषितरत्न भाण्डागार**

अगाध जल में रहने वाला रोहित-मत्स्य अभिमान नहीं करता जबकि अंगुष्ठमात्र पानी पाकर मछलियाँ फड़फड़ाहट करती ही रहती है।

५. संपूर्णकुम्भो न करोति शब्दमर्धो घटो घोषमुपैति नूनम्।
विद्वान् कुलीनो न करोति गर्वं,जल्पन्ति मूढ़ास्तु गुणैर्विहीनाः।

भरा घड़ा नहीं छलकता, किन्तु आधा घड़ा अधिक आवाज करता है। विद्वान एवं कुलीन व्यक्ति अभिमान नहीं करता किन्तु गुणहीन-मूर्ख अधिक बोलते हैं।

६. भरिया सो झलकै नहीं, झलकै सो आधा।
मिनखां आही पारखा बोल्या के लाधा।

७. दुग्गणी चा मुला तीन पैसे हेल। —मराठी कहावत
छोटे मनुष्यों को बड़े आडम्बर की आवश्यकता।

८. कोई पूछै न ताछै, हूं लाडैरी भूवा। —राजस्थानी कहावत

९. कोई फिरै डाल-डाल, हूं फिरूं पान पान ,, ,,

१०. जातरी धाणकी, कहै भींट्योड़ो को खाऊं नीं। ,, ,,

११. म्हांसूं गोरी जिकै ने पीलियैरो रोग। ,, ,,

१२. दांतां स्यूं बांधी हाथां सूं को खुलैनीं। ,, ,,

१३. मीयाँ मुट्ठी भर, दाढ़ी हाथ भर। —हिन्दी कहावत

१४. मीयाँ मुट्ठी जेटला न दाढ़ी सूपड़ा जेटली। —गु० क०

१५. धान खावाँ हां, धूड़ को खावानीं! —राजस्थानी कहावत

१६. धान खारो लागै है कांई? ,, ,,

१७. सैणप में भीजै है। ,, ,,

★

२० अभिमानी

१. परवृद्धि-मत्सरिमनो हि मानिनाम् । —**शिशुपालवध**
अभिमानियों का मन दूसरों की वृद्धि देखकर जलनेवाला होता है ।

२. वादमिच्छन्ति गर्विताः ।
अहंकारी व्यक्ति वाद-विवाद की इच्छा करते हैं ।

३. घमण्डी व्यक्ति दूसरे के घमण्ड को घृणा की दृष्टि से देखते हैं । —**फ्रैंकलिन**

४. अन्नं जणं पस्सति बिंबभूयं । —**सूत्रकृतांग१।१३।८**
अभिमानी अपने अहंकार में चूर होकर दूसरों को सदा बिम्ब भूत (परछांई के समान तुच्छ) मानता है ।

५. **अहंवादी का चिन्तन** :—
बुद्धिमान् कौन ? जो मेरी तरह सोचे ।
मूर्ख कौन ? जिसके विचार मुझसे न मिलें ।
आदर्श क्या है ? जिस पर मैं चलूँ ।

६. अहंवादी सोचता है—जगत मेरा सेवक है,
विनम्र सोचता है—मैं जगत का सेवक हूं ।

७. अभिमानी अपने आपको सर्वोत्कृष्ट और दूसरे को निकृष्ट मानकर दो गल्तियां करता है ।

८. जो यह सोचता है कि दुनियाँ के विना मैं अपना काम चला लूंगा, वह खुद को धोखा देता है, किन्तु 'मेरे बिना दुनिया का काम नहीं चलता' यों कहनेवाला बहुत वड़े धोखे में है। —**रोशे**

९. बुद्धामो ति य मन्नंता, अंतए ते समाहिए।

—**सूत्रकृतांग ११।२५**

अज्ञानवश अपने आपको 'हमज्ञानी है' ऐसे माननेवाले समाधि से बहुत दूर हैं।

१०. अभिमानी के हृदय में, ज्ञान न करता धाम।
फटी जेब में क्या कभी, रह सकते हैं दाम।

—**दोहा संदोह ६।६**

११. अभिमानी अपने सिवा ओरों को देख ही नहीं सकता अतएव उसे 'मानान्ध' कहा गया है।

१२. वड़े आदमी अक्सर अभिमान में अन्धे होते हैं, इसीलिए उनके नौकर लोगों से कहा करते है—हटजाओ-हटजाओ !

१३. जे माणदंसी से मायादंसी। —**आचारांग३।४**

जो मानवाला है उसके हृदय में माया भी होती ही है।

१४. बालजणो पगब्भई। —**सूत्रकृतांग १।११।२**

अज्ञानी व्यक्ति अभिमान करता है।

★

२१ अभिमान के उदाहरण

१. एक भक्त ने संन्यासी से कहा—३२ वर्ष से बन्दगी कर रहा हूं, पर ज्ञान नहीं होता।
संन्यासी—ऐसे ३०० वर्ष में भी नहीं होगा।
भक्त—तो क्या करूं ?
सन्यासी—सिनगार छोड़कर, सिर मुंडाकर परिचित लोगों के पास रोटी मांग !
भक्त—यह कैसे बने ?
सन्यासी—भाई ! अभिमान छोड़े बिना तो ज्ञान भी नहीं मिलेगा।

२. हिमालय चढ़ते समय द्रौपदी, नकुल, सहदेव, अर्जुन एवं भीम क्रमशः गिरते गये, कारण द्रौपदी का अर्जुन में विशेष प्रेम था। नकुल में रूप का, सहदेव में त्रिकाल-ज्ञान का, अर्जुन में बाण-विद्या का तथा भीम में भुजा बल का अभिमान था। शेष धर्मपुत्र एवं कुत्ता (धर्मरूपी) स्वर्ग में पहुंचे, निराभिमान होने से।

३. गुणातीतानन्द स्वामी ने एक भक्त को कह दिया कि ! भाई ! जरा पीछे बैठ जाओ। भक्त क्रुद्ध होकर बकने लगा एवं जीवन भर पीछे ही बैठता रहा।

एक दिन उन्होंने **हरखा पटेल** से सहज में कहा—जरा पग धोकर आना। क्रुद्ध होकर चला गया एवं समझाने पर बोला—अभी पग धोए हुए नहीं हैं। क्या दरी तुम्हारे बाप की थी? आदि-आदि बहुत बातें कहीं और जीवन भर कथा में नहीं आया।

४. नवदीक्षित अक्षरानन्द को महंत बनाने के कारण चैतन्यानंदस्वामी १० साधुओं को लेकर निकल गए। समझाने पर बोले— भाई मुझे तो मानाभाई खींचकर ले जा रहा है, तुम तुम्हारे जाओ!

५. **'मैं' ही नरकमें ले जाती है**—स्वामी विवेकानन्द के शिष्य भोजनकर रहे थे, उनमें से किसी ने पूछा—नरक में कौन ले जाता है। एक विद्यार्थी—(जिसके प्रश्न का उत्तर न देने तक भोजन न करने का नियम था) ने "त्रिविधं नरकस्येदं,····द्यूतं च मांस च" आदि-आदि अनेक ग्रन्थों के पद्यों द्वारा उत्तर दिया लेकिन प्रश्नकर्त्ता—"मैं नहीं मानता" कहकर शोर करता रहा। स्वामीजी ने दूर से आवाज दी—कौन करता है यह प्रश्न? शिष्य ने कहा—स्वामीजी मैं हूं मैं! स्वामीजी बोले—यह 'मैं' ही नरक में ले जाती है।

६. **यह तो मैं जानती हूं**—सेठ ने दुबारा शादी की, स्त्री नई थी। अतः हर एक काम पड़ोसिनी बुढ़िया के पास आकर पूछती, किन्तु बुढ़िया के बताने पर अहंकार से

कहती—यह तो मैं जानती हूं। एक दिन मेहमान आए; खीर कैसे पकाऊँ—ऐसे बुढ़िया से पूछा। उसने कहा—चार सेर दूध में एक पाव नमक, थोड़ी हलदी-मिरच और इमली डालकर राई का बघार देना। सेठानी बोली—यह तो मैं जानती हूं। बस, उपरोक्त विधि से खीर बनाई। कैसी बनी—यह तो मेहमानों को पता लग ही गया। बहुत हँसी हुई, पूछने पर वृद्धा ने कहा—यह अभिमान का फल है।

७. खांड़ा पापड़ परोसा देखकर मूर्ख अभिमानी ने जमीन-जायदाद बेचकर अपना जीवित-ओसर (मृत्यु-भोजन) किया एवं जिसके घर खंडित पापड़ खाया था उस व्यक्ति की थाली में पापड़ के टुकड़े परोसे।

८. जगद्गुरु—शंकराचार्य बनारस की सड़क पर जा रहे थे। चार कुत्तों से घिरा हुआ एक शूद्र उन्हें मिला। आचार्य—अरे शूद्र! हट जा रास्ते से, स्पर्श करके कहीं मुझे मलिन बना देगा। शूद्र—ओ प्राणिमात्र में परमात्मा का घोष करनेवाले अभिमानि-आचार्य! क्या तेरा अद्वैतवाद केवल शब्दों में ही है, जो तू मेरे से घृणाकर रहा है।

शंकराचार्य की आंखें खुली और कहने लगे, अभी तक मेरा 'अद्वैत' केवल शब्दों में ही था। आज तूने सच्चे अद्वैत के दर्शन कराये हैं अतः तू मेरा गुरु है।

९. **लखोबनजारा**—वणास नदी के कांठे, रात को विश्राम कर रहा था। अचानक पानी आया। सारे बैल बह गये। भूखा-प्यासा गूजरी से पानी मांगने लगा। उसने अपनी पांच-सात भैंसों का गर्व करते हुए कहा—फुर्सत नहीं है। तब बनजारे ने कहा—

मान करे मत गूजरी, थारै पाँच सात पाडलिया।
लाख बलद म्हारे हुंता, काले इण ही विरियां॥

१०. **यशोविजय जी**—इन्होंने खंभात में "संजोगाविप्प-मुक्कस्स" इस पद पर चौमासे भर व्याख्यान चलाया। बिन्दु एवं संयुक्त अक्षर के बिना जबर्दस्त भाषण किया। विद्वानों ने उनको **विशारद** का पद दिया। अभिमान वश चार ध्वजाएं रखने लगे। दिल्ली पधारे, खूब धूम-धाम से व्याख्यान होने लगा। वृद्ध श्राविका ने पूछा—महाराज! गौतम स्वामी कितनी ध्वजाएँ रखते थे? सुनते ही अभिमान टूटा एवं ध्वजाएँ छोड़ीं। फिर आनन्दघन जी ने ज्ञान दिया था।

११. कूके **राजा क्वांग ने सुन शुआओं** को तीन बार प्रधान-मंत्री बनाया व हटाया। **कानबू** के पूछने पर भूतपूर्व-प्रधानमंत्री ने कहा—मंत्रिपद मिला तब ना कहना ठीक नहीं था और छीना तब रखना अशक्य था। यदि कुर्सी का मान था तो मुझे दुःख क्यों? यदि मेरा था तो अब भी है ही।

—**ताओ. धर्म से**

★

२२ अपमान

१. Insult is more than operation. —अंग्रेजी कहावत
इनसल्ट इज मोर दैन ऑपरेशन।
अपमान का नस्तर आंपरेशन के नस्तर से भी ज्यादा दुःखदायी है।

२. लोगों के सामने किसी का अपमान करना उतना ही बड़ा पाप है, जितना उसका खून कर देना।
—तालमुद बावा मेतजिया ५८ ब० (यहूदी-धर्मग्रन्थ)

३. मनुष्य सब कुछ सह सकता है, पर बराबरी वाले का अपमान नहीं सह सकता।

४. वरं प्राणपरित्यागो, मानभङ्गेन जीवनात्।
मृत्योश्च क्षणिकं दुःखं, मानभङ्गाद् दिने-दिने।
—चाणक्यनीति १६।१६

मान गंवा कर जीने से मरना अच्छा है, क्योंकि मृत्यु का दुःख थोड़ी सी देर होता है किन्तु अपमान का दुःख प्रतिदिन होता ही रहता है।

५. तावदाश्रीयते लक्ष्म्या - स्तावदस्य स्थिरं यशः।
पुरुषस्तावदेवासौ, यावन्मानान्न हीयते।
—किरातार्जुनीय ११।६१

जब तक मनुष्य की मानहानि नहीं होती तभी तक उसके पास लक्ष्मी रहती है। तभी तक उसका यश स्थिर रहता है और तभी तक उसकी पुरुषों में गणना होती है।

६. मा जीवन् ! यः परावज्ञा-दुःखदग्धोपि जीवति ।

— शिशुपालवध २।४५

जो आदमी शत्रु के अपमान से दग्ध होकर भी जीता है, उसका जीना वृथा है ।

७. अपमान के कारण :—

(क) स्त्री पीहर नर सासरै, संजमियो थिरवास ।
एता हुवै अणखावणा, जो करै अधिक निवास ।।

(ख) दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच-लोलुप लोग ।
"तुलसी" प्राणसमान तोहि, होहि निरादर-जोग ।।

★

२३ **अपमान-निषेध**

१. स्वयमुपस्थितं नावमन्येत । —**अर्थशास्त्र ५।६**

जो वस्तु स्वयं उपस्थित हो, उसका अपमान मत करो ।

२. न कंचिदवमन्येत, सर्वस्य शृणुयाद् मतम् ।
बालस्याप्यर्थवद्वाक्य-मुपयुञ्जीत पण्डितः ।।

—**अर्थशास्त्र १।१५**

बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह किसी का अपमान न करे । सबके मत को सुने और एक बालक की भी यदि अच्छी बात हो तो उसका उपयोग करे ।

३. देवाकारोपेतः पाषाणोऽपि नावमन्येत तत्किं पुनर्मनुष्यः ।

—**नीतिवाक्यामृत ७।३०**

देवकी आकृतिवाले पत्थर का भी अपमान नहीं करना चाहिए, मनुष्यों की तो बात ही क्या ?

४. चिथड़े का भी अपमान मत करो, उसने भी किसी की लाज रखी थी । —**शेखसादी**

५. पादाभ्यां न स्पृशेदग्निं, न गुरुं ब्राह्मणं तथा ।
न गां च न कुमारीं च, न शिशुं न च देवताम् ।।

अग्नि, गुरु, ब्राह्मण, गाय, कुमारी-कन्या, बालक और देवता, इनके पैर नहीं लगाना चाहिए ।

६. सर्पश्चाग्निश्चसिंहश्च, कुलपुत्रश्च भारत !
नावज्ञेया मनुष्येण, सर्वे ह्येतेऽतितेजसः ॥

—विदुरनीति ५।६१

सर्प, अग्नि, सिंह और राजपूत—इन चारों का अपमान कभी नहीं करना चाहिए क्योंकि ये महान् तेजस्वी होते हैं ।

७. तगा ! तगाई मत करे, बोले मुँह संभाल ।
नाहर ने रजपूत ने, रेकारा री गाल ॥

—राजस्थानी कहावत

★

२४ महत् पुरुषों का धन–मान

१, वरं मानिनो मरणं न परेच्छानुवर्तनादात्मविक्रयः ।

—नीतिवाक्यामृत २०।१

आत्मगौरव रखनेवालों के लिए मरना अच्छा है न कि दूसरों की इच्छानुसार चलकर आत्मविक्रय करना ।

२. जिसको न निज गौरव तथा, निजदेश का अभिमान है ।
वह नर नहीं नरपशु निरा, और मृतक समान है ॥

—मैथिलीशरण गुप्त

३. मण नु माथु जजो पण नवटांक नो नाक न जशो ।

—गुजराती कहावत

४. काल जाय पण कहेणी रही जाय । ,, ,,

५. वार वहजायगी रू बात रहजायगी । —हिन्दी कहावत

६. वे पाणी मुलतान गये । ,, ,,

७. एक चन्द्रमा नव लख तारा ।
एक सती ने नग्गर सारा ॥

—राजस्थानी कहावत

(सती और चन्द्रमा का महत्त्व ।)

८. घटने न देना मान, करना मोह मत धन धामका ।
यदि मान ही जाता रहा तो, धन रहा किस कामका ?

९. अधमा धनमिच्छन्ति, धनं मानं च मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम् ॥

—**चाणक्यनीति ८।१**

अधम व्यक्ति धन चाहते हैं, मध्यम व्यक्ति धन-मान दोनों चाहते हैं, किन्तु उत्तम पुरुष केवल आत्म-सम्मान चाहते हैं, क्योंकि महापुरुषों का मान ही धन है ।

१०. अधमाः कलिमिच्छन्ति, सन्धिमिच्छन्ति मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिच्छन्ति, मानो हि महतां धनम् ॥

—**गरुड़पुराण**

अधम पुरुष कलह चाहते हैं, मध्यम पुरुष सन्धि चाहते हैं किन्तु उत्तम पुरुष केवल आत्मसम्मान चाहते हैं, वही उनका धन है ।

११. सतां माने म्लाने मरणमथवा दूरगमनम् ।

—**विल्हण कवि**

आत्मसम्मान में ठेस लगने पर सत्पुरुष मर जाते हैं या दूर चले जाते हैं ।

१२. अवृत्तिभयमन्त्यानां, मध्यानां मरणाद्भयम् ।
उत्तमानां तु मर्त्यानां-मवमानाद् परं भयम् ॥

—**विदुरनीति ३।५२**

अधमों को अवृत्ति-उदरपूर्ति न होने का भय रहता है । मध्यमों को मरने का भय रहता है, किन्तु उत्तमपुरुषों को—इन दोनों से भी अपमान का अधिक भय रहता है ।

१३. अग्निदाहे न मे दुःखं, छेदेन निकषेण वा ।
एतदेव महद् दुःखं, गुञ्जया सहतोलनम् ॥

सोना कहता है – मुझे अग्नि में जलने का, छेदन का और

निकष का कोई दुःख नहीं, किन्तु जो मुझे गुंजा (चिरमियों) द्वारा तोला जाता है—यह महान दुःख है।

१४. एक विद्यार्थी एफ. ए में सेकिण्ड आया, अपमान समझ-कर उसने आत्महत्या करली।

—हिन्दसमाचार १६।१० वैसाखसुदी. १०

१५. गंगानगर में परीक्षा में फैल होने से कई छात्रों ने आत्म-हत्या करली। **—सन् १६६१**

१६. गृही यत्रागतं दृष्ट्वा, दिशो विक्षेत वाप्यधः।
तत्र ये सदने यान्ति, ते शृङ्गरहिता वृषाः॥

—पञ्चतन्त्र २।६८

आगन्तुक को देखकर जिस घर का स्वामी दिशाओं को या नीचे की ओर देखने लगे, उस घर में जानेवाले मनुष्य बिना सींग के बैल हैं।

१७. आव नहीं आदर नहीं, नहीं नयन में नेह।
तस घर कदे न जाइए, जो कंचन बरसै मेह॥
आव घणा आदर घणा, घणा नयन में नेह।
तस घर नित प्रति जाइए, जो पत्थर बरसै मेह।

१८. "दादू" आदरभाव का, मीठा लागै मोठ।
बिन आदर व्यंजन बुरा, जीमणवाला ठोठ॥

१९. आप मिले सो दूध बराबर, मांग्या मिलै सो पाणी।
कहै "कबीरा" जहर बराबर, जिसमें खींचाताणी॥

२०. मान सहित विष खाय के, शंभु भये जगदीश।
बिना मान अमृत पिये, राहु कटायो शीश॥—**रहीम**

२१. सासरा नुं मान साजीए, गावानुं मान तालीए।
जिमण नुं मान थालीए, मोटा नुं मान बालीए॥ **गु.क.**

★

२५ इज्जत-सम्मान-प्रतिष्ठा

१. मेरी इज्जत मेरी जिन्दगी है, दोनों साथ-साथ बढ़ती हैं, अगर इज्जत ले लो तो जिन्दगी खत्म हो जाय।

—शेक्सपियर

२. इज्जत को ईजा पहुंचाने की अपेक्षा दस हजार बार मारना अच्छा।

—एडीसन

३. अपने सद्गुणों से उसका हकदार न बनकर, पवित्र पूर्वजों के कारण इज्जत चाहना शर्म की बात है, इज्जत से जीने का सबसे छोटा और शर्तिया उपाय यह है कि हम बाहर से जो कुछ दिखाना चाहते हैं वास्तव में वैसे ही हों!

—सुकरात

४. दो बातों से प्रतिष्ठा बढ़ती हैं
हाथ की सच्चाई से और बात की सच्चाई से।

५. सर फूल वो चढ़ा, जो चमन से निकल गया।
इज्जत उसे मिली, जो वतन से निकल गया॥

—उर्दू शेर

६. दुष्ट आदमी को इज्जत या दौलत देना, गोया बुखार के मरीज को तेज शराब पिलाना है।

—प्लुटार्क

७. औत्सुक्यमात्रमवसाययति प्रतिष्ठा।

—शाकुन्तल ५।६

प्रतिष्ठा-इज्जत मिल जाने पर जो उसकी प्राप्तिके लिए उत्सुकता थी, मात्र वही शांत होती है।

८. दुनियाँ की इज्जत-आबरु शैतान की शराब है।

—हयहया

९. अभिमानं सुरापानं, गौरवं घोररौररवम्।
प्रतिष्ठा शूकरीविष्ठा, त्रीणि त्यक्त्वा सुखी भवेत्॥

—नारदपरिव्राजकोपनिषद् ५।३०

अभिमान मदिरापान है, गौरव रौरव-नरक है, प्रतिष्ठा सुअर की विष्ठा है, इन तीनों को त्यागकर सुखी बनना चाहिए।

★

२६ सम्मान की इच्छा का निषेध

१. एक ऐसी वस्तु है जो देने से मिलती है—सम्मान ।

२. अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूयणं तहा ।
इड्ढी सक्कार-सम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥

—उत्तराध्ययन ३५।१८

अर्चन-चंदनादिक से, रचना-स्वस्तिकादिक की, वन्दना, पूजा ऋद्धि—आमर्षौषधि आदि लब्धियाँ, सत्कार—वस्त्रादिक से, सम्मान—अभ्युत्थानादिक से। साधु उपर्युक्त वस्तुओं की मन से भी प्रार्थना न करे।

३. धिइमं विमुक्के ण य पूयणट्ठी,
न सिलोयगामी य परिव्वएज्जा ।

—सूत्रकृतांग १०।२३

धैर्यशाली पुरुष विकारों से विमुक्त होता हुआ पूजा एवं यश—कीर्ति का इच्छुक न बनकर, तप—संयम में विचरे !

४. निव्विंदेज्ज सिलोग-पूयणं । —सूत्र० २।३।१३

मुमुक्षु को अपनी यश—कीर्ति एवं पूजा-प्रतिष्ठा से दूर रहना चाहिए।

५. जसं कित्तिं सिलोगं च, जा य वंदण-पूयणा ।
सव्वलोयंसि जे कामा, तं विज्जं परिजाणिया ॥

— सूत्रकृतांग ६।२२

यश, कीर्ति, श्लाघा, वन्दना और पूजा तथा समस्त लोक में जो काम-भोग हैं, उनको अहितकारी समझकर त्यागना चाहिए।

६. नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा,
नो कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा।

—दशवैकालिक ६।४

तपोनुष्ठान तथा आचार का पालन भी कीर्ति, वर्ण, शब्द, श्लाघा के लिए नहीं होना चाहिए।

(सब दिशाओं में फैला हुआ यश **कीर्ति**, एक दिशा में फैला हुआ यश **वर्ण**, अर्द्ध दिशा में फैला हुआ यश **शब्द** और स्थानीय यश **श्लाघा** कहा जाता है।)

७. **करणी ऐसी कीजिए, जिसे न जाने कोय।**
जैसे मंहदी पात में, बैठी रंग लकोय।

८. जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिओ न समुक्क से।

—दशवैकालिक ५।२।३०

वन्दना—स्तुति न करने पर क्रोध न करे और करने पर अहंभाव न लाए।

६. पूयणट्ठा जसोकामी, माण-सम्माणकामए।
बहुं पसवइ पावं, माया-सल्लं च कुव्वइ॥

—दशवैकालिक ५।२।३५

पूजा, यश और मान-सम्मान का कामी पुरुष अत्यधिक पाप का उपार्जन करता है और उसकी आलोचना न करके माया-शल्य को प्राप्त होता है।

१०. सम्माननं परां हानिं, योगद्धेः कुरुते यतः ।
जने नावमतो योगी, योगसिद्धिं च बिन्दति ।।

—नारदपरिव्राजकोपनिषद्

सम्मान योग-ऋद्धि के लिए परम हानिकारक है, अतः अपमानित योगी ही योग-सिद्धि को प्राप्त होता है ।

११. सत्कार होने पर साधु को सोचना चाहिए कि यह प्रभु-आज्ञानुसार पहने हुए वेष यूनिफार्म (Unifrom) का सत्कार है, तेरा नहीं सिपाही वारंट (Warrent) लाकर बड़े सेठ को पकड़ लेता है, यह मजिस्ट्रेट (Magistrrate) के हुक्म की शक्ति है, सिपाही की नहीं ।

१२. तुम्हें कोई भाग्यवान कहे तो फूलो मत । क्योंकि उनका बुद्धिकाँटा पत्थर तोलने का है, हीरा तोलने का नहीं ।

१३. क्यों चाह नाम की तेरे, नहिं आती समझ में मेरे ।

—उपदेश सुमनमाला

१४. धर्मध्यान काफी किया, दान दिया धर प्यार ।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ।।२६।।
दौड़ा-दौड़ी खूब की, करने धर्म-प्रचार ।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ।।२९।।
कष्ट सहा भाषण किया, जोड़-जोड़ दरबार ।
भूख नाम की है अगर, तो सारा बेकार ।।३०।।

—दोहा-संदोह

१५. बिनोवा को एक धनिक ने कुआँ खुदवाने का वचन दिया किन्तु कुएँ पर उसके बाप का नाम भी खुदवाया

जाय, साथ यह शर्त भी रखो। विनोबा ने कहा—नहीं, भाई! मैं तेरे बाप को नरक में भेजने का पाप नहीं करूंगा।

—**भूदानपत्रिका से**

१६. जिनके हाथों रात - दिन
गरीब लोगों का शोषण होता है,
धर्म अपनी ठगाइयों को
ढकने का एक लोशन होता है,
छोटी सी धर्मशाला पर
बड़ा सा नाम खुदानेवालों के दिलों में,
दया का भाव नहीं
केवल अपने अभिमान का पोषण होता है।

—**'खुले आकाशमें' पुस्तक से**

★

प्रशंसा

१. प्रशंसा शब्दों की निरर्थक ध्वनि मात्र है। —**वायर्स**

२. ध्वनियों में सर्वमधुर है प्रशंसा की ध्वनि। —**जेनोफोन**

३. केवल मुंह से प्रशंसा करना-मनुष्यता है,
दिल से प्रशंसा करना-दिव्यता है।

४. प्रशंसा वही है, जो पीठ-पीछे की जाय, मुंह पर नहीं।

५. दूर ही प्रशंसा की गहराई का मूल-कारण है।
—**डाइटरॉट**

६. श्रेष्ठ मस्तिष्कवालों को प्रशंसा सत्प्रेरणा देती है और क्षीण मस्तिष्कवालों को अंत। —**कोल्टन**

७. एक बुद्धिमान पुरुष की प्रशंसा उसकी अनुपस्थिति में कीजिए किन्तु स्त्री को उसके मुंह पर।
—**वेल्स की लोकोक्ति**

८. मैं प्रशंसा उन्मुक्त स्वर से और निन्दा धीमे स्वर से करता हूं। — **रूस का द्वितीय कैथरीन**

९. सराह्योड़ो खीचड़ी दांता रे लागै। —**राजस्थानी कहावत**

१०. यं प्रशसन्ति कितवा, यं प्रशंसन्ति चारणाः।
यं प्रशंसन्ति बान्धक्यो, न स जीवति मानवः॥
—**विदुरनीति ६।४५**

जुआरी-धूर्त, चारण-भाट तथा व्यभिचारिणी स्त्रियां—ये जिसकी प्रशंसा करते हैं, वह व्यक्ति अधिक समय नहीं जी सकता—जल्दी ही बरबाद हो जाता है।

११. जीर्णमन्नं प्रशंसन्ति, भार्यां च गतयौवनाम्।
शूरं विजितसंग्रामं, गतपारं तपस्विनम्॥

—**विदुरनीति** ३।६६

सत्पुरुष पच जाने पर अन्न की, निष्कलंक-जवानी बीत जाने पर भार्या की, संग्राम जीत लेने पर शूर की और तत्त्वज्ञान प्राप्त हो जाने पर तपस्वी की प्रशंसा करते हैं।

१२. प्रत्यक्षे गुरुवः स्तुत्याः, परोक्षे मित्र-बान्धवाः।
कर्मान्ते दास-भृत्याश्च, पुत्रा नैव मृताः स्त्रियः॥

गुरुओं की प्रशंसा प्रत्यक्ष में, मित्र-बंधुओं की प्रशंसा परोक्ष में, दासों-नौकरों की प्रशंसा काम कर लेने के बाद और स्त्रियों की प्रशंसा मृत्यु के बाद करनी चाहिए, किन्तु पुत्रों की प्रशंसा कभी नहीं करनी चाहिए।

१३. हम सदैव उनसे प्रेम करते हैं, जो हमारी प्रशंसा करते हैं, पर उनसे नहीं, जिनको हम प्रशंसा करते हैं।

—**रोश फूको**

१४. अद्यापि दुर्निवारं, स्तुतिकन्या वहति कौमारम्।
सद्भ्यो न रोचते सा-ऽसन्तो तस्यै न रोचन्ते॥

स्तुतिकन्या आज भी दुर्निवारणीय-कुमारीपन को धारण कर रही है। क्योंकि सत्पुरुष तो उसको पसंद नहीं करते और असत्पुरुष उसको अच्छे नहीं लगते।

२८ आत्मस्तुति-स्वप्रशंसा-निषेध

१. स्तोत्रं कस्य न तुष्टये । —कुमारसंभव

स्तवना किसको संतुष्ट नहीं करती ?

२. आत्मा न स्तोतव्यः ।

—चाणक्यसूत्र ५०६

अपनी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए ।

३. ज्ञानवतापि च नात्यर्थमात्मनो ज्ञाने न विकत्थितव्यम् ।

—चरकसंहिता

ज्ञानवान मनुष्य को भी अपने ज्ञान की अधिक श्लाघा नहीं करनी चाहिए ।

४. प्रभवो ह्यात्मनः स्तोत्रं, जुगुप्सन्त्यपि विश्रुताः ।

—भागवत ४।१५।२५

समर्थ पुरुष प्रसिद्ध होते हुए भी अपनी स्तुति को पसन्द नहीं करते ।

५. बड़ा बड़ाई ना करे, बड़ा न बोले बोल ।
हीरा मुख से ना कहे, लाख हमारा मोल ।।

६. नहिं करते जी, नहिं करते, बड़े बड़ाई नहिं करते ।

—उपदेशसुमनमाला

७. वो शूर नहीं कहलाता है, जो अपने आप बखान करे ।
वह काम नहीं कर सकता है, जो बातों का भुगतान करे ।।

८. क्या तुम चाहते हो कि दुनियाँ तुमको भला कहे ?
यदि चाहते हो तो तुम स्वयं को भला मत कहो !

— पेस्कल

९. आप सभाओं या दोस्तों में स्वयं को अनभिज्ञ-अल्पज्ञ आदि कहते हैं, तो क्या ऐसे कहकर अपनी निरभिमानिता की स्तुति तो नहीं चाहते ?

१० परस्तुतगुणो यस्तु, निर्गुणोपि गुणी भवेत् ।
इन्द्रोपि लघुतां याति, स्वयं प्रख्यापितो गुणैः ।

—चाणक्यनीति १६।८

दूसरों के द्वारा प्रशंसा होने पर निर्गुणी भी गुणी प्रतीत होता है, तथा अपने गुणों का प्रदर्शन करने से इन्द्र भी लघुता को प्राप्त हो जाता है ।

★

२९ स्वप्रशंसक

१. सयं-सयं पसंसंता, गरहंता परं वयं ।
······ संसारं ते विउस्सिया । —सूत्रकृतांग ७।२।२२
जो अज्ञानी अपनी-अपनी प्रशंसा करते हुए दूसरों की निंदा करते हैं, वे संसार में दुःख को प्राप्त होते हैं ।

२. Fool to other to himself a sage.
फूल टु ऑदर टु हिमसेल्फ ए सेज —**अंग्रेजी कहावत**
अपने मुँह मियांमिट्ठु ।

३. पोताना गीत सौ कोई गाय । —**गुजराती कहावत**

४. आपणी ते रूड़ी, बीजानी बापूड़ी । ,, ,,

५. पोतानी मां ने डाकण कोई न कहे । ,, ,,

६. बीजाने घेर रांड-भांड, मारे घेर सती । ,, ,,

७. पड़ोसी नां छोकरा पीतल नां ने,
गामनां छोकरा गारानां । ,, ,,

८. वर ने कौण बखाणे ? (वर नी मां) ,, ,,

★

३० ख्याति-प्रसिद्धि

१. यदि तुम चाहते हो कि मरते ही दुनियाँ तुम्हें भूल न जाय, तो या तो पढ़ने योग्य पुस्तक रचो या वर्णनीय कर्म करो।

—**फ्रैंकलिन**

२. केवड़ों के फल नहीं लगते, पानों के फल-फूल दोनों नहीं लगते, फिर भी एक-एक विशेषता के कारण प्रसिद्धि पा रहे हैं।

३. प्रसिद्धि वीरता के कामों की सुगंधि है।

—**सुकरात**

४. धन्य हैं वे मनुष्य, जिनकी ख्याति वास्तविकता से अधिक नहीं है।

—**टैगोर**

५. उत्तमा आत्मना ख्याताः, पितुः ख्याताश्च मध्यमाः।
अधमा मातुलैः ख्याता, श्वसुरेणाधमाधमाः ॥

अपने आप ख्याति पानेवाले उत्तम, पिता से ख्याति पानेवाले मध्यम, मामा से ख्याति पानेवाले अधम तथा श्वसुर से ख्याति पानेवाले अधमाधम कहलाते हैं।

६. प्रसिद्धि सज्जनता या महानता की कोई जरूरी शर्त नहीं है।

७. न लोगस्सेसणं चरे !
जस्स नत्थि इमा जाई,
अण्णा तस्स कओ सिया ?

—आचारांग १।४।१

लोकैषणा से मुक्त रहना चाहिए। जिसको यह लोकैषणा नहीं है, उसको अन्य पाप प्रवृत्तियाँ कैसे हो सकती है।

८. जाव-जाव लोएसणा, ताव-ताव वित्तेसणा।
जाव-जाव वित्तेसणा, ताव-ताव लोएसणा।
से लोएसणं च वित्तेसणं च परिन्नाए गोपहेणं गच्छेज्जा, णो महापहेणं गच्छेज्जा। जन्नवक्केणं अरहंता इसिणा बुइयं।

—ऋषिभाषित १२।१

जब तक लोकैषणा (प्रसिद्धि की कामना) है, तब तक वित्तैषणा (सम्पत्ति की कामना) है और जब तक वित्तैषणा है, तब तक लौकैषणा है। साधु को चाहिए कि इन दोनों को समझकर गोपथ से गमन करे, किन्तु महापथ से नहीं याज्ञवल्क्य-आर्हतर्षि ने ऐसे कहा है।

९. खाती बधवा दे नहीं, ज्यूं वन में वनराय।
त्यूं साधक की साधना, ख्याति देत खपाय।।

१०. महत्वाकांक्षी के लिए ख्याति खारे जल के समान है। उसे पीने से प्रत्युत प्यास बढ़ती है।

—इमर्सन

११. घटं छिन्द्यात् पटं भिन्द्यात्, कुर्याद् रासभरोहणम्।
येन-केन प्रकारेण, प्रसिद्धः पुरुषोभवेत्।।

पुरुष येन-केन-प्रकारेण जगत् में प्रसिद्ध हो जाय, फिर चाहे वह घट का छेदन करे, पट का भेदन करे अथवा गधे की सवारी करे।

१२. जिन्हें प्रदर्शन रुचित है, दर्शन उन्हें अलभ्य।
'चन्दन' सिद्धि प्रसिद्धि में, नहीं देखते भव्य ॥

—**तात्त्विक त्रिशती १६५**

१३. नामी बनिया कमा खाये और नामी चोर मारा जाए।

—**हिन्दी कहावत**

★

३१ यश-कीर्ति

१. एक दिग्गामुकी कीर्तिः, सर्वदिग्गामुकं यशः ।
एक दिशा में फैलनेवाली कीर्ति है तथा सब दिशाओं में फैलने वाला यश है ।

२. क्षितितले किं जन्म कीर्तिं विना ?
दुनियां में कीर्ति के बिना जन्म वृथा है ।

३. अनन्यगामिनी पुंसां, कीर्तिरेका पतिव्रता ।
दूसरों के पास नहीं जाने वाली एक कीर्ति ही मनुष्य की सच्ची पतिव्रता स्त्री है ।

४. सर्वं रत्नमुपद्रवेणसहितं निर्दोषमेकं यशः ।
सभी रत्न उपद्रवयुक्त हैं । एक यश ही निर्दोष रत्न है ।

५. सूरत से कीरत बड़ी, विना पंख उड़ जाय ।
सूरत तो जाती रहे, कीरत कदे न जाय ।।

६. आँख काणी करवी, पण दिशा काणी न करवी ।
—गुजराती कहावत

७. जश जीवन अपजश मरण, भूल करो मत कोय ।
कहो रावण कहा ले गयो, कहा करण गयो खोय ।।

७. जाकी शोभा जगत में, ताको जीवित धन्न ।
जीवित ही मूआ फिरै, सुणै कुशोभा कन्न ।

९. संभावितस्य चाऽकीर्ति - र्मरणादतिरिच्यते ।
—गीता २।३४

सम्मानित पुरुषों के लिए अपकीर्त्ति मरण से भी बुरी है।

१०. कुकर्मान्तं यशो नृणाम्।

कुकर्मों का अन्त होते ही मनुष्यों का यश बढ़ने लगता है।

११. पण्डितो-सीलसम्पन्नो, सण्हो च पटिभानवा।
निवातवुत्ति अत्थद्धो, तादिसो लभते यसं॥

—दीघनिकाय ३।८।५

पण्डित, सदाचारपरायण, स्नेही, प्रतिभावान, एकान्तसेवी—आत्मसंयमी, विनम्र पुरुष ही यश को पाता।

१२. उट्ठानको अनलसो, आपदासु न वेधति।
अच्छिदवुत्ति मेधावी, तादिसो लभते यसं॥

—दीघनिकाय ३।८।५

उद्योगी, निरालस, आपत्ति में न डिगनेवाला, निरन्तर काम करनेवाला, मेधावी पुरुष यश को पाता है।

१३. जगति के न यशः-क्षुधिता जनाः! —धनमुनि

संसार में ऐसे कौन हैं, जिनको यश की भूख न हो।

१४. कुंकम नां चाँल्लानी आशा सौ कोई राखे,
पण मेशना चाँल्ला नी कोई न राखे।

—गुजराती कहावत

सब यश चाहते हैं, अयश नहीं।

१५. सारदूल को स्वांग करि, कूकर की करतूत।
'तुलसी' ता पर चाहिए, कीरति विजय विभूति।

३२ आर्जव-सरलता

१. ऋजोर्भावं आर्जवम् ।

सरल व्यक्ति के भाव को आर्जव-सरलता कहते हैं ।

२. मायाविजएणं अज्जवं जणयइ ।

— उत्तराध्ययन २९।६९

माया को जीतने से जीव सरलभाव को उत्पन्न करता है ।

३. अज्जवयाएणं काउज्जुययं भावज्जुययं भासुज्जुययं अवि-संवायणं जणयइ ।

—उत्तराध्ययन २९।४८

सरलभाव से जीव काया, मन एवं भाषा की अवक्रता तथा अविसंवादन—अविरुद्धभाव को उत्पन्न करता है ।

४. विना सरलता सत्य नहीं, सत बिन नहिं विश्वास ।
बिन श्रद्धा नहीं एकता, बिन एका गणनाश ।।

—चन्दनमुनि

५. सर्वतीर्थेषु वा स्नानं, सर्वभूतेषु वार्जवम् ।
उभे त्वेते समे स्याता-मार्जवं वा विशिष्यते ।।

—विदुरनीति ३।२

सब तीर्थों में स्नान और सब प्राणियों के साथ सरलता का व्यवहार—ये दोनों एक समान हैं अथवा सरलता का विशेष महत्त्व है।

६. निग्गंथा उज्जुदंसिणो। —**दशवैकालिक** ३।११

निर्ग्रन्थ सरलदृष्टिवाले होते हैं।

७. "चन्दन" बालक की तरह, रख हरदम दिल साफ।
निष्प्रपंच बन और सब, तेरे दुर्गुण माफ॥

८. जब तक तुम बदलकर छोटे बच्चे (सरल) न बन जाओगे,
तब तक ईश्वरीय-राज्य में दाखिल नहीं हो सकोगे।

—**इंजील**

९. सीधी लकड़ी पर राष्ट्रध्वज लहराया जाता है और टेढ़ी-बांकी चूल्हे में जलती है।

१०. नात्यन्तसरलैर्भाव्यं, गत्वा पश्य वनस्थलीम्।
छिद्यन्ते सरलास्तत्र, कुब्जास्तिष्ठन्ति पादपाः।

—**चाणक्यनीति** ७।१२

मनुष्य को अत्यन्त सरल नहीं होना चाहिए। जाकर वन को देखो! वहां सीधे-सरल वृक्ष काटे जाते हैं एवं बांके वृक्ष खड़े ही रहते हैं।

११. आर्जवं कुटिलेषु न नीतिः। —**नैषधीय चरित्र** ५।१०

कुटिलमनुष्यों में सरलता का व्यवहार नीतिसम्मत नहीं है।

★

३३ सरल एवं कुटिल व्यक्ति

१. सरलगतिः सरलमतिः सुरलाशयः सरलशीलसंपन्नः ।
सर्वं पश्यति सरलं, सरलः सरलेन भावेन ।।
सरलव्यक्ति सब चीजें सरलभाव से देखता है। उसकी गति, मति, भावना एवं आचरण सब सरलतायुक्त होते हैं।

२. कुटिलगतिः कुटिलमतिः, कुटिलाशयः कुटिलशीलसंपन्नः।
सर्वं पश्यति कुटिलं, कुटिलः कुटिलेन भावेन ।।
कुटिलव्यक्ति सब चीजें कुटिलता से देखता है। उसकी गति, मति, भावना एवं आचरण सब कुटिलतायुक्त होते हैं।

३. सरल जनों की सरल गति, वक्रजनों की वक्र।
सीधा जाता तीर ज्यों, चक्कर खाता चक्र ।।

*

माया के दुर्गुण

१. माया गइपडिग्घाओ । —उत्तराध्ययन ९।५४

माया अच्छी गति का नाश करती है ।

२. माया मित्ताणि नासेइ । —दशवै० ८।३८

माया मित्रों का नाश करती है ।

३. दुर्भाग्यजननी माया, माया दुर्गतिकारणम् ।

—विवेकविलास

माया दौर्भाग्य को जन्म देनेवाली है—और दुर्गति का कारण है ।

४. माया करण्डी, नरकस्य हुण्डी ।
तपोविखण्डी, सुकृतस्य भण्डी ॥ —शुकबोध

५. माया नरक की पिटारी है, तप को खण्डित करनेवाली है और धर्म को बदनाम करनेवाली है ।

६. दम्भ तो सिर्फ झूठ की पोशाक है । —गांधी

७. माया तैर्यग्योनस्य । — तत्त्वार्थसूत्र ६।२७

माया तिर्यंचयोनि को देनेवाली है । (तिर्यंच माया के सहारे ही बांके होकर चलते हैं)

८. नृणां स्त्रीत्वप्रदा माया। —विवेकविलास

माया पुरुष को स्त्री का रूप देनेवाली है।

९. जे इह मायाइ मिज्जइ, आगंतागब्भायणंतसो।

—सूत्रकृतांग २।२।९

मास-मास खमण की तपस्या करनेवाला भी जो यहां माया में फंस जाता है, वह अनन्तबार गर्भ के दुःखों को प्राप्त होता है।

१०. धम्मविसए वि सुहमा, माया होइ अणत्थाय,
जहा मल्लिस्स महाबल-भवंमि तित्थयरनामबंधेवि।
तवविसय - थोवमाया, जाया जुवइत्ति होऊत्ति।

—ज्ञाता-श्रुत० १ अ०८

धर्म के विषय में की हुई सूक्ष्ममाया भी अनर्थ के लिए होती है। जैसे—मल्लि प्रभु ने महाबल के भव में तीर्थंकरनाम कर्म का उपार्जन किया, फिर भी तपस्या में थोड़ी-सी माया करके वह स्त्री बन गई।

११. फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजे व्यवहार।
जैसे हांडी काठ की, चढ़े न दूजी बार॥

१२ काष्ठे पात्र्यामेकदैव पदार्थो रध्यते।

—नीतिवाक्यामृत ८।२२

लकड़ी की हाँड़ी में एक ही बार पदार्थ पकाया जा सकता है दूसरी बार नहीं, क्योंकि फिर वह नष्ट हो जाती है।

१३. तोतरा घोड़ा किता क चालै! —राजस्थानी कहावत

★

३५ मायावी-व्यक्ति

१. मायी मायं कट्टु णो आलोएइ णो पडिक्कमेइ णो निंदइ णो अहारियं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जइ ।

—सूत्र० श्रु० २।२।१३

कपटी पुरुष अकार्य करके उसकी आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा आदि नहीं करता एवं उचित प्रायश्चित्त नहीं लेता (वह कृत पापों को ढकना चाहता है) उसे अपयश का भय रहता है।

२. मासिकदोष सेवन करके सकपट आलोचना करनेवाले को द्विमासिक प्रायश्चित्त आता है।

—व्यवहार सूत्र २।१

३. तन उजला मन सांवला, बगुला कपटो भेख ।
यां सूं तो कागा भला, बाहर अन्दर एक ।।

४. भुवनं वञ्चयमाना, वञ्चयन्ति स्वमेव हि ।

—उपदेशप्रासाद

जगत को ठगते हुए कपटी पुरुष वास्तव में अपने आप को ही ठगते हैं।

५. बिल्ली चली भख लेन कूँ, पड़ी कूप में जाय ।
करी कमाई आपको, अब क्यों मन पिछताय ।
अब क्यों मन पिछताय, बिल्ली ने कपट कमाया ।
लगी कपट की झपट, कपट बिल्ली घर आया ।

कहे **दीनदरवेस**, साँच पर क्यों नहि चल्ली।
गई थी भख लेन, कूप में पड़ गई बिल्ली।

६. एक अहीरी चली पय बेचन,
पानी मिलाय भई चुप रानी।
पानी मिलायो सो कोउ न जानत,
जानत है एक आतम-ज्ञानी।
शहर में जायके बेच दियो,
भये दाम दुने मन में हरषानी।
बन्दर न्याय कियो अति सुन्दर,
दूध के दूध रु पानी के पानी।

—भाषा श्लोकसागर

७. दंभी बनना और है, दम्भ समझना और।
चौरी करना और है, चोर पकड़ना और॥

—चन्दनमुनि

★

३६ मायात्याग का उपदेश

१. मायं च वज्जए सया। —उत्तराध्ययन १।२४

माया को सदा छोड़ता ही रहे।

२. व्यसनशतसहायां दूरतो मुञ्च मायाम्।

—सिन्दूरप्रकरण ५६

सैंकड़ों दुःख देनेवाली माया को दूर से ही छोड़ दो।

३. अलं मायाप्रपञ्चेन, लोकद्वयविरोधिना।

—शुभचन्द्राचार्य

दोनों लोकों को बिगाड़ने वाले माया-प्रपंच से दूर रहो!

४. मायं मज्जवभावेण। —दशवैकालिक ८।३९

माया-कपट को सरलभाव से जीतो।

५. हलवाई (वे लोग घड़े के मुख पर थोड़ा-सा मक्खन रखते है, किन्तु अन्दर से घड़ा खाली होता है) की तरह कोई भी भाई ऊपर से पवित्रता दिखाकर अन्दर कपट मत रखो!

६. दुस्त्यजं दम्भसेवनम्।

कपट को छोड़ना कठिन है।

७. पगड़ियों के पेच मिट गए (टोपियाँ ओढ़ने से) पर हृदय के पेच दुगुने होते जा रहे हैं।

८. सगला पेच सिखा दिया पण एक मिन्नीवालो राखलियो।

—**राजस्थानी कहावत**

९. आचार्ये नटे धूर्ते, वैद्य-वेश्या-बहुश्रुते।
कौटिल्यं नैव कर्त्तव्यं, कौटिल्यं तैर्विनिर्मितम्।

आचार्य, नट, धूर्त, वैद्य, वेश्या, बहुश्रुत—इनके साथ कुटिलता नहीं करनी चाहिए क्योंकि कुटिलता इन्हीं की बनाई हुई है।

१०. वैद्य, अध्यापक एवं वकील से कपट करनेवाले रोगी, विद्यार्थी एवं मुकदमा लड़नेवाले कभी सफल नहीं होते।

★

३७ कषाय

१. सुह-दुक्खसहियं, कम्मखेत्तं कसन्ति जे जम्हा ।
कलुसंति जं च जीवं, तेण कसायत्ति वुच्चंति ।।

—**प्रज्ञापना १३ टीका**

कई प्रकार के सुख-दुःख के फल योग्य—ऐसे कर्मक्षेत्र का जो कर्षण करता है, और जो जीव को कलुषित करता है, उसे कषाय कहते हैं ।

२. संसारस्स उ मूलं कम्मं, तस्स वि हुंति य कसाया ।

—**आचारांग निर्युक्ति १८९**

संसार का मूल कर्म है और कर्म का मूल कषाय है ।

३. कसाया अग्गिणो वुत्ता ।

—**उत्तराध्ययन २३।५३**

कषाय—(क्रोध-मान-माया-लोभ) जाज्वल्यमान अग्नि के समान है ।

४. जं अज्जियं चरित्तं, देसुणणए वि पुव्वकोडीए ।
तं पि कसायमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेण ।।

—**निशीथभाष्य २७९३ बृहत्कल्प भाष्य २७१५**

देशोनकोटिपूर्व की साधना के द्वारा जो चारित्र अर्जित किया है, उसे अन्तर्मुहूर्त्तभर के प्रज्वलित कषाय से मनुष्य नष्ट कर देता है ।

५. कषाय मन की मादकता है। —**स्पसर**

६. कसाया सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स। —**दशवै० ८।४०**

क्रोध आदि चारों कषाय जन्म-मरणरूप वृक्ष के मूल को सींचते रहते हैं।

७. चत्तारि कसाया पण्णत्ता, तं जहा - कोहकसाए, माण-कसाए, मायाकसाए, लोभकसाए। —**स्थानांग ४।२।२६६**

चार कषाय कहे हैं, क्रोधकषाय, मानकषाय, मायाकषाय, और लोभकषाय।

८. कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं चउत्थं च अज्झत्थदोसा। —**सूत्रकृतांग ६।२६**

क्रोध, मान, माया, लोभ, ये चार अध्यात्म-दोष हैं।

९. कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वपणासणो॥

—**दशवैकालिक ८।३८**

क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का, माया मित्रता का, और लोभ सब गुणों का नाश करनेवाला है।

१० अहे वयइ कोहेण, माणेण अहमा गइ।
माया गइपडिग्घाओ, लोहाओ दुहओ भयं॥

—**उत्तराध्ययन ८।५४**

क्रोध से आत्मा नीचे गिरता है, मान से अधोगति मिलती है, माया से सद्गति का नाश हो जाता है, और लोभ से इहलोक-परलोक दोनों में भय प्राप्त होता है।

११. कषाय का अन्त पश्चात्ताप की शुरुआत है। —**फ्रेंकलिन**

★

३८ कषाय-त्याग

१. सहजानन्दलब्धये कषायव्युत्सर्गः ।

—**मनोनुशासन ३।२६**

सहजानन्द-वीतरागभाव की प्राप्ति के लिए कषाय का त्याग करना चाहिए ।

२. अंतो वहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ।

—**आचारांग ८।१८**

आंतरिक—कषाय और बाह्य शरीर को त्यागकर आत्मिक शुद्धि की गवेषणा करनी चाहिए ।

३. रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं ।
मायं न सेवेज्ज पहेज्ज लोहं ॥

—**उत्तराध्ययन ४।१२**

क्रोध से दूर रहो ! मान को हटाओ ! माया का सेवन मत करो और लोभ को छोड़ो ।

४. कसाए पयणू किच्चा, अप्पाहारे तितिक्खए ।

—**आचारांग ८।८।३**

कषाय को पतली करके अल्प-आहारी बनते हुए सहनशील बनो !

५. इंदियाणि कसाये य, गारवे य किसे कुरु।
णो वयं ते पसंसामो, किसं साहु सरीरगं ।।
—**निशीथभाष्य ३७५८**

हम साधक के केवल अनशन आदि से कृश (दुर्बल) हुए शरीर के प्रशंसक नहीं है, वस्तुत: इन्द्रिय (वासना) कषाय और अहंकार को ही कृश (क्षीण) करना चाहिए।

६. कोहं माणं च मायं च, लोभं च पाववड्ढणं।
वमे चत्तारि दोसाइं, इच्छंतो हियमप्पणो ।।
—**दशवैकालिक ८।३७**

अपना हित चाहनेवाले व्यक्ति को पाप बढ़ानेवाले क्रोध, मान, माया, लोभ—इन चारों दोषों (कषायों) को त्याग देना चाहिए।

७. उवसमेण हणे कोहं, माणं मद्दवया जिणे।
मायं चज्जवभावेणं, लोभं संतोसओ जिणे ।।
—**दशवैकालिक ८।३९**

उपशम से क्रोध को, नम्रता से मान को, सरलभाव से माया को और संतोष से लोभ को जीतना चाहिए।

८. इमेण चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ।
—**आचारांग ५।३**

आत्मा में रहें हुए—इन क्रोधादि शत्रुओं से युद्ध कर! बाह्य शत्रुओं से लड़ने में क्या है?

९. कसायपच्चक्खाणेणं, वीतरागभावं जणयइ।
—**उत्तराध्ययन २९।३६**

कषाय का त्याग करने से जीव वीतराग भाव को प्राप्त होता है।

१०. जे एगं नामे से बहुं नामे, जे बहुं नामे से एगं नामे।

—**आचारांग ३।४**

जो एक कषाय को नमाता है, जीतता है, वह मिथ्यात्वादि अनेकों को जीत लेता है, जो अनेकों जीत लेता है, वह एक कषाय को जीत लेता है।

११ अणुवसंतेण दुक्करं दमसागरो।

—**उत्तराध्ययन १६।४३**

जिसकी कषायवृत्ति शांत नहीं है, उसके द्वारा इन्द्रियदमन रूप समुद्र को तैरना कठिन है।

१२. अजिताक्षः कषयाग्निं, विनेतुं न प्रभुर्भवेत्।

—**शुभचन्द्राचार्य**

जिसने अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त नहीं की, वह कषाय—अग्नि को नहीं बुझा सकता।

१३. जस्सवि य दुप्पणिहिया होंति कसाया तवं चरंतस्स।
सो बालतवस्सी विव, गयन्हाण-परिस्समं कुणइ॥

—**दशवैकालिक ८, निर्युक्ति गाथा ३००**

जो तप करता हुआ भी कषायों का निरोध नहीं करता, वह बालतपस्वी है। गज-स्नान की तरह उसका तप, कर्म-निर्जरा का कारण न होकर उल्टा कर्मबन्ध का कारण हो जाता है।

१४. सामन्नमणुचरंतस्स, कसाया जस्स उक्कडा होंति।
मन्नामि उच्छुफुल्लं व, निप्फलं तस्स सामन्नं॥

—**दशवैकालिक नि० ३०१**

श्रमणधर्म का अनुसरण करते हुए भी जिसके क्रोध आदि कषाय उत्कट है, तो उसका श्रमणत्व वैसा ही निरर्थक है, जैसा कि ईख का फूल।

१४. **चउक्कसायावगए स पुज्जो।**

—दशवैकालिक ६।३।१४

जो चार कषाय से रहित है, वह पूज्य है।

३६ मंदकषायी-तीव्रकषायी

१. सव्वत्थवि पियकरणं, दुव्वयणे दुज्जणे वि खमकरणं।
सव्वेसिं गुणग्गहणं, मंदकसायाण-दिट्ठंता ॥
अप्पपसंसणकरणं, पुज्जेसु वि दोसगहणसीलत्तं।
वैरधरणं च सुइरं, तिव्वकसायाणलिंगाणि ॥

—कीर्तिकेयानुप्रेक्षा ९१-९२

सब जगह प्रियता उत्पन्न करना, दुर्वचन बोलनेवाले दुर्जनों को भी क्षमा करना और सबका गुणग्रहण करना—ये मंदकषायी जीवों के लक्षण हैं (९१) अपनी प्रशंसा करना, पूज्यजनों का भी दोष-ग्रहण करनेवाला होना और लम्बे समय तक वैर धारण किये रखना—ये तीव्रकषायी जीवों के लक्षण हैं।

२. हरिततृणाङ्कुरचारिणि, मन्दा मृगशावके भवति मूर्च्छा।
उन्दरनिकरोन्माथिनि, मार्जारे सैव जायते तीव्रा ॥

—पुरुषार्थसिद्ध्युपाय २१

हरे तृणाङ्कुरो में विचरनेवाले मृग-शिशुओं की मूर्च्छा मन्द, एवं उन्दरसमूह का नाश करनेवाले मार्जार की मूर्च्छा तीव्र होती है। ये दृष्टान्त मन्दकषायी-तीव्रकषायी व्यक्तियों की भावना पर दिये गए हैं।

प्रमाद्-आलस्य

१. शुभयोग के अभाव को, या शुभ उपयोग के अभाव को प्रमाद कहते हैं। —स्थानांगसूत्र ५।२।४१८ टीका

२. आत्मप्रदेशों में धर्म के प्रति जो अनुत्साह है, उसे प्रमाद कहते हैं। —भिक्षुस्वामी

३. प्रमाद विस्मरण अर्थात् मृत्यु है। —बुद्ध

४. पमायं कम्ममाहंसु अप्पमायं तहावरं।
तब्भावादेसओ वावि, बालं पंडियमेव वा॥
—सूत्रकृतांग ८।३

भगवान ने प्रमाद को कर्मबन्ध करनेवाला एवं अप्रमाद को कर्मबन्ध नहीं करनेवाला कहा है। प्रमाद के होने और नहीं होने से ही मनुष्य क्रमश; बाल एवं पण्डित कहलाता है।

५. अप्पमादो अमतं पदं, पमादो मच्चुनो पदं।
—धम्मपद २।१

अप्रमाद अमरता का मार्ग है, प्रमाद मृत्यु का।

६. पमाया दप्पो भवति अप्पमाया कप्पो।
—निशीथचूर्णि ९१

प्रमादभाव से किया जानेवाला अपवाद सेवन दर्प होता है और वही अप्रमादभाव से किया जाने पर कल्प—आचार हो जाता है।

७. आलस्योपहता विद्या ।

आलस्य से विद्या नष्ट होती है ।

८. आलस्य एक प्रकार की हिंसा है । —**गांधी**

९. सुस्ती जगत में सबसे बड़ी फिजूलखर्ची है ।

— **जर्मनी कहावत**

१०. आलस्य सब बुराइयों की जड़ है । — **फ्रेंच-लोकोक्ति**

११ आलस्य अवगुणों का बाप, दारिद्र्य की मां, रोगों की धाय और जीते-जागते की समाधि है ।

१२. आलस्यं हि मनुष्याणां, शरीरस्थो महान् रिपुः ।
नास्त्युद्यमसमो बंधुः कृत्वायं नावसीदति ।।

— **भर्तृ० नीतिशतक ८७**

आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहनेवाला महान शत्रु है और उद्यमबंधु है ।

१३. आलस्यं यदि न भवेज्जगत्यनर्थः,
को न स्याद् बहुधनको बहुश्रुतो वा ।
आलस्यादियमवनिः ससागरान्ता,
सम्पूर्णनर-पशुभिर्निर्धनैश्च ।।

—**योगवाशिष्ठ २।५।३०**

इस संसार में यदि आलस्यरूपी अनर्थ न होता तो कौन महाधनी व महाज्ञानी न बन जाता ? आलस्य के कारण ही यह समुद्रपर्यन्त विस्तृत पृथ्वी मूर्खों और गरीबों से भरी पड़ी है ।

१४. पावर्टी इज दि रिवार्ड ओफ आइडलनेस । —**डच-कहावत**

दरिद्रता आलस्य का पुरस्कार है ।

४१ प्रमाद के भेद

१. छव्विहे पमाए पण्णत्ते, तं जहा—
मज्जपमाए, निद्दपमाए, विसयपमाए, कसायपमाए, जयपमाए, पडिलेहणपमाए। —स्थानांग ६।५०२

छह प्रकार का प्रमाद कहा है—(१) मद्य (२) निद्रा (३) विषय (४) कषाय (५) द्यूत (६) प्रतिलेखना।

२. प्रमाद के आठ प्रकार :- (१) अज्ञान (२) संशय (३) मिथ्यात्व (४) राग (५) द्वेष (६) स्मृतिभ्रंश (७) अनादर (८) योगदुष्प्रणिधानता। —प्रवचनसारोद्धार

३. दुविहे उम्माए पण्णत्ते तं जहा—जक्खावेसे चेव मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं। तत्थणं जे से, जक्खावेसे सेणं सुहवेयतराए, जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं सेणं दुहवेयतराए चेव, दुहविमोयतराए चेव। —स्थानांग २।१

बुद्धि का बिगड़ना उन्माद है। वह दो प्रकार से होता है—एक तो शरीर में यक्षादि के प्रवेश से और दूसरा मोहनीयकर्म के उदय से। यक्षादिकृत उन्माद की वेदना और उससे मुक्त होना सहज है। क्योंकि मन्त्रादि द्वारा उसका उपचार हो जाता है। लेकिन मोहनीयकर्मकृत उन्माद की वेदना सहना और उससे मुक्त होना बहुत मुश्किल है। दर्शनमोहकृत-उन्माद से जीव मिथ्यात्व में उन्मत्त बनता है और चरित्रमोह-कृत उन्माद से क्रोधादि कषायों में उन्मत्त होकर भटकता है। उस पर कोई मन्त्र-तन्त्र काम नहीं करते। ●

४२ प्रमाद्-त्याग

१. समयं गोयम ! मा पमायए। —**उत्तराध्ययन १०।१**

हे गौतम ! समयमात्र भी प्रमाद न करो।

२. असंखयं जीविय मा पमायए ! —**उत्तराध्ययन ४।१**

यह जीवन टूट जाने के बाद नहीं जुड़ता अतः प्रमाद मत करो।

३. आयुषः क्षण एकोऽपि, सर्वरत्नैर्नलभ्यते।
नीयते तद् वृथा येन, प्रमादः सुमहानहो ॥

—**योगवाशिष्ठ ६७।१५।७८**

आयु का एक क्षण भी संसार के सब रत्नों से नहीं पाया जा सकता। उस आयु को व्यर्थ खोया जा रहा है, अहो ! यह कितना बड़ा प्रमाद है ?

४. न कर उम्र की इक भी जाया घड़ी,
के टूटी लड़ी जब की छूटी कड़ी।
गई एक पल भी जो गफलत में छूट,
तो माला गई साठ हीरों की टूट। —**उर्दू शेर**

५. धीरो मुहूत्तमपि नो पमाए। —**आचारांग २।१ ६६**

धीर पुरुष को मुहूर्त्त मात्र भी प्रमाद नहीं करना चाहिए।

६. उट्ठिए नो पमायए। —**आचारांग १।५।२**

जो कर्तव्यपथ पर उठ खड़ा हुआ है, उसे फिर प्रमाद नहीं करना चाहिए।

७. उदीर्ध्वं जीवो असुर्न आगादप, प्रागात् तम आ ज्योतिरेति।
—**ऋग्वेद** १।११३।१६

मनुष्यो, उठो ! जीवनशक्ति का स्रोत प्राण सक्रिय हो गया है। अन्धकार चला गया है, आलोक आ गया है।

८. उत्तिट्ठे नप्पमज्जेय्य। —**धम्मपद** १३।२

मनुष्य को उठना चाहिये, प्रमाद नहीं करना चाहिए।

९. अलं कुसलस्स पमाएणं। —**आचारांग** २।४

कुशल व्यक्ति को प्रमाद से बस कर लेनी चाहिए।

१०. जे छेय से विप्पमायं न कुज्जा। —**सूत्र०** १।१४।१

चतुर वही है जो कभी प्रमाद न करे।

११. अप्पमत्ता सतीमन्तो, सुसीला होथ भिक्खवो !
—**दीर्घनिकाय** २।३।१७

भिक्षुओं ! सदैव अप्रमत्त, स्मृतिमान् (सावधान) और सुशील (सदाचारी) होकर रहो !

१२. सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी, न वीससे पंडिए आसुपन्ने।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंडपक्खीव चरऽप्पमत्तो ॥
—**उत्तराध्ययन** ४।६

आशुप्रज्ञ पण्डित पुरुष को मोहनिद्रा में सोये हुए प्राणियों के बीच रहकर भी सदा जागरूक रहना चाहिए। प्रमादाचरण पर उसे कभी विश्वास न करना चाहिए। काल निर्दय है और शरीर निर्बल है—यह जानकर उसे भारण्डपक्षी की तरह सदा अप्रमत्त रहकर विचरना चाहिए।

★

४३ प्रमादी-आलसी

१. जेसिं उ पमाएण, गच्छइ कालो निरत्थओ धम्मे,
ते संसार मणंतं, हिंडंती पमायदोसेण।

धर्मक्रिया में प्रमाद करते हुए जिनका समय व्यर्थ जाता है, वे अपने इस प्रमाद के दोष से अनन्त संसार में परिभ्रमण करते ही रहते हैं।

२. इतः को न्वस्ति मूढात्मा ? यस्तु स्वार्थे प्रमाद्यति।

—विवेकचूड़ामणि

यहां मूर्ख कौन है ?—जो अपने स्वार्थ—हितकारी कार्यों में प्रमाद करता है, वही।

३. न किंचिद्दीर्घसूत्राणां, सिद्ध्यत्यात्मक्षयादृते।

—योगवाशिष्ठ ३।७८।८

ढीले एवं सुस्त मनुष्यों का, उनके नाश के सिवा कोई कार्य सिद्ध नहीं होता।

४. सव्वओ पमत्तस्स भयं, अप्पमत्तस्स नत्थि भयं।

—आचारांग ३।३।१२४

प्रमादी को चारों ओर से भय ही भय है और अप्रमत्त को कहीं से भी भय नहीं है।

५. पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्तो परिव्वए।

—आचारांग ५।२।१५१

प्रमत्त पुरुष को धर्म से बाहर समझो और अप्रमादी बनकर धर्म का आचरण करो।

६. जे पमत्त गुणट्ठिए, से हु दंडे पवुच्चइ। तं परिन्नाय मेहावी इयाणिं नो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं।

—**आचारांग १।४।३५-३६**

जो प्रमादी है, शब्दादि विषयों का अभिलाषी है, वह हिंसक कहलाता है, यह जानकर बुद्धिमान मुनि यह निश्चय करे कि मैंने प्रमाद-वश पहले जो किया था, वह अब दुबारा कभी नहीं करूँगा।

७. जीवन् मृत: कस्तु ? निरुद्यमोय:।

—**शंकरप्रश्नोत्तरी**

जीता हुआ मृत-मुर्दा कौन है ?—निरुद्यमी-आलसी।

८. अलस: श्वसन्नपि न जीवति।

आलसी सांस लेता हुआ भी मृतक है।

९. अलस: सर्वकर्मणामनधिकारी॥

—**नीतिवाक्यामृत १०।१४४**

आलसी-पुरुष राजकीय आदि समस्त कार्यों के अयोग्य होता है।

★

४४ प्रमादी के विषय में कहावतें

१. उठ बींद ! फेरा लै, हाय राम ! मौत दे ।
२. ए मा ! मा ! माखी, बेटा उड़ाय दे ! मा ! दो है ।
३. जांवतोड़ा-जांवतोड़ा ! म्हारे मुहँडे में बोर मेल दैनी ।
४. म्हारैं बाप नैं धान मती मिलीज्यो ! मनै बलीतै नै मेलसी ।
५. स्यालिये वाली घुरी ।
६. हाथ रै आलस मूँछ मुहँडा में आवै ।
७. सौ हाथ मारै जद पच्चास हाथ चालै ।
८. काम रै नाम स्युं ताव चढ़ै ।
९. सोढ़ीजी सिणगार करसी जितै रावलजी पोढ़ जासी ।
१०. हाथां रै किसी मेंहदी लाग्योड़ी है ।
११. मुफत में खावणो र मसीत में सोवणो ।

—राजस्थानी कहावतें

★

दूसरा कोष्ठक

१ निद्रा

१. अभावप्रत्ययालम्बनावृत्तिर्निद्रा । —**पातंजलयोग० १।१०**

अभाव के ज्ञान का अवलम्बन करनेवाली वृत्ति का नाम निद्रा है । (निद्रावस्था में मात्र अभाव का ज्ञान रहता है ।)

२. यदा तु मनसि क्लान्ते, कर्मात्मनः क्लमान्विताः ।
विषयेभ्यो निवर्तन्ते, तदा स्वपिति मानवः ॥

—**चरकसंहिता २१।३५**

काम करते-करते जब मन थक जाता है एवं इन्द्रियाँ थककर अपने विषयों से निवृत्त हो जाती हैं, तब मनुष्य शयन करता है ।

३. मस्तिष्क में रक्त की कमी होने से नींद आती है । भोजन के बाद नींद आने का यही कारण है कि उस समय पाचन-संस्थान में रक्त-संचार अधिक एवं मस्तिष्क में कम हो जाता है ।

—**हावेल (अमेरिकन वैज्ञानिक)**

४. गर्म दूध पीने से नींद जल्दी आती है, चाय से नींद उड़ जाती है ।

५. मनोरंजक काव्य-कहानी, उपन्यास आदि (जिसमें

मस्तिष्क को सोचना न पड़े) पढ़ने से नींद जल्दी आती है।

६. निद्राप्रियो यः खलु कुम्भकर्णो, हतः समीके स रघूत्तमेन।
वैधव्यमापद्यत तस्य कांता, श्रोतुं समायाति कथापुराणम्।।

राम द्वारा युद्ध में कुम्भकरण मारा गया और उसकी महारानी **निद्रा** विधवा हो गई। संभव है इसीलिए वह धर्मकथा सुनने को आती है। (धर्मकथा में लोगों को नींद क्यों आती है—इसका समाधान करने के लिए कवि ने यह कल्पना की है।)

७. मूर्खों, बच्चों व शारीरिकश्रम करनेवालों को नींद अच्छी आती है।

८. अनिद्रा का रोग प्रायः बुद्धिसम्बन्धी-काम करनेवालों व व्यापारियों को होता है। आत्महत्या करनेवाले अधिकांश अनिद्रा के रोग से पीड़ित होते हैं।

★

२ निद्रा से लाभ

१. उचित मात्रा में प्रगाढ़-निद्रा शरीर के लिए सबसे प्रमुख टॉनिक है ।

२. निद्रा से मनुष्य नीरोग, प्रसन्नचित्त, बलशाली, तेजस्वी, हृष्ट-पुष्ट, ऐश्वर्यशाली और दीर्घजीवी बनता है ।

३. निद्रायत्तं सुखं दुःखं, पुष्टि-कार्श्यं-बलाबलम्,
बृषताऽक्लीवता ज्ञान - मज्ञानं जीवितं न च ।

—**चरकसंहिता २१।३६**

सुखपूर्वक निद्रा आ जाने से आरोग्य, शरीर की पुष्टि, बल की वृद्धि, वीर्य की वृद्धि, ज्ञानेन्द्रियों की उचित रूप में प्रवृत्ति और नियत आयु की प्राप्ति होती है । नींद न आने से शरीर में रोग, बल की हानि, नपुंसकता, ज्ञानेन्द्रियों की उचित रूप में अप्रवृत्ति तथा मरण की संभावना भी हो जाती है ।

★

३ निद्रा-निषेध

१. निद्दं च न बहु मन्निज्जा । —**दशवैकालिक ८।४२**

निद्रा को अधिक सम्मान नहीं देना चाहिए ।

२. मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।

—**ऋग्वेद ८।४८।१४**

निद्रा और वाचालता हमारे पर शासन न करे ।

३. न स्वप्नेन जयेन्निद्रां, न कामेन जयेत्स्त्रियः ।
नेन्धनेन जयेदग्निं, न पानेन सुरां जयेत् ॥

—**महाभारत**

सोकर नींद को, काम-सेवन से स्त्री को, ईन्धन से अग्नि को और प्याला पीकर मदिरा को नहीं जीतना चाहिये । (उक्त कार्यों से निद्रा आदि की शक्ति प्रत्युत बढ़ती है ।)

४. जे केइ उ पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पिच्चा सुहं सुवइ, पावसमणे त्ति वुच्चइ ॥

—**उत्तराध्ययन १७।३**

जो दीक्षित होकर अधिक निद्राशील होता है एवं जो खा-पीकर सुख से सो जाता है, वह पापी साधु है ।

५. सन्ध्यायां श्रीद्रुहा निद्रा ।

संध्या समय नींद लेने से लक्ष्मी का नाश होता है ।

६. सूर्योदये चास्तमितेशयानं विमुञ्चति श्रीर्यदि चक्रपाणिः।

—चाणक्यनीति १५।७

सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सोनेवाले को लक्ष्मी छोड़ जाती हैं। चाहे वह विष्णु भगवान ही क्यों न हो!

७. रात्रौ जागरणं रुक्षं, स्निग्धं प्रस्वपनं दिवा।
अरुक्षमनभिष्यन्दि, त्वासीनप्रचलायितम् ॥

—चरकसंहिता २१।५०

रात को अधिक जागने से वायु की वृद्धि होकर शरीर रुक्ष हो जाता है और दिन में सोने से कफ बढ़कर शरीर में स्निग्धता आ जाती है, अतः दिन में बैठे-बैठे नींद ली जाय तो कुछ हरज नहीं।

★

४ सोने के समय

१. शयनकाले सत्संकल्पकरणम् ।

—मनोनुशासन ६।१५

सोते समय पवित्र संकल्प करना चाहिए ।

२. अन्यदेव भवेद् वासः शयनीये नरोत्तम !

—महाभारत शान्तिपर्व

सोने के समय दिन में पहनने के वस्त्रों से भिन्न वस्त्र हुआ करते हैं ।

३. निद्रामोक्षे जपो ध्यानं च । —मनोनुशासन ६।१७

नींद टूटते ही जप और ध्यान करना चाहिए ।

४. प्राक्शिरः शयने विद्या, धनलाभस्तु दक्षिणे ।
पश्चिमे प्रबला चिन्ता, मृत्युर्हानिस्तथोत्तरे ।।

पूर्व की ओर शिर करके सोने से विद्या आती है, दक्षिण की ओर शिर करके सोने से धन का लाभ होता है, पश्चिम की ओर शिर करके सोने से प्रबल चिंता उत्पन्न होती है तथा उत्तर की ओर शिर करके सोने से मृत्यु अथवा हानि होती है ।

★

५ स्वप्न

१. स्वप्न का अर्थ—

इन्द्रियाणामुपरमे, मनोनुपरतं यदा ।
सेवते विषयानेव, तद्विद्यात् स्वप्नदर्शनम् ।।

अर्धनिद्रित अवस्था में जब प्राणी की इन्द्रियां सुप्त होती हैं और मन जागृत होता है, उस समय वह जागृत मन, जो शब्द, रूप, गन्ध, रस और स्पर्शरूप इन्द्रियों के विषयों का सेवन करता है (शब्द सुनता है, रूप देखता है, गंध सूंघता है, रस का स्वाद लेता है तथा पदार्थों का स्पर्श करता है) उस मानसिक क्रिया का नाम **स्वप्न** है ।

२. स्वप्नदर्शन-की अवस्था—

(क) सर्वेन्द्रियव्युपरतौ, मनोऽनुपरतं यदा ।
विषयेभ्यस्तदा स्वप्नं, नानारूपं प्रपश्यति ।।

—अष्टांग हृदयनिदान स्थान अ० ६

जब इन्द्रियाँ अपने विषयों से निवृत्त हो जाती हैं और मन शब्दादि विषयों में लगा रहता है, उस समय मनुष्य स्वप्न देखता है ।

(ख) सुत्ते णं भंते ! सुविणं पासइ, जागरे सुविणं पासइ, सुत्त-जागरे सुविणं पासइ ?

गोयमा ! नो सुत्ते सुविणं पासइ, नो जागरे सुविणं पासइ, सुत्त-जागरे सुविणं पासइ ।

—भगवती १६।६

भगवन् ! क्या जीव सुप्तअवस्था में (गहरी नींद में) स्वप्न देखता है ? जागृतअवस्था में स्वप्न देखता है ? या सुप्त-जागृत अवस्था में स्वप्न देखता है ?

गौतम ! जीव सुप्तअवस्था में स्वप्न नहीं देखता, जागृतअवस्था में स्वप्न नहीं देखता, किन्तु कुछ सुप्त, कुछ जागृत अर्थात् अर्धनिद्रित अवस्था में स्वप्न देखता है ।

३. स्वप्नों की संख्या एवं शुभाशुभता—

कइ णं भंते ! सुविणा पन्नत्ता ?

गोयमा ! बायालीसं सुविणा पन्नत्ता ।

कइ णं भंते ! महासुविणा पन्नत्ता ?

गोयमा ! तीसं महासुविणा पन्नत्ता ।

कइ णं भंते ! सव्वसुविणा पन्नत्ता ?

गोयमा ! बावत्तरि सव्वसुविणा पन्नत्ता ।

—भगवती १६।६

भगवन् ! कितने स्वप्न कहे हैं ?

गौतम ! बयालीस ।

भगवन् ! कितने महास्वप्न कहे हैं ?

गौतम ! तीस ।

भगवन् ! सारे स्वप्न कितने कहे हैं ?

गौतम ! बहतर ।

ग्रन्थानुसार बहत्तर स्वप्नों में बयालीस तो जघन्य-अशुभ एवं तीस उत्तम-शुभ माने गये हैं। उन्हें महास्वप्न भी कहा गया है। स्वप्नों के नाम इस प्रकार हैं :—

४२ जघन्यस्वप्न—(१) गन्धर्व, (२) राक्षस, (३) भूत, (४) पिशाच, (५) बुक्कस, (६) महिष, (७) सांप, (८) बानर, (९) कंटकवृक्ष, (१०) नदी, (११) खजूर, (१२) श्मशान, (१३) ऊँट, (१४) खर, (१५) बिल्ली, (१६) श्वान, (१७) दौस्थ्य, (१८) संगीत, (१९) अग्निपरीक्षा, (२०) भस्म, (२१) अस्थि, (२२) वमन, (२३) तम, (२४) दुःस्त्री, (२५) चर्म, (२६) रक्त, (२७) अश्म, (२८) वामन, (२९) कलह, (३०)विविक्तदृष्टि, (३१) जलशोष, (३२) भूकम्प, (३३) गृह-युद्ध, (३४) निर्वाण, (३५) भंग, (३६) भूमंजन, (३७) तारा-पतन, (३८) सूर्य-चन्द्रस्फोट, (३९) महावायु, (४०) महाताप, (४१) विस्फोट, (४२) दुर्वाक्य।—ये बयालीस स्वप्न अशुभ-सूचक माने गए हैं।

३० उत्तमस्वप्न—(१) अर्हन्, (२) बुद्ध, (३) हरि, (४) कृष्ण, (५) शंभु, (६) नृप, (७) ब्रह्मा, (८) स्कन्द, (९) गणेश, (१०) लक्ष्मी, (११) गौरी, (१२) हाथी, (१३) गौ, (१४) वृषभ, (१५) चन्द्र, (१६) सूर्य, (१७) विमान, (१८) भवन, (१९) अग्नि, (२०) समुद्र, (२१) सरोवर, (२२) सिंह, (२३) रत्नों का ढेर, (२४) गिरि, (२५) ध्वज, (२६) जलपूर्णघट, (२७) पुरीष, (२८) मांस, (२९) मत्स्य, (३०) कल्पद्रुम।—ये तीस स्वप्न उत्तम फल देनेवाले गिने गए हैं।

तीर्थंकर या चक्रवर्ती की माताएँ उपरोक्त तीस उत्तम स्वप्नों में से—ये चौदह स्वप्न देखती हैं—

(१) हाथी, (२) बैल, (३) सिंह, (४) लक्ष्मी, (५) पुष्पमाला, (६) चन्द्रमा, (७) सूर्य, (८) ध्वजा, (९) कलश, (१०) पद्मसरोवर, (११) समुद्र, (१२) विमान या भवन, (१३) रत्नराशि, (१४) निर्धूम-अग्नि ।

वासुदेव की माता इन चौदह महास्वप्नों में से कोई भी सात स्वप्न देखती हैं। बलदेव की माता चार और माण्डलिक राजा तथा भावितआत्मा-अनगार की माता एक स्वप्न देखती हैं।

४. **स्वप्न के प्रकार—**

पंचविहे सुविणदंसणे पण्णत्ते, तं जहा—अहातच्चे पयाणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तादंसणे ।

—**भगवती** १६।६

(१) **यथातथ्यस्वप्न**—स्वप्न में जो वस्तु देखी है, जागने पर उसी का दृष्टिगोचर होना या उसके अनुरूप शुभ-अशुभ फल की प्राप्ति होना यथातथ्य स्वप्न-दर्शन है।

(२) **प्रतानस्वप्न**—विस्तार युक्त स्वप्न देखना प्रतानस्वप्न-दर्शन है। यह यथार्थ-अयथार्थ दोनों ही प्रकार का हो सकता है।

(३) **चिन्तास्वप्न**—जागते समय जिस वस्तु का चिन्तन रहा हो, उसी वस्तु को स्वप्न में देखना चिन्तास्वप्न-दर्शन है।

(४) **तद्विपरीतस्वप्न**—स्वप्न में जो वस्तु देखी है, जागने पर उससे विपरीत वस्तु की प्राप्ति होना तद्विपरीतस्वप्न-दर्शन है।

(५) **अव्यक्तस्वप्न**—स्वप्न में देखी हुई वस्तु का स्पष्ट रूप से ज्ञान न होना अव्यक्तस्वप्न-दर्शन है।

५. नौ प्रकार के स्वप्न—

अनुभूतः श्रुतो दृष्टः, प्रकृतेश्च विकारजः।
स्वभावतः समुद्भूतः, चिन्तासन्ततिसंभवः ॥१॥
देवताद्युपदेशात्थो, धर्म-कर्मप्रभावजः।
पापोद्रेकसमुत्थश्च, स्वप्नः स्यान्नवधा नृणाम् ॥२॥
प्रकारैरादिमैः षड्भि-रशुभश्चशुभोपि वा।
दृष्टो निरर्थकः स्वप्नः, सत्यस्तु त्रिभिरुत्तरैः ॥३॥

—**स्वप्नशास्त्र**

(१) **अनुभूतस्वप्न**—इसमें पहले अनुभव की हुई वस्तु दीखती है। जैसे—स्नान, भोजन एवं विलेपन आदि का स्वप्न में दीखना।

(२) **श्रुतस्वप्न**—इसमें किसी सुनी हुई वस्तु का स्वप्न आता है। जैसे—भूत, पिशाच, राक्षस व स्वर्ग-नरक का स्वप्न में दिखाई देना।

(३) **दृष्टस्वप्न**—इसमें पहले देखी हुई वस्तु दीखती है। जैसे—देखे हुए हाथी, घोड़े, ऊँट, बैल आदि का स्वप्न में दीखना।

(४) **प्रकृतिविकारजस्वप्न**—वात-पित्त आदि किसी धातु की न्यूनाधिकता से होनेवाला शरीर का विकार **प्रकृति-विकार** कहलाता है। उक्त स्वप्न प्रकृति के विकार से उत्पन्न होता है। जैसे—वात-विकृतिवाला व्यक्ति पर्वत या वृक्षादिक पर चढ़ना, आकाश में उड़ना आदि स्वप्न में देखता है,

पित्त-प्रकोपवाला जल, फूल, अनाज, जवाहिरात, लाल-पीले रंग की चीजें या बाग-बगीचे आदि स्वप्न में देखता है तथा कफ की बहुलता वाला अश्व, नक्षत्र, चन्द्रमा, शुक्लपक्ष एवं नदी-तालाब-समुद्र आदि का लांघना देखता है ।

(५) **स्वाभाविकस्वप्न**—यह स्वभाव से ही उत्पन्न होता है ।

(६) **चिन्ता से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न**—इसमें पहले सोची हुई वस्तु दीखती है । जैसे—चिन्तन की हुई स्त्री का स्वप्न में दीखना ।

(७) **देवता के प्रभाव से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न**—यह किसी देवता के अनुकूल या प्रतिकूल होने पर प्रकट होता है ।

(८) **धर्मक्रिया के प्रभाव से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न**—यह धर्मक्रिया के प्रभाव से आता है और शुभ होता है ।

(९) **पाप के उदय से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न**—यह पाप के उदय से आता है और अशुभ होता है ।

प्रथम छः प्रकार से देखा हुआ स्वप्न चाहे अच्छा हो या बुरा, निरर्थक होता है । उसका कुछ फल नहीं मिलता । शेष तीन प्रकार से देखा हुआ स्वप्न सत्य होता है । उसका शुभ या अशुभ फल अवश्य मिलता है ।

६. स्वप्नों की सत्यासत्यता—

संवुडे सुविणं पासइ अहातच्चं पासइ, असंवुडे सुविणं पासइ तहा वा तं होज्जा अन्नहा वा तं होज्जा, सवुडा-संवुडे सुविणं पासइ एवं चेव ।

—**भगवती** १६।६

संवृत-महावीर भगवान के समान महान्-योगिराज जो स्वप्न देखता है, वह सत्य-सफल होता है। असंवृत-अव्रती जीव तथा संवृतासंवृत-श्रावक जो स्वप्न देखते हैं, वह सत्य-असत्य दोनों प्रकार का होता है।

७. **स्वप्नफल की अवधि—**

रात्रेश्चतुर्षु यामेषु, दृष्टः स्वप्नः फलप्रदः।
मासैर्द्वादशभिः षड्भि-स्त्रिभिरेकेन च क्रमात् ॥१॥
निशान्त्यघटिकायुग्मे, दशाहात् फलति ध्रुवम्।
दृष्टः सूर्योदये स्वप्नः, सद्यः फलति निश्चितम् ॥२॥
मालास्वप्नोऽह्निदृष्टश्च, तथाधिव्याधिसंभवः।
मलमूत्रादि पीडोत्थः, स्वप्नः स स्यान्निरर्थकः ॥३॥

—**स्वप्नशास्त्र**

स्वप्नशास्त्रियों ने स्वप्नफल का समय निश्चित करते हुए कहा है कि शुभाशुभ फल देने योग्य स्वप्न यदि रात के प्रथम प्रहर में देखा जाय तो उसका फल बारह महीनों से प्राप्त होता है। दूसरे प्रहर में दीखे तो उसका फल छः महीनों से प्राप्त होता है। तीसरे प्रहरवाले स्वप्न का फल एक महीने से मिलता है। चौथे प्रहर में दो घड़ी रात बाकी हो उस समय देखा हुआ स्वप्न दस दिनों से तथा सूर्योदय के समय देखा हुआ स्वप्न उसी समय फल दिखलाता है, लेकिन माला स्वप्न (स्वप्न में स्वप्न का तांता जुड़ जाना) दिन में देखा हुआ स्वप्न तथा आधि-व्याधि और मल-मूत्रादि की पीड़ा से उत्पन्न होनेवाला स्वप्न निरर्थक-निष्फल होता है।

८. **स्वप्नों का काम—**

१. अनुभवियों का कहना है कि स्वप्न कई तरह का काम

करते हैं। कई स्वप्न तो जागृत-अवस्था की अतृप्त-इच्छाओं को दर्शन मात्र से पूर्ण करते हैं। उनसे मिलता कुछ भी नहीं। जैसे—विवाह की उत्कट इच्छावाले व्यक्ति स्वप्न में अपना विवाह होना देखते हैं।

कई स्वप्न निकट भविष्य में होनेवाली घटनाओं की सूचना देते हैं। जैसे—कई व्यक्ति स्वप्न में खुद को व दूसरों को मरे हुए या बीमार आदि देखते हैं, फलस्वरूप स्वप्न में देखे हुए दृश्य तत्काल सत्यरूप में घटित हो जाते हैं।

कई स्वप्न आदेशरूप होते हैं। उनमें ऐसी सूचना होती है कि तू अमुक व्यापार करले, अमुक औषधि लेले या अमुक स्थान में चला जा, तुझे अवश्य लाभ होगा इत्यादि। फलस्वरूप आज्ञानुसार काम करने से निश्चित रूप से लाभ मिलता है। आदेशरूप स्वप्नों में कई बार तो केवल अदृश्य आवाज आती है एवं कई बार अपने पूर्वज या इष्टदेव भी दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

९—स्वप्न की चमत्कारी घटनाएँ—

(क) वि० सं० २०१९ गंगाशहर में राजा बाबू (तोलाराम चोपड़ा) बीमार था। स्वप्न में उसके पिता ईसरचन्द जी ने कहा—लल्लूजी ! ल्याओ वो नुस्खो लिखावो। उन्होंने सूंठ-मिरच-पीपल आदि कई चीजें कहीं। आँखें खुलीं

और राजाबाबू ने सूंठ आदि का चूर्ण बनाकर खाया एवं बीमारी मिट गई।

—राजाबाबू से श्रुत.

(ख) जयचंदलाल छाजेड़ (सरदारशहर) रात को सो रहा था। आवाज आई—उठ ! तेरी मां गिर गई ! उठकर देखा तो माताजी पेड़ियों में पड़ी हुई मिली। एक बार आवाज आई—सावधानी से उठना। तेरी खाट के नीचे बाँडी (साँप) है। बात सही निकली एवं बांडी को पकड़ा। एक दिन फिर सुनाई दिया—उठ-खड़ा हो जा ! जयचंद ने कहा—गोड़े में दर्द है, कैसे उठूँ ? अरे ! दर्द की चिन्ता मतकर उठ जा ! खड़ा हुआ तो दर्द नहीं था।

—जयचंदलाल से श्रुत

(ग) सरदारशहर में एक दिन मास्टर रामचन्द्र सो रहे थे। आवाज आई– देख कौन खड़े हैं ? देखा तो दो लाठी वाले नज़र चढ़े। फिर कहा—इधर देख ! देखा तो भीषण सांप नज़र आया। फिर कहा—तुझे इसीसे खतरा है– सावधान रहना ! इसे पकड़नेवाले ये लाठी-वाले ही हैं। कुछ दिन बाद घर से सांप निकला एवं उन्हीं लाठीवालों ने (जो गांधी-विद्या-मन्दिर में नौकर थे) पकड़ा।

—मास्टरजी से श्रुत

१०—स्वप्न रिकार्ड करनेवाली मशीन—

जापान ने एक मशीन तैयार की है, जो स्वप्न रिकार्ड किया करेगी। यह रहस्योद्घाटन टोटरी यूनिवर्सिटी के एक प्रोफेसर ने किया है। उन्होंने बताया कि स्वप्न देखते समय मनुष्य की आँख की पुतलियाँ बहुत तेजी से काम करती हैं। यह मशीन मनुष्य की आँखों और जबड़े में फिटकर दी जाती है।

—पंजाबकेशरी दैनिक ६ दिसम्बर १६७०

★

६ निद्रा के भेद

१. तमोभवा श्लेष्मसमुद्भवा च, मनः शरीरश्रमसंभवा च।
आगन्तुकी व्याध्यनुवर्तिनी च, रात्रिस्वभावप्रभवा च निद्रा॥

—**चरक-सूत्र २१।५८**

निद्रा छः प्रकार की होती है—(१) तमोभवा मरण के समय आनेवाली, (२) कफवृद्धि से आनेवाली, (३) शारीरिकश्रम से आनेवाली, (४) बिना कारण से आनेवाली। यह अरिष्ट की सूचना देती हैं,। (५) रोग के कारण से आनेवाली, (६) रात को स्वभाव से आनेवाली।

२. निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दा पयलापयला च।
तत्तो य थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायव्वा॥

—**उत्तराध्ययन ३३।५**

निद्रा के पांच भेद हैं—(१) निद्रा, (२) निद्रा-निद्रा, (३) प्रचला, (४) प्रचला-प्रचला, (५) स्त्यानगृद्धि। (स्त्यानगृद्धि-निद्रावाला नींद में हाथी के दाँत उखाड़कर ला सकता है। उसमें वासुदेव जितना बल माना गया है।)

★

७ नींद की अद्‌भुत करतूतें

१. दो शिकारी एक नदी के किनारे सो रहे थे। उनमें से एक 'बाघ आया-बाघ आया' कहता हुआ उठा एवं बाघ समझकर साथी पर छुरा चला दिया।

- एक व्यक्ति ने नींद में चीता समझकर अपनी बृद्ध माता को मार डाला। जागकर मां! मां! पुकारा तो मां मरी हुई मिली।
- एक स्त्री नींद में अपने तीनों बच्चों को मैले-कुचैले देखा। उन्हें ले जाकर पानी के होदे में नहलाने लगी एवं बीच में ही छोड़कर स्वयं आकर सो गई। प्रातः होद में तीनों की लाशें मिलीं। तीनों बच्चे सात वर्ष की उम्र से कम थे।
- एक विद्यार्थी ने मास्टर से कई जटिल सवालों के उत्तर पूछे। मास्टर कई दिन सोचता रहा। एक दिन रात को नींद में उठकर उत्तर लिख डाले। प्रातः देखा तो विस्मय का पार न रहा। क्योंकि उत्तर बिलकुल सही थे।

—नवनीत से

★

८ जागरण

१. भूत्यै जागरणम्, अभूत्यै स्वपनम् ।

—शुक्लयजुर्वेद ३।१०

जागना उन्नति का एवं सोना अवनति का कारण है।

२. यो जागारतमृचः कामयन्ते, यो जागारतमु सामानि यन्ति।
यो जागार तमयं सोम आह, तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥

— ऋग्वेद ५।४४।१४

जो जागता है ऋचाएँ-वेद के पद्यमय मन्त्र (ज्ञान) उसकी कामना करते हैं, साम-गीतमय मन्त्र (शान्ति) उसको चाहते हैं। तथा मानो ! सुख उसे कहता है कि तेरी मित्रता से मैं अच्छे घरवाला हूं।

३. नत्थि जागरतो भयं। —धम्मपद ३९

जागते हुए को भय नहीं होता।

४. न भयं चास्ति जागृतः।

जागनेवालों को कभी भय नहीं है।

५. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविः।

—सामवेद-उत्तरार्चिक ३।१।६

जागरूक व्यक्ति ही जनता की रक्षा कर सकता है।

६. जागरह ! नरा णिच्चं, जागरमाणस्स बड्ढते बुद्धी।
जो सुवति न सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो॥
सुवति सुवंतस्स सुयं, थिर-परिचितमप्पमत्तस्स॥

—निशीथभाष्य ५३०३-५३०४

—बृहत्कल्प भाष्य ३२८३-३२८४

मनुष्यों ! सदा जागते रहो, जागनेवाले की बुद्धि सदा वर्धमान रहती है। जो सोता है वह सुखी नहीं होता, जागृत रहनेवाला ही सदा सुखी रहता है। सोते हुए का श्रुत-ज्ञान सुप्त रहता है, प्रमत्त रहनेवाले का ज्ञान शंकित एवं स्खलित हो जाता है। जो अप्रमत्तभाव से जागृत रहता है, उसका ज्ञान सदा स्थिर एवं परिचित रहता है।

७. विद्यार्थी सेवकः पान्थः, क्षुधार्तो भयकातरः।
भाण्डारी प्रतिहारश्च, सप्त सुप्तान् प्रबोधयेत्॥

—चाणक्यनीति ९।६

विद्यार्थी, सेवक, अधिक भूख से पीड़ित, भय से कातर, भण्डारी द्वारपाल—ये सात यदि सोते हों तो जगा देना चाहिये।

८. अहिं नृपं च शार्दूलं, किटिं च बालकं तथा।
परश्वानं च मूर्खं च सप्त सुप्तान् न बोधयेत्॥

—चाणक्यनीति ९।७

सांप, राजा, व्याघ्र, वर्रे, बालक, दूसरे का कुत्ता और मूर्ख—ये सात सोते हों तो नहीं जगाना चाहिए।

९. तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया।

—भगवती १२।१

तीन जागरिकाएँ कहीं हैं—(१) बुद्धजागरिका, (२) अबुद्ध-जागरिका और (३) सुदर्शनजागरिका।

जागरिका अर्थात् जागरण। अरिहन्त भगवान का केवल ज्ञानमय जागरण—बुद्धजागरिका है, छद्मस्थ मुनियों की धर्मचिन्तना—अबुद्धजागरिका है और व्रतधारी श्रावक का धार्मिकचिन्तन सुदर्शनजागरिका है।

१०. निद्रा से जागने के पाँच कारण हैं—(१)शब्द, (२) स्पर्श, (३) क्षुधा, (४) निद्राक्षय और (५) स्वप्न-दर्शन।

—स्थानांग सूत्र ५।२।४३६

★

६ जागृत और सुप्त

१. सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरंति ।

—**आचारांग ३।१।१०६**

अमुनि सदा सोये हुए हैं और मुनि सदा जागृत हैं ।

२. साधु जागरतं सुत्तो ।

—**जातक ७।४१४।१४१**

साधु सोता हुआ भी जागता है ।

३. रात को जागनेवाले चार प्रकार के हैं—

(१) पहले पहर सब जागते हैं, (२) दूसरे पहर भोगी जागते हैं, (३) तीसरे पहर चोर जागते हैं, (४) चौथे पहर योगी जागते हैं ।

४. व्यवहारे सुषुप्तो यः, स जागर्त्यात्मगोचरे ।
जागर्ति व्यवहारेऽस्मिन्, स सुप्तश्चात्मगोचरे ।।

—**समाधिशतक ७८**

जो व्यवहार में सोया हुआ है, वह आत्मा के विषय में जागृत है और जो लोक-व्यवहार में जागृत है, वह आत्मा के विषय में सोया हुआ है ।

५. शेते सुखं कस्तु ? समाधिनिष्ठो ।
जागर्ति को वा ? सदऽसद्विवेकः ।। —**शंकर-प्रश्नोत्तरी ४**

सुख से कौन सोता है ? समाधिनिष्ठ व्यक्ति । जागता कौन है ? जिसमें सद्-असद् का विवेक है, वह ।

६. जानिअ तबहि जीव जग जागा।
जब सब विषय - विलास विरागा ।।

—रामचरितमानस

७. अत्थेगइयाणं जीवाणं सुत्तत्तं साहू,
अत्थेगइयाणं जीवाणं जागरियत्तं साहू।

—भगवती १२।१

अधार्मिक आत्माओं का सोते रहना अच्छा है और धर्मनिष्ठ आत्माओं का जागते रहना।

८. जागरिया धम्मीणं, आहम्मीणं च सुत्तया सेया।

—निशीथभाष्य ५३०९, बृहत्कल्पभाष्य ३३८६

धार्मिक व्यक्तियों का जागते रहना अच्छा है और अधार्मिक जनों का सोते रहना।

९. सूतां रै पाडा जणै। —राजस्थानी कहावत

१०. खावै जिती भूख र लेवै जिती नींद। ,, ,,

११. अरली टु बेड एण्ड अरली टु राइज, मेक्स ए मैन हैल्दी, वैल्दी एण्ड वाइज। —अंग्रेजी कहावत

जल्दी सोना और जल्दी उठना मनुष्य को स्वस्थ, धनी, एवं बुद्धिमान बनाता है।

१२. गाम गयो सूतो जागै। —राजस्थानी कहावत

१३. सूतां नैं जगावै पण जागतां नै कांई जगावै। ,, ,,

१४. आँख मीच र अन्धारो करै, विण रो कुण कांई करै।

—राजस्थानी कहावत

१५. जाग्या त्यांथी सवार। —गुजराती कहावत

१० चिन्ता

१. यह कैसे हुआ ? कैसा होना चाहिये या कैसे होगा ? इस प्रकार जो विचार किया जाता है, उसे चिन्ता या चिन्तन कहते हैं। चिन्तन, संकल्प, विकल्प, आदि अनेक प्रकार से होता है।

—ज्ञानप्रकाश, पृष्ठ ३०

२. कः कालः कानि मित्राणि, को देशः कौ व्ययागमौ।
कस्याहं का च मे शक्ति-रिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः॥

समय कैसा है ? मित्र कैसे हैं ? देश कैसा है ? खर्च-आमदनी कैसी हैं ? मैं किसका हूं ? और मेरी शक्ति कैसी है ? इन बातों का बार-बार चिन्तन करना चाहिये।

३. उत्तमाध्यात्मचिन्ता च, मोहचिन्ता च मध्यमा।
अधमा कामचिन्ता च, परचिन्ताधमाधमा।

—परमानन्द-पञ्चविंशति

अध्यात्मचिन्ता उत्तम है, मोह की चिन्ता मध्यम है, काम-भोग की चिन्ता अधम है और दूसरों की चिन्ता अधमाधम है।

★

११ चिन्ता से हानि

१. चिन्तया नश्यते रूपं, चिन्तया नश्यते बलम् ।
चिन्तया नश्यते ज्ञानं, व्याधिर्भवति चिन्तया ।

चिन्ता से रूप, बल और ज्ञान का नाश होता है एवं रोग की उत्पत्ति होती है ।

२. चिता चिन्ता समा प्रोक्ता, बिन्दुमात्रविशेषतः ।
चिता दहति निर्जीवं, चिन्ता सजीवमप्यहो ।

चिता और चिन्ता समान है, केवल एक बिन्दु का फर्क है । अतः चिता तो मात्र मुर्दे को जलाती है; किन्तु चिन्ता सजीव को भी भस्म कर देती है ।

३. चिन्ता, चिता से दसगुनी बड़ी है ।

४. चिन्ता जरा मनुष्याणा-मनध्वा वाजिनां जरा ।
असंभोगो जरा स्त्रीणां, वस्त्राणमातपो जरा ।

—चाणक्यनीति ४।१७

मनुष्य के लिये चिन्ता जरा (बुढ़ापा) है । घोड़ों के लिये नहीं घूमना जरा है । स्त्रियों के लिये असंभोग जरा है और वस्त्रों के लिये धूप जरा है ।

५. चिन्ता समं नास्ति शरीरशोषणम् ।

चिन्ता के समान शरीर का शोषण करनेवाली दूसरी कोई चीज नहीं है ।

६. चिन्तने नैधते चिन्ता, त्विन्धनेनैव पावकः ।

—योगवाशिष्ठ ५।२१।६

इन्धन से अग्नि की तरह अधिक सोचते रहने से चिन्ता अधिक बढ़ती है ।

७. को वाज्वरः ? प्राणभृतां हि चिन्ता ।

जीवों के शरीर में ज्वर क्या है ? चिन्ता ।

८. चिन्ते दुर्बलतास्ति किं तव सखी यत् सार्धमेवेक्षते ।
नैवं ! किन्तु ममास्ति विश्वविजयी दुःखाभिधो नन्दनः ॥
तस्यैषा रमणीति वल्लभतरा जाता मदीया स्नुषा ।
श्वश्रू भक्तिपरायणान्वहमतो नो याति दूरं क्वचित् ॥

—धनमुनि

हे चिन्ता ! क्या दुर्बलता तेरी सखी है, जो हमेशा तेरे साथ दृष्टिगोचर होती है ? नहीं-नही ! सखी नहीं है, किन्तु विश्व-विजयी दुःख नामक मेरे पुत्र की बहू है, अतः मुझे अत्यन्त प्रिय लगती है एवं सास की भक्ति में लीन होकर यह सदा मेरे साथ ही रहती है ।

★

१२ चिन्ता-निषेध

१. जातं तु जातं न पुनः प्रयाति ।

हुआ सो तो होकर चला गया, वापस कभी नहीं आता। उसकी चिन्ता करना व्यर्थ है ।

२. गोड नेवर सेन्ड्स माउथ्स वट ही सेन्ड्स मोट ।

चाँच देई सोहि चून हु देगो ।

३. मुर्दे को भी मिलत है, लकड़ी कपड़ा आग ।
जीवित हो चिन्ता करे, ताको बड़ो अभाग ।

४. जो व्यवसायी चिन्ता से लड़ना नहीं जानते, उन्हें अकाल-मृत्यु का ग्रास बनना पड़ता है ।

—**डॉ० एलेग्जी केरेल**

५. ग़मे फर्दा इमरोज न वायद खुर्द ।

—**पारसी कहावत**

कल का ग़म आज न करना ।

६. अज्ञानी सेठ आठवीं पीढ़ी की चिन्ता करता था और निस्पृह ब्राह्मण कल के भोजन को भी नहीं ।

७. गत महायुद्ध में चर्चिल को १८ घंटे काम करना पड़ता था। किसी ने पूछा इतनी जिम्मेदारियों से क्या आपको चिन्ता नहीं होती ? चर्चिल ने उत्तर दिया—मेरे पास इतना समय हो कहाँ है कि मैं चिन्ता करूँ !

८. चिन्ता को कम करने के लिये इन चार प्रश्नों पर विचार कीजिये—समस्या क्या है ? समस्या का हेतु क्या है ? समस्या के सभी संभाव्य साधन क्या हैं और सर्वोत्तम समाधान क्या है ? —**डेलकारनेगी**

९. सोचिअ गृही जो मोहवस, करहि करमपथ त्याग।
सोचिअ जती प्रपंचरत, विगत विवेक विराग।
—**रामचरितमानस**

१०. क्या तवंगर क्या गुनी, क्या पीर और क्या बालका।
सबके दिल में फिक्र है, दिन-रात आटे दालका।
—**उर्दू शेर**

११. चीनी शासक, हिटलर तथा स्पेन के शासक कैदियों को कष्ट देने के लिए उनके हाथ-पैर बाँध कर उन्हें निरन्तर पानी टपकनेवाले घड़े के नीचे बिठा देते। रात-दिन उन पर पानी टपका करता। आखिर वे पानी की बूँदें हथोड़े का काम करने लगतीं एवं अपराधी पागल हो जाते। चिन्ता भी निरन्तर टपकनेवाली पानी की बूँदों के समान पागल बनाने वाली है। —**डेलकारनेगी**

१२. जर्मनी-पराजय के बाद वहाँ के लोग बीमार होने लगे। कारण वे सोते समय सोचा करते थे कि कल रोटी मिलेगी या नहीं ? अभिभावकों ने उन्हें अगले दिन की रोटी देनी शुरू की, वे ठीक होने लगे।

—**मेगज़ीन डाइजेस्ट जून १९४८**

★

१३ शोक

१. इष्टवियोगमूलाः शोकाः ।

शोक का मूल कारण इष्टवस्तु का वियोग है ।

२. शोको नाशयते धैर्यं, शोको नाशयते श्रुतम् ।
शोको नाशयते सर्वं, नास्ति शोकसमो रिपुः ।

—वाल्मीकिरामायण २।६२।२५

शोक धर्म का नाश करता है, शोक पढ़ी हुई विद्या का नाश करता है, और शोक सब गुणों का नाश करनेवाला है, शोक के समान दूसरा कोई दुश्मन नहीं है ।

३. क्लोड्स हैट दि सन वाईन्ड्स । **—अंग्रेजी कहावत**

कभी-कभी सूर्य भी बादलों से ढंक जाता है अर्थात् बड़ों को भी संकट से गुजरना पड़ता है । फिर शोक क्यों ?

४. क्व जपः क्व तपः क्व सुखं क्व शमः,
क्व यमः क्व दमः क्व समाधिविधिः ।
क्व धनं क्व वनं क्व बलं क्व गुणो,
बत ! शोकवशस्य नरस्य भवेत् ।
न धृतिर्न मतिर्न गतिर्न रति,
र्न यतिर्न नतिर्न नुतिर्न रुचिः ।
पुरुषस्य गतस्य हि शोकवशं,
व्ययमेति सुखं सकलं सहसा ।।

—सुभाषितरत्नसंदोह

शोकग्रस्त मनुष्य के पास जप, तप, सुख, शम, यम, दम, समाधि, धन, बन, बल, एवं गुण कहाँ ! अर्थात् शोक में निमग्न होनेपर मनुष्य से सभी सुख चले जाते हैं। उसके पास धृति, बुद्धि आदि कोई भी गुण नहीं रहते।

५. शोकस्थानसहस्राणि, भयस्थानशतानि च।
दिवसे-दिवसे मूढ-माविशन्ति न पण्डितम्।

—**हितोपदेश १।२**

हजारों शोक के स्थान हैं और सैंकड़ों भय के स्थान हैं किन्तु वे प्रतिदिन मूर्ख को ही दुःख देते है, पण्डित को नहीं।

६. अन्योऽहं स्वजनात्, परिजनाद्विभवाच्छरीरकाच्चेति।
यस्य नियतामतिरियं, न बाधते तंहि शोककलिः॥

मैं स्वजनों, परिजनों एवं शरीर से भिन्न हूं। जिसकी निश्चित रूप से ऐसी बुद्धि हो गई है, उसे शोकरूप कलियुग पीड़ा नहीं दे सकता।

★

१४ शोक-निषेध

१. अनवाप्यं च शोकेन, शरीरं चोपतप्यते।
अमित्राश्च प्रहृष्यन्ति, मास्म शोके मनःकृथाः ॥

शोक करने से इच्छित वस्तु नहीं मिलती, शरीर नष्ट होता है और शत्रु प्रसन्न होते हैं अतः मन में शोक मत करो।

२. नाऽभ्रम भूमिपतयः कति नाम वारान्,
वारानभूम कति नाम वयं न कीटाः।
तत्संपदां च विपदां च न कोपि पात्र-
मेकान्ततस्तदलमङ्ग! मुदा शुचा वा।

—चन्दचरित्र पृ० ७५

हम अनेक बार राजा हो गये और अनेक बार कीड़े हो गये। एकान्त रूप से न तो कोई संपत्ति का पात्र है एवं न कोई विपत्ति का पात्र, अतः सुख-दुःख के समय हमें हर्ष-शोक से बचते रहना चाहिए।

३. न त्वं नाहं नायं लोक-स्तदपि किमर्थं क्रियते शोकः।

—मोहमुद्गर

न तू है, न मैं हूं, न यह लोक है, फिर शोक किसलिए?

४. एकवृक्षसमारूढ़ा, नानावर्णा विहंगमाः।
प्रभाते दिक्षु दशसु, का तत्र परिदेवना।

— चाणक्यनीति १०।१५

नाना प्रकार के पक्षी रात में एक वृक्ष पर बैठते हैं। यदि प्रातःसमय वे दसों दिशाओं में उड़ जाते हैं तो उनका क्या शोक !

५. च्युअंगत्सी (ताओ का मुख्य शिष्य था) की धर्मपत्नी मरी; "हुइत्से" मिलने गया। वह गा-बजा रहा था। पूछने पर बोला—ऋतुओं की तरह चोला बदलता है, इसमें रोने की क्या बात है।

६. पञ्चभिर्निर्मिते देहे, पञ्चत्वं च पुनर्गते।
स्वां-स्वां योनिमनुप्राप्ते, का तत्र परिदेवना ?

—**हितोपदेश** ४।७४

पांच तत्त्वों से बना हुआ शरीर यदि पुनः पांचों तत्त्वों में चला गया एवं अपनी-अपनी योनि में मिल गया तो फिर उसका क्या शोक ?

७. गते शोको न कर्त्तव्यो, भविष्यं-नैव चिन्तयेत्।
वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः॥

—**चाणक्यनीति** १३।२

भूतकाल का शोक एवं भविष्यत्काल की चिन्ता नहीं करनी चाहिए; क्योंकि वर्तमानजाल के अनुसार प्रवृत्ति करनेवाले मनुष्य ही विचक्षण होते हैं।

८. भविष्यं नानुसंधत्ते, नातीतं चिन्तयत्यसौ।
वर्तमाननिमेषं तु, हसन्नेवानुवर्तते॥

—**योगवाशिष्ठ** ५।१२।१४

वे (जीवन्मुक्त जनक राजा) भविष्य का अनुसंधान नहीं करते, अतीत की चिन्ता नहीं करते किन्तु हँसते हुए वर्तमान का ही अनुसरण करते हैं।

९. Late by Gone be by Gone.

लेट बाई गॉन बी बाइ गॉन। —अंग्रेजी कहावत

◆ गतस्य शोचना नास्ति। —संस्कृत कहावत

बीते हुए की चिंता नहीं करना चाहिए।

१०. वर्तमान के तार से, होता पटनिर्माण।
तार सूक्ष्म या स्थूल है, "चन्दन" रखिए ध्यान।

—तात्त्विकत्रिशती ९२

११. जो होना था वह हुआ, खैर!
अब भी मौका है सम्भल चलो।
क्या हुआ भोर के भटके हो,
अब भी संध्या है लौट चलो।

—भरत व्यास

१२. उनके प्रति शोक प्रकट करो जो भले को बुरा और बुरे को भला समझते हैं।

—बाइबिल

★

१५ घृणा

१. हमारे हृदय का पागलपन ही घृणा है। —बायरन
२. घृणा मनुष्य का मौलिक पाप है। —जर्मनलोकोक्ति
३. घृणा करना शैतान का कार्य है, क्षमा करना मनुष्य का धर्म है और प्रेम करना देवता का गुण है। —भर्तृहरि
४. अधिक घनिष्ठता ही घृणा की जन्मदात्री है।
५. प्रेम द्वारा घृणा पर विजय हो सकती है, किन्तु घृणा द्वारा कभी नहीं। —गांधी

घृणा-निषेध—

१. व्यक्तियों के दुर्गणों से घृणा करो, व्यक्तियों से नहीं।
—जे० पी० सी० वर्नार्ड
२. तीन से घृणा न करो—(१) रोगी से, (२) आर्त से और (३) नीची जाति वालों से।
तीन से घृणा करो—(१) पाप से, (२) अभिमान से और (३) मन की मलिनता से। —'तीन बात' पुस्तक से
३. दूसरों से घृणा करनेवाला स्वयं पतित हुए बिना नहीं रहता। —विवेकानन्द
४. जो अपने वन्धुओं से घृणा करता है, वह अपराधी है। —बाइबिल
५. किसी व्यक्ति के प्रति लम्बे अर्से तक गुप्त घृणा रखने से एग्जीमा, दमा, हाईब्लडप्रेसर या दृष्टिदोष हो जाते हैं। —अमेरिका की रीड मेगजीन; अगस्त १९४५ से

★

१६ रोदन

१. रोना मोहकर्म का उदय है । —जैनसिद्धान्तदीपिका

२. वलं मूर्खस्य मौनित्वं, बालानां रोदनं बलम् ।

मूर्खों का बल मौनी बनना एवं बालकों का बल रोना है ।

३. रोना हो तो भगवान के सामने दिल खोलकर रो लो, ताकि फिर कभी रोना न पड़े । —धनमुनि

४. न मृतेषु रोदितव्यमश्रुपातसमा हि किल पतन्ति तेषां हृदयेष्वङ्गारा । —नीतिवाक्यामृत २६।२६

बन्धुओं के स्वर्गवास होनेपर विवेकी मनुष्य को रुदन छोड़कर सबसे पहले उनका दाहसंस्कार करना चाहिए, इसके विपरीत जो रोते हैं, वे उनके अग्नि-संस्कार में विलम्ब करने से उल्टा उन्हें कष्ट पहुँचाते हैं । अतः रोनेवालों के नेत्र से निकलनेवाला आंसू-प्रवाह मानो मृत-पुरुषों के हृदय पर गिरनेवाले अङ्गारे ही हैं ।

५. मृतकों के पीछे दुःखवश रोना हृदय की दुर्बलता है, किन्तु लोगों को दिखाने के लिए रोना महान अज्ञान है ।

—धनमुनि

६. कहा कहुं कुछ कहा न जाय, कहे बिना भी रहा ना जाय ।
मेरी सब मनकी मनमें रह गई साठ गांव बकरी चरगई ।

७. रोयां किसो राज मिलै । —राजस्थानी कहावत

८. व्यस्त व्यक्तियों के पास रोने के लिये समय नहीं होता।

—बायरन

९. मियां जी रोते क्यों हों ? खुदा ने शक्ल ऐसी ही बनाई है।

१०. सांप का काटा सोवे और बिच्छु का काटा रोवे।

—हिन्दी कहावतें

११. हिणो जुड़ै ढोठ रै साथ, भैंस चरै गायां रै साथ।
सुसरो जी में बहू रै हाथ, ए तीनूं कूकै आधीरात ॥

१२. लाल बही छप्पन रै पानै, सेठजी रौवै छाने-छाने।

—राजस्थानी कहावतें

१३. डूमणी रै रोवणै मैं ही राग। ,, ,,

१४. Cheap Goods are deer in the long run.
चीप गुड्स आर डियर इन दि लोंग रन।

—अंग्रेजी कहावत

◆ मूंघो रोवै एकबार, सूंघो रोवे बारबार।

—हिन्दी कहावत

१५. आप ही मारै र आप ही रोवै।

१६. रोतो जावै जिको मर्यां री सुणावणी लावै।

१७. मारै र रोवण को देवैनी।

—राजस्थानी कहावतें

१८. **देखे जा और रोयेजा—**
चक्की की म्यानी टूटी, जाटनी ने सुथार (जिससे कुछ अनबन थी) को कह सुनकर बुलाया, खुद पानी भरने

गई। सुथार ने म्यानी को ठीक करने के लिए हथौड़ा मारा, चक्की फूटी। डरकर खड़ा हुआ तो उसके सिरसे टकराकर छीके पर से गिरकर घी की पारी फूटी एवं वह दूध की कढ़ावणी पर गिरने से वह भी फूटी। भागते समय टैंची में धोती अड़ी उससे पानी के घड़े फूटे। सामने आती हुई जाटनी मिली। वीरा! खा के जा! यों कहते ही धक्का मारा, घड़े गिरे, जाटनी रोई। सुथार ने कहा अभी क्या रोती है? "आगे देखेजा और रोएजा!"

★

१७ आँसू

१. तीन आंसू पवित्र हैं—(१) प्रेम के, (२) करुणा के और (३) सहानुभूति के।

२. तीन आंसू अपवित्र है—(१) शोक के, (२) क्रोध के और (३) दम्भ के।

३. करुणा के आंसू दुःख की सांत्वना है, पश्चात्ताप के आंसू हृदय की शुद्धि है, शोक के आंसू हृदय की पुकार है और हर्ष के आंसू कृतज्ञता की दौड़ है।

४. एक चम्मच आंसू से ५ सेर पानी खारा हो जाता है और १०० गैलन पानी के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। आंसू आंखों को कीटाणुओं से बचाकर साफ रखते हैं। आंसू निकलने से हृदय हल्का हो जाता है एवं उन्हें रोकने से बीमारी उत्पन्न हो जाती है। मिस्र में बहुत पहले यह प्रथा थी कि स्त्रियां अपने आसुओं को एक बोतल में एकत्रित करती थीं और मरने के बाद वह बोतल उनके शव के साथ रख दी जाती थी। सोलहवीं शताब्दी तक कुछ देशों की स्त्रियां पति के विरहकाल में इकट्ठे किए हुए आंसू पति के मिलने पर उन्हें भेंट में देती थीं।

—नवभारत टाइम्स २९ नवम्बर १९७०

★

भय

१. भय सदा अज्ञानता से उत्पन्न होता है। —इमर्सन

२. शक्तिक्षय होने का एक बहुत बड़ा कारण है—भय।
—कवि माघ

३. चार कारणों से भय उत्पन्न होता है—(१) शक्ति हीन होने से, (२) भयमोहनीय कर्म के उदय से, (३) भय की बात सुनने से एवं भयानक दृश्य देखने से, (४) भय के कारणों को याद करने से। —स्थानांग ४।४।३५६

४. मरणसमं नत्थि भयं।

मृत्यु के समान दूसरा कोई भी भय नहीं है।

५. मार आगे भूत भागै। —राजस्थानी कहावत

६. **मरने के भय से खाना पीना छूटा**—बादशाह अधिक मोटा-ताजा था। हलका होने के लिये हकीमों से दवा मांगी। उन्होंने गरिष्ठ भोजन छोड़ने को कहा। यह बात बादशाह को न जँची। पूछने पर लुकमान हकीम ने कहा—आप चालीस दिन में मर जायेंगे। बादशाह भयभ्रान्त हुआ, खानपान छूटा। चालीस दिनों में बिलकुल हल्का हो गया। फिर लुकमान ने हल्का भोजन करने के लिये कहा एवं बादशाह ने माना।

७. पर्वतानां भयं वज्रात्-पादपानां भयं वातात् ।

पर्वतों को वज्र का भय है और वृक्षों को वायु का भय है ।

८. सत्त भयट्ठाणे पणत्ते, तं जहा—इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, वेयणाभए, मरणभए, असिलोगभए । —स्थानांग ७।५४९

सात प्रकार के भय हैं—(१) इहलोक-भय (सजातीय से जैसे—मनुष्य को मनुष्य से भय,) (२) परलोक-भय (विजातीय से जैसे—मनुष्य को तिर्यञ्च से भय), (३) आदान-भय (चोर आदि धन ले जायेंगे, ऐसा भय उत्पन्न होना), (४) अकस्मात्-भय (कारण बिना ही रात्रि आदि के समय डर लगना), (५) वेदना-भय (पीड़ा के समय होनेवाला भय). (६) मरण-भय, (७) अश्लोक-भय (अपयश का भय) ।

९. उत्थायोत्थाय बोद्धव्यं, महद्भयमुपस्थितम् ।
मरणव्याधि-शोकानां, किमद्य निपतिष्यति ॥

—हितोपदेश १।३

प्रातः उठते ही सोचो ! आज बड़ा भारी भय आनेवाला है । मरण, रोग एवं शोक में से क्या पता आज कौनसा आ जाये ?

१०. तावद्भयेषु भेतव्यं, यावद् भयमनागतम् ।
आगतं तु भयं दृष्ट्वा, प्रहर्तव्यमशङ्कया ।

—चाणक्यनीति ५।३

जब तक भय निकट न आया हो, तब तक उससे डरना चाहिये; किन्तु आ जाने के बाद निःशंक होकर उस पर प्रहार करना चाहिए ।

११. मूर्ख मनुष्य भय से पहले डरता है, कायर भय के समय डरता है और साहसी भय के बाद डरता है । —रिशर

★

१६ भय आवश्यक

१. कुतो हि भीतिः सततं विधेया ?
लोकापवादाद्भवकाननाच्च । —**शंकरप्रश्नोत्तरी २६**

सदा किससे डरना चाहिए ? लोकनिन्दा और भव-कानन—
इन दोनों से डरना चाहिए ।

२. राजा जोगो अगन जल, इनकी उल्टी रीति ।
डरता रहिये परसराम, ये, थोड़ी पालै प्रीत ।।

—**परसराम**

३. हरडर गुरुडर गामडर, डर करणी में सार ।
तुलसी डर्‌या सो ऊबर्‌या, गाफिल खाई मार ।।

—**तुलसीदास**

४. ईश्वर का भय ही ज्ञान का उदय है । —**बाइबिल**

५. भय बिनु भाव न उपजे, भय बिन प्रीति न होय ।
जब हृदय तें भय गया, निर्भय होय न कोय ।।

६. भय तें भक्ति सब करे, भय तें पूजा होय ।
भय पारस है जीव को, निर्भय होय न कोय ।

—**कबीर**

★

अभयदाता

१. अभयदाया भवाहि य ! —उत्तराध्ययन १८।११

अभयदान देनेवाले बनो ।

२. अभयं सर्वभूतेभ्यो यो ददाति दयापरः ।
अभयं तस्य भूतानि ददतीत्यनुशुश्रुमः ॥

—महाभारत अनुशासनपर्व ११६।३

जो दयापरायण पुरुष संपूर्ण भूतों को अभयदान देता है, उसे भी सब प्राणी अभयदान देते हैं—ऐसा हमने सुन रखा है ।

३. यस्मादण्वपि भूतानां, द्विजान्नोत्पद्यते भयम् ।
तस्य देहाद्विमुक्तस्य, भयं नास्ति कुतश्चन ॥

—मनुस्मृति ६।४०

जिस ब्राह्मण से जीवों को थोड़ा भी भय नहीं होता, वर्तमान शरीर को छोड़ने के बाद (परभव में) उसे कहीं भी भय नहीं होता ।

४. उसको भय किस बात का, जिसका सही हिसाब ।
सत्पुरुषों की जीवनी, "चन्दन" खुली किताब ॥

—तात्त्विकत्रिशती २२५

५. पुत्रैषणा वित्तैषणा लोकैषणा मया परित्यक्ता, मत्तः सर्वभूतेभ्योऽभयमस्तु ।

—"वैदिकधर्म क्या कहता है;" से, भाग २ पृ० १५

मैंने पुत्रैषणा, वित्तैषणा और लोकैषणा का त्यागकर दिया है। मेरी ओर से सब जीवों को अभय हो।

६. अभयं मित्रादऽभयममित्राद्, अभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।

—**अथर्ववेद १९।१५।५**

हम न तो मित्रों से डरें, न शत्रुओं से डरें, न परिचितों से डरें और न अपरिचितों से डरें, अर्थात् सर्वत्र निर्भय बनें।

७. जो दूसरों को डराता है, वही दूसरों से डरता है।

—**गांधी**

★

२१ भयभीत

१. ण भाइयव्वं भीतं खु भया अइंति लहुयं।

—**प्रश्नव्याकरण २।२**

भय से डरना नहीं चाहिए, भयभीत मनुष्य के पास भय शीघ्र आते हैं।

२. भयसंत्रस्तमनसां, हस्तपादादिका क्रियाः।
प्रवर्तन्ते न वाणी च, वेपथुश्चाधिको भवेत्॥

भयभ्रान्त व्यक्तियों की जिह्वा और हाथ-पैर आदि अवयवों की क्रियाएँ बन्द हो जाती हैं तथा कम्पन अधिक होता है।

३. भीतो भूतेहिं घिप्पइ। —**प्रश्नव्याकरण २।२**

भयाकुल व्यक्ति ही भूतों का शिकार होता है।

४. भीतो अण्णं मिहु भेसेज्जा। —**प्रश्नव्याकरण २।२**

स्वयं डरा हुआ व्यक्ति दूसरों को भी डरा देता है।

५. भीतो तवसंजमं पिहु मुएज्जा।
भीतो य भरं न नित्थरेज्जा॥ —**प्रश्नव्याकरण २।२**

भयभीत व्यक्ति तप और संयम की साधना छोड़ बैठता है। भयभीत किसी भी गुरुतर दायित्व को नहीं निभा सकता।

६. भीतो अबितिज्जओ मणुस्सो। —**प्रश्नव्याकरण २।२**

भयभीत मनुष्य किसी का सहायक नहीं हो सकता।

★

२२ भयसम्बन्धी कहावतें

१. माथारी पाघड़ी बगल में लिया पछै कांई डर !

२. ऊँखली में माथो दियां पछै मूसल रो कांई डर !

३. कान खुश र हाथ में आग्या ।

४. ऊपरला दान्त ऊपर रहग्या र नीचला नीचे रहग्या ।

५. मातो देख र डरणों नहीं, पतलो देख र अडणों नहीं ।

—राजस्थानी कहावतें

६. The Burtn Child Drersed the Fire.
दि बर्न्ट चाइल्ड ड्रेड्स दि फायर।

—अंग्रेजी कहावत

दूध का जला छाछ फूंककर पीता है ।

★

२३ भयसम्बन्धी दृष्टान्त

१. बगदाद में महामारी का उपद्रव हुआ। पच्चास हजार मनुष्य मरे। उनमें महामारी ने तो केवल पांच हजार मनुष्य ही मारे थे, पैंतालीस हजार मनुष्य तो उसके भय से ही मर गये।

२. एक स्त्री स्वप्न में सारा समुद्र पी गई। जागने पर भयभीत होकर मर गई।

३. **सांप के भय से मृत्यु**—बिहार-प्रान्त में छप्पर बांधते समय एक मनुष्य को सांप ने काटा। कांटा समझा, कुछ नहीं हुआ। एक साल बाद छप्पर को बदलते समय मृत-सांप का कलेवर देखा। पिछली बात याद आगई एवं भयभ्रान्त होकर मर गया। इसी प्रकार छाछ (मठ्ठा) में सांप आ जाने से बारह वर्ष बाद जहर चढ़ा, फलस्वरूप चार व्यक्तियों के प्राण चले गए।

४. एक आदमी "मैं दांतों का चौका निगल गया" ऐसा भय होने से बीमार हो गया, फिर चौका मिलने से ठीक हुआ।

५. महाजन डाकू पकड़ने गये। रात को जंगल में सोये।

डाकुओं के भय से खिसक कर पहला आदमी सबसे पीछे जाकर सो गया। बस एक के बाद एक खिसकते गए, अन्त में पहला, पहला ही रह गया।

६. **भय से चोरी छूटी**—बच्चे ने बाप की जेब में से एक पैसा चुराकर जामुन खाये, मुँह लाल हुआ। भयभीत होकर मुंह बन्दकर लिया, बुलाने पर भी न बोला। डॉक्टर के आते ही रोने लगा और उसी दिन से चोरी छोड़ दी।

★

२४ हास्य

१. हास्य वह यन्त्रांश है, जिसके अभाव में यन्त्र बिगड जाता है। —रामतीर्थ

२. मैन इज ए लाफिंग् एनीमल। —ग्रेबिल

मनुष्य ही एक ऐसा जीव है, जो हास्य-शक्ति से सम्पन्न है।

३. मनुष्यों को सन्तापों की दाहक-अग्नि में इतना झुलसना पड़ा है कि वाध्य होकर उसको हास्य का निर्माण करना पड़ा। —नीत्से

४. सच्चा हास्य तोप के गोले की तरह छूटता है। इसके चार कारण हैं—(१) वाक्चातुर्य, (२) मस्खरी, (३) विचित्र घटना, (४) दूसरों की मूर्खता।

५. हास्य उत्पत्ति के चार कारण हैं—

(१) **दर्शन**—विदूषक आदि को देखने से।

(२) **भाषण**—हास्य पैदा करनेवाले वचन कहने से।

(३) **श्रवण**—हास्य की बात सुनने से।

(४) **स्मरण**—हास्य के योग्य कोई बात या चेष्टा याद आने से।

६. उत्तम आँखों से, मध्यम होठों से और सामान्य मनुष्य दाँतों से हँसता है।

७. बार-बार और जोर से हँसना मूर्खता और बदतमोजी की निशानी है। —**चेस्टर फील्ड**

८. सबसे सुन्दर हास्य उसका है जो अन्त तक हँसता रहे। —**अंग्रेजी लोकोक्ति**

९. रोज एक बार तो कम से कम खिलखिलाकर हँसना ही चाहिए। —**एक अनुभवी**

१०. हास्य के समय रोम पुलकित होते हैं, दुःखों का विस्मरण होता है, खून में नया चैतन्य आता है, शरीर और मन में निरोगता का संचार होता है, पेट और छाती के बीच हलन-चलन होती है, होठों की स्नायुओं में गति उत्पन्न होती है, आँखों में चमकार और कंठों में रसपूर्ण रणकार प्रकट होता है।

११. तुम हँसोगे तो संसार हँस पड़ेगा, किन्तु रोते समय तुम्हें अकेले ही रोना पड़ेगा; क्योंकि मर्त्यलोक हास्य का ही इच्छुक है, रुदन तो इसके पास अपना ही पर्याप्त है। —**बिलकाक्स**

★

२५ हास्य-निषेध

१. सव्वं हासं परिच्चज्ज, अल्लीणगुत्तो परिव्वए।

—आचारांग ३।२

साधक सर्वप्रकार के कुतूहल को छोड़कर तीनों योगों का गोपन करके संयम में विचरे।

२. सप्पहासं विवज्जए। —दशवैकालिक ८।४२

अतिहास को त्याग देना चाहिए।

३. हँसिये नहीं गिवार, हँसियां हलकाइ हुवै।
हँसियां दोष अपार, गुण जावै गहलो कहै।।

४. शाह तो झगड़ै सूं बिगड़ै, बिगड़ै ठाकर ब्याजड़ियो।
घर-घर फिरती नार बिगड़ै, बिगड़ै जोगी हाँसड़ियो।।

५. एसोसीस नामक एक चित्रकार अपना चित्र देखकर इतना हंसा कि उसके प्राण ही निकल गये।

★

२६ उपहास-मज़ाक-विनोद

१. मज़ाक हृदय की शान्ति है। —डी० जेरोल्ड

२. अच्छा मज़ाक एक उत्तम पोशाक है, जो समाज में पहना जा सकता है। —थैंकरे

३. अच्छा मज़ाक आत्मा का स्वास्थ्य है और चिन्ता ज़हर है। — स्टैनिलस

४. जब मज़ाकिया स्वयं हँस पड़ता है तो मज़ाक का सभी लुत्फ चला जाता है। —शिलर

५. थट्टा आधी करूं नये, मग बोम मारूं नये।

—मराठी कहावत

मसखरी भी कर लेते हैं और बुरी-भली सुनकर गुस्से भी हो जाते हैं—'उनके लिए।'

६. एक मसखरी सौ गाल। —राजस्थानी कहावत

७. सुगनचन्द चोरड़िया को लोगों ने होली की गोठ करने को कहा। उन्होंने स्वीकृति दे दी, आदमी हो गए पच्चास। शोभाचन्दजी पटावरी से चोरड़ियाजी ने कहा— "मैं कुछ रसगुल्ले लेकर आता हूं" आप लोग बगीचे में चलिये। ऐसे कहकर वे अपनी गद्दी में आगए और सिरपर शाक का पल्ला लेकर बैठ गए। लोग बगीचे में खूब भटके,

आखिर हैरान होकर वापस आए एवं शोक का पल्ला देखकर पूछने लगे यह क्या हुआ ? उन्होंने कहा—दादी मर गई। लोग बोले अरे भला आदमी ! उसको तो मरे चालीस वर्ष हो गए। सुगनचन्द ने कहा—जब तो मैं बालक था। लोग हँस पड़े।

८. एक बार मोतीलाल नेहरू को जुकाम हो गया। दोस्तों ने पूछा—जुकाम कैसे हो गया ? उन्होंने हँसकर कहा—गाँधी जी के राज्य में जुकाम रह ही नहीं सकता। क्योंकि खद्दर से साफ करते-करते जब नाक ही न रहेगी तो फिर जुकाम कहां से रहेगा ? सुनकर सभी हँसने लगे।

९. विनोद बहुत गम्भीर वस्तु है। —**चर्चिल**

१०. विनोद बातचीत का नमक है, भोजन नहीं।

—**हैजलिट**

११. विनोद एक कला है; गाली-गलौज बला है और सच्चा कलाकार विनोदी होता है।

१२. विनोद का उपयोग रक्षा करने के लिये होना चाहिये। उसे दूसरों को घायल करने के लिए तलवार न बनाना चाहिये। —**फुलर**

★

२७ उपहासनिषेध

१. न यावि पन्ने परिहास कुज्जा । —**सूत्रकृतांग १४।१६**

अपने आपको अधिक विद्वान् समझकर दूसरों का उपहास नहीं करना चाहिये ।

२. लंछन चन्द में, ताप दिनन्द में,
चन्दन माहँ फणिन्द को वासो ।
पण्डित निर्धन है जु धनी शठ,
नार महाहठ को घरवासो ।
हेम हिमाचल खारो है वारिधि,
केतकी कण्टक-कोटि को वासो ।
देखो 'धरम्मसी' है सब कूं दुःख,
कोई करो मत काहु को हासो ।

३. बड़ों का कभी मजाक मत उड़ाओ । वे तुम्हारे आदर के पात्र हैं । —**पहेलवी टैक्स्ट्स, (पारसी-धर्मग्रन्थ से)**

४. रोग रो मूल खाँसी, कलह रो मूल हाँसी ।

५. हाँसी में वगासी होय जावै ।

६. पराई हाँसी गुड़ से भी मीठी ।

—**राजस्थानी कहावतें**

७. दूसरों पर हँसना आसान है, परन्तु मुश्किल है अपने पर हँसना। जो अपने पर हँस सकता है, वही ज्ञानी एवं बुद्धिमान है।

—एला व्हीलर

८. यदि चूहा बिल्ली का उपहास करे तो समझना चाहिए कि पास कोई बिल भी होगा।

—अंग्रेजी कहावत

९. कुछ व्यक्तियों का स्वभाव होता है कि स्वयं जो कार्य करते हैं, उसे दूसरों को करता देखकर उपहास करने लगते हैं।

१०. **रावण-अंगदसम्वाद**—

अंगद तुही बालि कर बालक, उपजेउ बंस अनल कुलघालक।
गर्भ न गयो वृथा तुम जायो, निज मुख तापस दूत कहायो॥

हम कुलघालक सत्य तुम, कुलपालक दससीस।
अंधौ-बधिर न कहहिं अस, श्रवन नयन तौ बीस॥

—रामचरितमानस

★

लज्जा

१. लज्जा-दया-संजम-बंभचेरं,

कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं। —**दशवैकालिक ९।१।१३**

कल्याण चाहनेवाले के लिए लज्जा, दया, संयम और ब्रह्मचर्य —ये आत्म-विशुद्धि के साधन है।

२. सच्ची सुन्दरता के लिये लज्जा आवश्यक है।

—**यूनानी कहावत**

३. सिकन्दर के गुरु **एरिस्टोटल** की लड़की **पोथिया** ने गालों पर लगाने के रंगों में लज्जा को सर्वश्रेष्ठ कहा।

४. दुकानदारी नरम की, हाकमी गरम की।

साहूकारी भरम की, बहू-बेटी शरम की ॥

५. आपरी लाज आप रै हाथ में, आपरो कायदो आप रै हाथ में।

६. आप री जांघ उघाड़ै तो आप ही लाज मरै।

७. आंख्यां हुई चार, जी में आया प्यार,

आंखे आई ओट, जी में आया खोट।

—**राजस्थानी कहावतें ४ से ७ तक**

८. आउट ऑफ साइट, आउट ऑफ माइंड।

—**अंग्रेजी कहावत**

आँख से ओझल, मन से बाहर।

९. काजी री कुत्ती मरी जद सगला बैठण गया अनैं काजी जी मर्‌या जद कोई को गयो नी। —**राजस्थानी कहावत**

१०. ओलख्यां पछी नव गज नां नमस्कार। —**गुजराती कहावत**

११. नोची करी नाड़ माथा सुधी बाड़। —**राजस्थानी कहावत**

१२. मों खाय नै आँख लाजै।

१३. कोलिया नुं मार्‌युं नीचुं जुए,
ने डांग नुं मार्‌युं ऊंचुं जुए।
कड़छी नुं मार्‌युं नीचुं जुए,
ने वरछी नुं मार्‌युं ऊँचुं जुए।

१४. शोख नें अने शरम ने बने नहीं।

१५. छास लेवा जावुं ने दोहणी संताडवी।

—**गुजराती कहावतें**

१६. सलज्जा गणिका नष्टा, निर्लज्जाश्च कुलाङ्गनाः।

— **चाणक्यनीति ८।१८**

लज्जावाली वेश्याएँ और निर्लज्ज कुलांगनाएं नष्ट होती हैं।

☆

लज्जा-निषेध

१. धन-धान्य प्रयोगेषु, विद्यासंग्रहणेषु वा।
आहारे व्यवहारे, च, त्यक्तलज्ज:सुखी भवेत् ॥

—चाणक्यनीति ७।२

धन-धान्य के लेन-देन में, विद्या पढ़ने में, आहार में और व्यवहार में लज्जा नहीं करनेवाला सुखी होता है।

२. आहारे व्यवहारे, लज्जा न कारे। —बंगला कहावत

३. जंगन में मंगन में ससुरन के अंगन में,
रैन तिय - रंगन में रस बरसाइये।
गावन-बजावन में नाचन-नचावन में,
पढ़न-पढ़ावन में ध्रुनी दरसाइये।
प्रभुनाम लेवन में दान-मान देवन में,
साच बात केवन में तत्पर कहाइये।
आहार-व्यवहार में विचार दरबार सार,
नीति मांह ऐती ठोर लज्जा हू न चाहिये ॥

४. इन चारों से शर्म नहीं करनी चाहिए—
(१) फटे-पुराने कपड़ों से, (२) गरीब साथियों से, (३) बूढ़े मा-बाप से, (४) सादे रहन-सहन से।

—भाषाश्लोकसागर

५. फाटेलो लूगड़ो ने घरड़ा मा-बापे शरम सो।

—गुजराती कहावत

६. चोरी-जारी रो मणो है, मजूरी रो मैणो क़ोनी।

—राजस्थानी कहावत

७. झूठो पड़्यो सब लोक ही देखत,
पीछे कहा करिये जु अंदेसो!
उल्लिल गाड़ो गयो तब 'केशव',
काम विनायक को फिर कैसो।
पंडित-पंडित बाद भयो तो,
लुकाये कहा हुवै जो हुवै जैसो।
ख्याल विनोद आए सब देखन,
नाचन पैठी तों घूँघट कैसो ?

८. कलकत्ते के स्टेशन पर एक बाबू कुली की खोज में घूम रहा था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने रहस्य समझकर बोझा उठाया, रास्ते में उन्हें पहचान कर वह बाबू माफी मांगने लगा! विद्यासागर ने कहा—अपना काम करने में शर्म नहीं करनी चाहिए। युवक ने प्रभावित होकर अपना काम दूसरे से न करवाने की प्रतिज्ञा की।

★

३० निर्लज्ज

१. शरम री मां गोड़ा रगड़ै ।

२. शरम री बहू भूखी मरै ।

३. एक घड़ी री नकटाई, सारै दिन को बादशाह।

४. दो घड़ी री बेशरमी र ऊमर भर को आराम।

५. नकटा ! थारी नाक कटी ? सवागज बधी ।

६. नकटा ! थारै नाक कित्ता ? निन्नाणवें ।

७. अै ही घोड़ा र अै हो मैदान ।

८. हाथ लिया कांसा, मागण रा क्या सांसा ।

९. काती कुत्ता माघ बिलाई, फागण मर्द र चैत लुगाई ।

—राजस्थानी कहावतें

★

३१ स्वार्थ

१. आप आपरी रोटी नीचै सै खीरा देवे ।

—राजस्थानी कहावत

२. कुत्तों की सभा हुई, आपस में नहीं लड़ने का प्रस्ताव पास किया गया । इतने में चील के मुंह से एक हड्डी गिरी । बस, गिरते ही सारे उछल पड़े और प्रस्ताव रद्द हो गया ।

३. सेठ ना साला सौ थवा जाय । —गुजराती कहावत

४. ज्यांरी खावे बाजरी,वांरी बजावै हाजरी ।—राज०कहावत

५. बिना स्वार्थ कैसे सहे, कोऊ कड़वे बैन ।
लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धैन ।

६. गीव मी रोस्ट मीट एण्ड बीट मी विद दि स्पिट ।

—अंग्रेजी कहावत

दुधारू गाय की लात भली ।

७. स्वार्थी दोषान्न पश्यति । —संस्कृत कहावत

मतबली मनुष्य दोषों को नहीं देखता ।

८. तुम्हारी दाढ़ी जलने दो, हमारा दिया बलने दो ।

—हिन्दी कहावत

९. निर्धनं पुरुषं वेश्या, प्रजाभग्नं नराधिपम्,
खगा वीतफलं वृक्षं, भुक्त्वा चाभ्यागतो गृहम् ।
गृहीत्वा दक्षिणा विप्रा - स्त्यजन्ति यजमानकम्,
प्राप्त विद्या गुरुं शिष्या, दग्धारण्यं मृगास्तथा ॥

— चाणक्यनीति २।१७।१८

वेश्या निर्धन पुरुष को, पूजा शक्तिहीन राजा को, पक्षी-निष्फल वृक्ष को, भोजन करने के बाद अतिथि घर को, दक्षिणा ले लेने के बाद ब्राह्मण यजमान को, विद्या मिल जाने के बाद शिष्य गुरु को तथा मृग, जल जाने के बाद बन को छोड़ देते हैं।

१०. काष्ठ-स्तम्भ जब तक मकान का बोझा ढोता है, उस पर रंग-रोगन किये जाते हैं। खारिज होने पर उसे चूल्हे में जला दिया जाता है।

११. तक्षारिष्टं रुतभिषग्, ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छति।

—ऋग्वेद ९।११२।१

मिस्त्री टूटी वस्तुओं के लिये, वैद्य रोगी के लिए और ब्राह्मण पूजार्थी के लिए इच्कुक रहता है। अर्थात् इन सबकी दृष्टि स्वार्थमयी रहती है।

१२. काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी। —**राजस्थानी कहावत**

१३. काम करेगी बेटी, सुख से खावेगी रोटी। ,, ,,

१४. वारिधितात हुताविधि से सुत,
सोम-धनन्तर सोदर दोऊ।
रंभ-रमा भगिनी तिनकी,
मघवा-मधुसूदन से बहनोऊ।
तुच्छ तुषार इतो परिवार,
करी न सहाय कृपा करि कोऊ।
सूख सरोज गयो जल भीतर,
सम्पति में सबके सब कोऊ॥

—**भाषाश्लोकसागर**

★

३२ मतलब

१. तृणेनापि नः प्रयोजनं, कि पुनः पाणिपादवता मनुष्येण ।
हाथ पैर वाले मनुष्य की तो बात ही क्या ? हमें तो तृण से भी मतलब है ।

२. दुरधिगमा हि गतिः प्रयोजनानाम् । —किरातार्जुनीय
प्रयोजनों की गति दुरधिगम है ।

३. प्रयोजनमनुद्दिश्य न मन्दोऽपि प्रवर्तते । —संस्कृत कहावत
मतलब के बिना मूर्ख भी प्रवृत्ति नहीं करता ।

४. मतलब री मनुहार, नूत जिमावै चूरमा ।
विण मतलब वै यार, राब न पावै राजिया !

५. काणी रांड छाछ घाल ! मीठो घणों बोल्यो बेटा ! दूध घालस्यूं । (मतलब हो तब)

६. इटन बेड इज सून फार गाटन । —अंग्रेजी कहावत
काम हो गया दुःख बिसर गया ।

७. काम सर्‌या दुःख विसर्‌या, वैरो हुग्या वैद ।
—राजस्थानी कहावत

८. गुमंड् फूट्यु नै वैद्य वैरी ।
—गुजराती कहावत

९. वैद्य भूवा नै डाकणा वाला।
आवै चढ़या ने जाय पाला॥ —गुजराती कहावत

१०. आते का बोलबाला, जाते का मुंहकाला।

११. मतलब रा पाजीह, कर जोड्यां विनती करै।
बिन मतलब राजीह, बोलै नहिं वै बाघजी।

१२. काम री बखत काकी, नीकर मूकै हाँकी।

१३. बाढ्योड़ी आँगली पर को मूतैनी। —राजस्थानी कहावतें

★

३३ गरज

१. अलूणी शिला कुण चाटै !

२. आपनी गरज गधे न बाप कुवावै ।

३. गरज बावली । —राजस्थानी कहावत

४. गर जवान नी अकल जाय नैं दरदवान नी शकल जाय ।

५. गरज सरी अमारी, शी परवा तमारी ।

—गुजराती कहावतें

. गरज मिटी र गुजरी नटी ।

७. कह्यां कुम्हार गधे थोड़ा ही चढ़ै ।

८. कह्यां किसो कूवै में पड़ी जे ।

—राजस्थानी कहावतें

९. कहने से धोबी गदहे पर नहीं चढ़ता ।

—हिन्दी कहावत

★

३४ हाँजीड़े (खुशामदी)

१ हाँजीड़े न्याय निहारैं नहीं रु,
अन्याय की ओर भी गौर करे ना।
हाँजीड़े स्वामी को लाभ न देखत,
त्यौंही अलाभ को ध्यान धरे ना।
रात में दीह रु दीह में रात,
उच्चारत मुंह विचार करे ना।
जो कुछ हो मुख हाँजी कहै, 'धन',
हांजीड़े हाँजी कभी विसरे ना ॥
राजन के घर हांजीड़े हैं,
महाराजन के घर भी ये ही डौलै।
शाहन औ पतशाहन पै भी,
गुड़ारहे हाँजीड़े गालों के गोले।
ह्वै के जमा 'धन'! धर्मन में भी,
चला रहे हाँजीड़े पोलम-पोले।
कौन सुनै कहिये किन सों
अब हाँजीड़ों के बधगे हद टोले ॥

—सवैयाशतक

२. अरजी दे-दे जग मुआ, नौकर हुआ न कोय।
पढ़ै खुशामद पाठ तो, नौकर ठाकर होय ॥

★

भूल

१. टू आर इज ह्यूमैन । -- अंग्रेजी कहावत

◆ स्खलन शीलाः हि मनुष्याः । —संस्कृत कहावत
मनुष्य मात्र भूल के पात्र हैं ।

२. न कश्चिन्नापराध्यति ।
—वाल्मीकिरामायण ४।३६।११
जगत में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हैं, जिससे अपराध न हो ।

३. हम यह सोचने की भूल न करें कि हम कभी भूल कर ही नहीं सकते । —गांधी

४. सब जानते हैं और मैं भी जानता हूं कि मैं यूरोप का कुशल जनरल हूं, फिर भी कोई दिन ऐसा नहीं जाता जब कि मुझ से कम से कम दस गल्तियाँ न होती हों ।
—नेपोलियन

५. त्रुटि तो प्रत्येक मनुष्य करता है, किन्तु उस पर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं । —सिसेरो

६. गल्ती करना मनुष्य का स्वभाव है, उसका पछतावा साधुता है और खुश होना दुष्टता है ।

७. भूल करना मनुष्य का स्वभाव है । की हुई भूल को स्वीकार करना एवं पुनः-पुनः न करने का प्रयत्न करना वीरता है । —गांधी

८. पुरुषों की त्रुटियों में स्वार्थपरता निहित रहती हे और स्त्रियों की त्रुटियों के मूल में उनकी दुर्बलता।

—**मेडम द स्नाल**

९. मनुष्यजीवन में दो बार भूल करता है—एक बार अज्ञानवश, दूसरी बार अज्ञान को छिपाने के लिए।

—**गीताभाष्य**

१०. यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी छोटी से छोटी गल्ती भी उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

—**डिकेन्स**

११ जिह्वा क्वचित् संदशति स्वदद्भि-
स्तद्वेदनायाःकतमाय कुप्येत्।

—**भागवत ११।२३।५१**

अपने दांतों से ही कभी अपनी जिह्वा के कट जाने पर जो पीड़ा होती है, उसके लिए मनुष्य किस पर क्रोध करे ? (तत्त्व यह है कि अपनी गलती को दूसरों के सिर नहीं लगाना चाहिए)

★

भूलपर हास्य

१. गच्छतः स्खलनं क्वापि, भवत्येव प्रमादतः।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र, समादधति सज्जनाः॥

चलते हुए व्यक्ति की प्रमादवश स्खलना हो ही जाती है। दुर्जन हास्य करते हैं और सज्जन उसका समाधान करते हैं।

२. भूख देख क्यों हो रहे, हँसी में मशगूल।
होती आई विश्व में, बड़ों-बड़ों से भूल॥

—दोहा-संदोह

३. Even the Saints some times are.

इविन दि सेन्ट्स सम टाइम्स आर। **—अंग्रेजी कहावत**

मुनियों से भी कभी-कभी भूल हो जाती है।

४. आयारपन्नत्तिधरं, दिट्ठिवायमहिज्जगं।
वायविक्खलियं नच्चा, न तं उवहसे मुणी॥

—दशवैकालिक ८।५०

आचारप्रज्ञप्ति का धारक हो और दृष्टिवाद पढ़ रहा हो; ऐसा व्यक्ति भी बोलने में यदि चूक जाय तो मुनि उसका हास्य न करे।

५. मनुष्य का अनुमान उसकी गल्तियों से न लगाकर सदगुणों से लगाओ! **—विवेकानन्द**

६. क्षुद्र व्यक्ति किसी की कृतियों का नहीं, किन्तु त्रुटियों का हिसाब लगाते हैं। ★

३७ भूल–सुधार

१. दूसरों की भूलों से बुद्धिमान अपनी भूल सुधारते हैं।
— **पब्लियस साइरस**

२. गल्तियों की सबसे बड़ी औषधि है — उन्हें विस्मृत कर देना।
—**साइरस**

३. भूल करना तो पाप है ही, पर उसे छिपाना उससे भी बड़ा पाप है।
—**गांधी**

४. गल्ती करो! गल्तियां करो! रोज करो! हरवक्त करो! पर एक तरह की गल्ती दो बार मत करो।

५. हूवा सो तो हूवा, इस वन नहीं आवेगा सूवा।
भूला-चूका आवेगा, तो लटकण फल नहीं खावेगा।।
—**राजस्थानी दोहा**

६. यदि तुम भूलों को रोकने के लिए अपना द्वार बन्दकर दोगे तो सत्य भी बाहर रह जायेगा। सत्य का स्रोत भूलों के बीच से होकर बहता है।
—**टैगोर**

७. जहां से भूलेंगे वहाँ से फिर गिनेंगे और आगे बढ़ेंगे।
—**गांधी**

८. It is never To Take To mind.
इट इज नेवर टु टेक टु माइन्ड। —**अंग्रेजी कहावत**
सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाये तो वह भूला नहीं कहलाता।

९. गौतम - हरिभद्र - रहनेमि अरणक - आषाढ़भूति - स्थूलिभद्रवत् भूलकर सम्भलनेवाले पुरुष विरले ही होते हैं।

१०. एक कलाकार ने **गलती निकालो** यों कहकर चित्र रखा। लोग खराब कर गये। दूसरे दिन **इसे सुधारो** यों कह कर फिर एक चित्र रखा पर किसी से नहीं सुधारा। (तात्पर्य यह है—लोग दूसरों की गल्तियां निकालने वाले हैं, सुधारनेवाले नहीं।)

३८ भूल को स्वीकार करना कठिन

१. विरले ही निज भूल को, करते आज कबूल।
प्रायः भूल कबूलना, समझ रहे हैं भूल ॥
मास्टर हो या छात्र हो, कवि या मुनिसरदार।
भूल निकालो ! बस तुरत, लड़ने को तैयार ॥

—दोहा-संदोह

२. अध्यापक ने एक छात्र के पिता से कहा—आपका पुत्र पढ़ने का ध्यान कम रखता है, आप उसका ख्याल नहीं करते। चौंककर छात्र के पिता ने कहा—मास्टर तो आप हैं, अतः उसे संभालना आप ही का काम है। यदि वह नहीं पढ़ता तो आप की ही गल्ती है।

४. छात्रों की उच्चारण आदि में गल्ती निकालो तो वे फौरन कहने लगेंगे—मैंने तो ठीक ही बोला था आपके सुनने में फ़र्क रह गया।

४. शाक में मिर्च अधिक पड़ जाने पर रसोइया कहता है—आज 'मारवाड़ी' साग बनाया है। और मिर्च कम पड़ जाने पर कहता है आज 'बम्बई-फैशन' का साग बनाया है।

५. शादी होते ही बहू के अलग होने का कारण यदि सास

से पूछा जाय तो जबाब मिलेगा—**बहू के नखरों से परेशान होगई हूँ** और बहू से पूछा जाय तो वह कहेगी—**क्या करूं सास की जीभ सवा गज की है**।

६. एक लेखक के लेख में मित्र ने वाक्य-रचना की कुछ भूलें निकालीं। वह न माना एवं शब्दकोष दिखलाने लगा। मित्र ने दूसरी आवृत्ति दिखलाई। (पहली आवृत्ति में गलत छपा था) लेकिन लेखक ने कहा—मैं क्या करूं, कोष छापनेवाले की भूल है।

७. एक देश सेवक ने भाषण मैं कुछ अनुचित कह दिया। समाचारपत्र में छपते ही लोगों ने उनसे पूछा, वे बोले-छापने वाले की भूल है।

★

३६ भूल के विषय में विविध

१. नापवादमनुस्मरेत् । —**चरकसंहिता ६।२**
किसी के द्वारा किये गये अपने अपमान को बार-बार याद न करो ।

२. तीन बातें कभी न भूलो—(१) प्रतिज्ञा करके (२) कर्ज लेकर (३) विश्वास देकर ।

३. लुकमान हकीम ने चार हजार बातों में से चार बातें चुनी थीं । मालिक और मौत को याद रखना तथा अपनी की हुई भलाई एवं दूसरों की की हुई बुराई को भल जाना ।

४. सेवा करके भूल जाओ, करवाके मत भूलो !
दुःख पाकर भूल जाओ, दुःख देकर मत भूलो !

५. भूलें तो भूलने के लिये ही हैं । —**आचार्य श्रीतुलसी**

६. **जानबूझकर गल्ती**– कुछ वर्ष पहले अमेरिका के **फारसोशल एण्ड रेलीजसरिसर्च** की ओर से एक लाख डालर खर्च करके पांच साल में एक खोज की गई । मनोवैज्ञानिक आचार्यों ने आठ साल से तेरह साल तक के दस हजार बच्चों पर तरह-तरह के प्रयोग किये । **करेक्टर एजुकेशन इन्क्वायरी** नाम से यह शोध हुई । इस प्रयोग में धोखा देनेवाले और गल्ती छिपानेवाले बच्चे प्रायः ज्ञानयुक्त थे तथा ईमानदारी वरतनेवाले अधिकांश अनजान । —**मेकमिलन कम्पनी-न्युयार्क से प्रकाशित "स्टडीज इन डिसीट" नामक पुस्तक से**

७. **बड़ों की भूल**— ब्रह्मदेश के राजा के शर्बत पीते दो बूँदे गिरीं। मक्खियाँ आईं, उन पर छिपकलियाँ, बिल्लियाँ, कुत्ते व उनके मालिक आए। लड़ने लगे, आखिर फौज आई और घमासान युद्ध हुआ। —**ब्रह्म-ग्रन्थावली**

◆ **भूल से भाग्य श लाभ**— भीनासर निवासी **हुलासमलजी सेठिया** के बोन टी० बी० थो। बचने की आशा कम थी। गंगाशहर के सरकारी डॉक्टर ने संखियाभस्म की एक-एक गोली के बदले तीन-तीन देकर २१ गोलियाँ खिला दीं। पोइजन हो गया, किन्तु टी० बी० के कीटाणु खत्म होकर वह रोग मिट गया।

◆ **स्याही चूस**—इंग्लैंड में कारीगरों की भूल होने से कागज खराब हो गए। मालिक के हुक्म से कापियाँ बनाई गईं, किंतु उनपर लिखने के साथ ही अक्षर फैलने लगे। बस, उसी दिन से स्याहीचूस का आविष्कार हो गया।

८. **छोटी-सी भूल से भारी नुकसान**—एक व्यक्ति लालटेन रखकर कहीं चला गया। पीछे खड़ी गाय ने लात मार दी, आग लगी, जिससे **शिकागो** शहर में एक लाख मनुष्य बेघर हो गए।

◆ अमेरिकन कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पास किया। किसी स्थान पर एक पूर्णविराम लगाना रह गया। फलस्वरूप सरकार को दस लाख डालर का नुक्सान उठाना पड़ा।

★

४०   भयंकर भूलें

१. यह एक भूल है कि दूसरों की बात हम जबरदस्ती मान लेते हैं। यह उससे भी भयंकर भूल है कि हम जबरदस्ती अपनी बात दूसरों पर लादना चाहते हैं।

२. डॉक्टर ने चिट्ठी लिखी कि काकू भाई को दस्त रोकने की और रामजी भाई को जुलाब की गोलियां दे दो। कम्पाउंडर ने भूल से उल्टी दवा दे दो, बेचारे दोनों मारे गये।

◆ बम्बई में मरी के रोग से एक ग्रामीण मर गया। एक कृषक के साथ उसके पुत्र को (जो गाँव में रहता था) कहलवाया—तुम्हारा बाप मर गया है, अमावस रविवार को उनका बारहवां कर देना। कृषक भूल गया और पन्द्रह दिन बाद उक्त समाचार कहे।

ये दोनों भयंकर भूले हैं, ऐसे ही लोग तरने के बदले डूबने का कार्य कर रहे हैं और वक्त बीत जाने के बाद धर्म को याद करते हैं।

३. **पति की भूल**—एक सुभट डाकूओं के साथ लड़ते समय मारा गया। उसकी स्त्री ने गोंडल-महाराज से

आजीविका का प्रबन्ध करने की प्रार्थना की। महाराज ने कहा—नाता करलो! स्त्री ने कहा—मैंने तो पति बिलकुल ठीक किया था लेकिन पति ने पति करने में भारी भूल की है।

४. **एक पुत्र को भूल गया**—सेठ के घर में आग लगी सब कुछ निकाल, लिया किन्तु पालने में सोये हुए पुत्र को भूल गया।

★

४१ हठ (आग्रह)

१. नापरिक्षितमभिनिवेशयेत् । —**चरक सूत्र**

जिसकी परीक्षा नहीं की है—ऐसी बात के लिये आग्रह न करे !

२. नवी पगरखी र हालणो आंछे,
ढेकां रै छाला र बैठणो माचै । ओ ही बड़ो हठ ।
खूंखो हाथ र बटणी डोरो,
धांसी रो धसको र करणी चोरी । ओ ही बड़ो हठ ।
पेट में पेटुंगो र चढ़णो ऊंठ,
मुंहड़ा में छाला र चाबणो सूंठ । ओ ही बड़ो हठ ।

—**राजस्थानी उक्तियां**

३. तातस्य कूपोयमिति ब्रुवाणाः,
क्षारं जलं कापुरुषाः पिबन्ति ।

—**योगवाशिष्ठ ६०३।१६३।५६**

यह कुआँ हमारे बाप का है—ऐसा कहते हुए कायर-सत्त्वहीन पुरुष खारा जल पीते हैं ।

४. मियाँ जी मर्‌या पर टांग ऊँची रही ।

—**राजस्थानी कहावत**

५. खसे खाडा पण न खसे हाडा । —**गुजराती कहावत**

६. नाक कटी पण हठ न हटो ।

७. तिरि्या तेल हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार ।

—**राजस्थानी कहावतें**

१०. पैंचा दा अखिया सिर मत्थे, परनाला थां दा थां।

—पंजाबी कहावत

११. पंचां रो वचन सिर माथै पण परनालो तो अठै ही पड़सी। —राजस्थानी कहावत

१२. सौ तारी रामदुहाई, एक मारी ऊँ हूं। ,, ,,

१३. रांड हुई रो धोखो कोनी, पण सुपनो साचो हुग्यो। ,,

१४. हूं मरूं पण तनै रांड कहवाय र छोडूं।

,, ,,

१५. ल्या म्हारी सागी रोटी री कोर। ,, ,,

१६. थे डगो पण म्हे न डगां। —मेवाड़ी कहावत

१७. मूं जेवड़ी बल जाय पण बल को नीकलै नी।

—राजस्थानी कहावत

१८. राम कह दियो अब रहीम थोड़ो ही कहसी। ,, ,,

१९. अभिनिविष्टबुद्धिषु व्रजति व्यर्थकतां सुभाषितम्।

—शिशुपालवध १६।४३

दुराग्रहग्रस्त बुद्धिवाले मनुष्य के प्रति कही गई अच्छी बात व्यर्थ ही जाती है।

२०. ए पाणीए मग चढ़वानां नथी। —गुजराती कहावत

२१. तीन का दुराग्रह न करो—(१) सम्प्रदाय का, (२) वेष का (३) अपनी बात का। —तीनबात पुस्तक से

४२ रिवाज (रूढ़ि)

१. जातौ-जातौ नवाचाराः । —**सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा**
जाति-जाति में नए रीति-रिवाज होते हैं ।

२. **चीन की रीति-रिवाजें**—पढ़ने में आया है कि चीन में १५-२० वर्ष तक का आचार खाते हैं, चाय-दूध में चीनी नहीं लेते, धनी लोग चावल न खाकर ओसामण पीते हैं, मकान एक मंजिल के होते हैं एवं महाराज महलों से नहीं निकलते । महलों में आरोगेन-पाइन वृक्ष के खम्भे दो-दो सौ फुट ऊँचे होते हैं ।

३. अमेरिका की **रेड-इण्डियन** जाति में ऐसा रिवाज है कि स्त्री उसीको अपना पति बनाती है, जिसके घर में अधिक मनुष्यों के मस्तक लटक रहे हों ।

४. अफ्रीका की **जंगली जातियों** का ऐसा विश्वास है कि मृतक की कब्र के नीचे जो चीज़ रखी जाती है, अगले जन्म में वही उसे मिल जाती है—इसी अन्धविश्वास से राजाओं, सरदारों की कब्रों में जीवित स्त्रियाँ एवं नौकर आदि को दफनाया जाता है ।

डहमीजाति में कुछ नौकरों को इसलिये मारा जाता है कि मृत बादशाह को नए-नए अनुचर मिलते रहें ।

—**जीवनलक्ष्य, पृष्ठ ११६**

५. जापान में धना युवक-युवतियां मन्दिरों के लिए पत्थर अपने शिर पर उठा कर लाते हैं, पूछने पर कहते हैं कि क्या माता-पिता की सेवा मजदूरों से कराएंगे ?

६. जापान में बच्चों को काठ के जूते पहनाए जाते हैं, ताकि उनके पैर बड़े न हों !

७. पुराने जमाने में पतिव्रता स्त्रियां मृत-पतियों के साथ चिता में बैठकर जल जाती थीं। भारत में उस समय लार्ड **विलियम बेंटिक** थे।

८. शास्त्राद् रूढिर्बलीयसी।
शास्त्र से परम्परागत रूढ़ि बलवती होती है।

९. साँप निकलग्यो र लीक पीटीजै है।

—राजस्थानी कहावत

१०. रीत रो रायतो करणो ही पड़ै। ,, ,,

११. सहे दी नहीं, पहे दी है। **—पंजाबी कहावत**

नुकसान का कोई ख्याल नहीं, पर रिवाज पड़ने का डर है।

१२. वर-कन्या का विवाह हो रहा था। अचानक वहाँ एक बिल्ली आगई, अशुभ समझकर वर के पिता ने उस पर टोपिया रख दिया। बहू ने उसे कुल-परम्परा समझा। कालान्तर में जब उसकी कन्या के फेरे होने लगे, तब वह बोली—एक बिल्ली टोपिये के नीचे रखदो अन्यथा वर-वधू नहीं उठेंगे।

१३. दसवर्षीय राजकुमार ने सवारी से उतर कर पेशाब किया, दर्ज हुआ। जब पुत्र गद्दी पर बैठा और सवारी निकली तो कहा गया कि पेशाब करो !

१४. बाबाजी ने एक बिल्ली पाल रखी थी। वह संध्या आदि करते समय गोदी में आकर बैठ जाती एवं बाधा डालने लगती, अतः उसे उस समय तक एक तरफ बांधने लगे। कालान्तर बाबाजी दिवंगत हो गये। नये बाबाजी गद्दी पर बैठे। उन्होंने भी एक बिल्ली बांध ली। किसी भक्त के पूछने पर उत्तर मिला—यह रस्म तो पहले से ही चली आ रही है।

१५. रिवाज के कुएँ में तैरना तो अच्छा है, किन्तु उसमें डूब मरना आत्महत्या है। —गांधी

४३ प्रसन्नता (खुशमिजाज़ी)

१. प्रसन्नता सद्गुणों की मां है। —गेटे

२. प्रसन्नता वसन्त की तरह सब कलियाँ खिला देती है। —जीनपाली

३. प्रसन्नता आत्मा का स्वास्थ्य है, गमग़ीनी उसका जहर है। — स्टेनिस लास

४. चित्त की अभीक्षण-प्रसन्नता ज्ञानी होने का सबसे स्पष्ट उपाय है। —माण्टेन

५. सम्यग्ज्ञान और सत्कर्म से प्रसन्नता स्वभावतः पैदा होती है। —ब्लेर

६. प्रसन्नता का एक ही उपाय है कि आवश्यकताओं को कम करो। —गांधी

७. खुशमिजाज़ी तंदुरुस्ती है और गमग़ीनी बीमारी है। —हैलीवर्टन

८. खुशमिजाज़ी एक ऐसा पोशाक है, जो हर सोसायटी में पहना जा सकता है। —थैंकरे

९. उस खुशी से बचो, जो तुम्हें कल काटे। —हर्वल्ट

४४ प्रसन्न

१. प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है। —शेक्सपीयर

२. प्रसन्नहृदय व्यक्ति का चेहरा खिला रहता है।
—बाइबिल

३. प्रसादे सर्वदु:खानां, हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु, बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥
—गीता २।६५

चित्त प्रसन्न रहने से सब दु:ख दूर हो जाते हैं। जिसे प्रसन्नता प्राप्त हो जाती है, उसकी बुद्धि तुरन्त ही स्थिर हो जाती है।

४. खुशमिजाज वही हो सकता है, जो ज्ञानवान और नेक हो! —बो बो

५. बिना खुशमिजाजी का आदमी, बिना हैण्डिल की बाली के समान है।

६. दूसरों को खुश करने के लिये तुम्हें खुद को भूलना पड़ सकता है। —एविड

७. जो मनुष्य अपने हर्ष को छिपा सकता है, वह उससे महान् है जो अपने सुख को छिपा सके।

८. तुष्यन्ति भोजने विप्रा, मयूरा घनगर्जिते।
साधवः परसम्पत्तौ, खलाः परविपत्तिषु॥
—सुभाषित रत्नभण्डागार, पृष्ठ १६५

ब्राह्मण भोजन मिलने पर, मोर मेघ गर्जने पर, सज्जन दूसरों के सुख में और दुर्जन दूसरों के दुःख में प्रसन्न होते हैं।

९. स्वभावेन हि तुष्यन्ति, देवाः सत्पुरुषाः पिता।
ज्ञातयः स्नानपानाभ्यां, वाक्यदानेन पण्डिताः।

—**चाणक्यनीति १३।३**

देवता सत्पुरुष, और पिता—ये प्रकृति से ही सन्तुष्ट हो जाते हैं, किन्तु ज्ञाति (स्वजन) स्नान-पान से एवं पण्डित **प्रियवचन** से सन्तुष्ट होते हैं।

●

तीसरा कोष्ठक

१ वैराग्य

१. ज्ञानस्य पराकाष्ठा वैराग्यम् । —पातंजलयोग १।१६

ज्ञान की पराकाष्ठा का नाम वैराग्य है ।

२. भक्तिर्भवे मरणजन्मभयं हृदिस्थं,
स्नेहो न बन्धुषु न मन्मथजा विकाराः ।
संसर्गदोषरहिता विजना वनान्ता,
वैराग्यमस्ति किमतः परमर्थनीयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ७५

शिव-अर्थात् भगवान में भक्ति हो जाय, हृदय में जन्म-मरण का भय हो जाय, बन्धुजनों में स्नेह न रहे, मन से काम-विकार दूर हो जाय, तथा संसर्ग-दोष से रहित निर्जनवन में निवास हो जाय, तो फिर बताओ ! इससे बढ़कर और वैराग्य है ही क्या ? जिसकी प्रभु से याचना की जाय !

३. विषयेभ्यः परावृत्तिः, परमोपरतिर्हि सा ।

—अपरोक्षानुभूति

विषय-विकारों से निवृत्त हो जाना ही उत्कृष्ट उपरति है ।

४. वासनाऽनुदये भोग्ये, वैराग्यस्य परोऽवधिः ।
अहंभावोदयाभावो, बोधस्य परमोऽवधिः ॥

—विवेकचूड़ामणि ४।२५

भोग्य-वस्तुओं के प्रति वासना का उदय न होना, वैराग्य की चरमसीमा है तथा अहंभाव के उदय का अभाव होना, ज्ञान की परमअवधि है ।

२ वैराग्य की महिमा

१. न वैराग्यात् परं भाग्यम् ।

वैराग्य होने से बढ़कर दूसरा कोई सद्भाग्य नहीं है ।

२. भोगे रोगभयं कुले च्युतिभयं वित्ते नृपालाद् भयं,
मौने दैन्यभयं बले रिपुभयं, रूपे जरायाभयम् ।
शास्त्रे वादभयं, गुणे खलभयं काये कृतान्ताद्भयं,
सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ॥

—भर्तृहरि-वैराग्यशतक ३५

भोगी को रोग का, कुलीन को क्षति का, धनी को राजा का, मौनी को दीनता का, बलवान को शत्रु का, रूप को जरावस्था का, शास्त्रज्ञ को वाद-विवाद का, गुणवान को दुर्जन का और शरीर को मृत्यु का भय है—इस प्रकार सभी वस्तुएँ भय-सहित हैं, अभय तो केवल एक वैराग्य ही है ।

३. मुक्तौ साधनमादौ, तत्र विरागो वितृष्णता प्रोक्ता ।

—सुबोधपद्माकर

वैराग्य और वितृष्णता (भौतिक पदार्थों के प्रति अनासक्ति) ये दोनों मुक्ति प्राप्ति के सर्वप्रथम साधन हैं ।

४. सुखा विरागता लोके । **—सुत्तपिटक उदान २।१**

संसार में वीतरागता ही सुख है ।

५. कस्य सुखं न करोति विरागः ?

वैराग्य किसको सुख नहीं देता ?

६. विचार्य खलु पश्यामि, तत्सुखं यत्र निर्वृतिः ।

विचारकर देखता हूं तो लगता है कि जहां निवृत्ति-वैराग्य है, वहीं सुख है ।

★

३ वैराग्यवान्

१. देहेऽस्थि मांसरुधिरेऽभिमतिस्त्यज त्वं,
जायासुतादिषु सदा ममतां विमुञ्च ।
पश्यानिशं जगदिदं क्षणभङ्गनष्टं,
वैराग्यरागरसिको भव भक्तिनिष्ठः ।।

—श्रीमद्भागवतमाहात्म्य ४।७९

अरे प्रभुभक्ति में निष्ठा रखनेवाले जीव ! इस हाड़-मांस और रुधिर से भरे हुए शरीर का अभिमान छोड़, स्त्री, पुत्रादिक की ममता दूरकर, क्षणक्षयी इस जगत को देख एवं वैराग्य-राग का रसिक बन !

२. वृत्त्यर्थं कर्म यथा, तदेवलोकः पुनः-पुनः कुरुते,
एवं विरागवार्ता-हेतुरपि पुनः-पुनश्चिन्त्यः ।

—उमास्वाति

जिस काम से जीवन की वृत्ति चलती हो, उस काम को लोग जैसे पुनः-पुनः करते हैं । उसी प्रकार वैराग्य की बातों के हेतुओं का चिंतन भी पुनः-पुनः करते रहना चाहिए ।

३. न खलु स उपरतो, यस्य वल्लभो जनः स्मरति ।

—सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

वस्तुतः वह वैरागी नहीं, जिसे प्रेमी याद आता है ।

४. वेरग्गमुवगया, कम्मसमुग्गं विहाडेंति ।

—औपपातिक सूत्र ३४

वैराग्य प्राप्त हुए जीव कर्मों के डिब्बों को तोड़ डालते हैं ।

५. विरत्ता हु न लग्गंति, जहा से सुक्कगोलए।

—उत्तराध्ययन २५।४३

मिट्टी के सूखे गोले के समान विरक्त-साधक कहीं भी चिपकता नहीं है अर्थात् आसक्त नहीं होता।

६. विरज्य संपदः सन्त-स्त्यजन्ति किमिहाद्भुतम्।
नावमीत् किं जुगुप्सावान्, सुभुक्तमपि भोजनम्॥

—आत्मानुशासन १०३

सम्पदाओं से विरक्त होकर यदि सन्त उन्हें छोड़ते हैं तो इसमें कोई अश्चर्य नहीं, क्योंकि ग्लानि होने पर सुभुक्त-भोजन का वमन हर एक ने किया है।

७. वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणां,
गृहेऽपि पञ्चेन्द्रियनिग्रहस्तपः।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्तते,
निवृत्तरागस्य गृहं तपोवनम्॥

—हितोपदेश ४।८३

रागियों को वन में भी दोष लग जाते हैं और वैरागियों को घर में भी पांच इन्द्रियों के निग्रहरूप तप प्राप्त हो जाता है। जो अच्छे कार्यों में प्रवृत्ति करते हैं, उन वैरागियों के लिये घर ही तपोवन है।

★

४ ज्ञान (ज्ञान की उत्पत्ति आदि)

१. सह् समइयाए, परवागरणेणं, अन्नेसिं वा अंतिए सुच्चा ।

—आचारांग ५।६।३

अपनी बुद्धि से, जातिस्मरण से, तीर्थंकर आदि अनुभवियों के वचनों से तथा आचार्य आदि के मुख से सुनकर—इन तीन मार्गों से परमार्थ का ज्ञान होता है ।

२. किं परमं विज्ञानं ? स्वकीयगुण-दोषविज्ञानम् ।

—पद्मानन्द महाकाव्य

उत्कृष्ट विज्ञान क्या है ? अपने गुण-दोष को जान लेना ।

३. **ज्ञान तीन प्रकार से मिलता है—**

(१) **मन से**—जो सर्वोत्कृष्ट है ।

(२) **अनुसरण से**—जो सबसे सरल है ।

(३) **अनुभव से**—जो सबसे कड़वा है ।

४. अपनी अज्ञानता का आभास होना, ज्ञान का प्रथम सोपान है । **—डिजरायली**

५. जीवन बचपन से आरम्भ होता है, वैसे ही ज्ञान वैराग्य से । **—संतवचन**

६. ईश्वर का भय ही ज्ञान का प्रथम चरण है । **—बाइबिल**

७. मैं जो कुछ जानता हूं—इन छः स्वामिभक्तों का बताया हुआ है—

Wheur and What, Whan and Why, How and Ho.

व्हेयर एण्ड व्हाट, व्हेन एण्ड व्हाई, हाऊ एण्ड हू अर्थात् 'कहां' और 'क्या', 'कब' और 'क्यों' तथा 'कैसे' और 'कौन' ?

—**रडयार्ड किपलिंग**

८. जानन्ति पशवो गन्धाद्, वेदाज्जानन्ति पण्डिताः ।
चाराज्जानन्ति राजान - श्चक्षुर्भ्यामितरे जनाः ।।

—**उद्योगपर्व २।३४**

पशु गन्ध से, पण्डित वेदों से, राजा गुप्तचरों से और दूसरे लोग आँखों से ज्ञान प्राप्त करते हैं ।

९. **मुहम्मद साहब को** दो तरह से ज्ञान मिला था—'इल्मेसफीना' और 'इल्मेसीना' अर्थात् एक तो 'किताबी-ज्ञान' और दूसरा 'हार्दिक-ज्ञान' । पहला कुरानशरीफ के रूप में ज़ाहिर किया गया और दूसरा योग्य अधिकारियों को दिया गया ।

१०. स्नान करते समय रानी का रत्नजड़ित-हार पक्षिणी ले गई एवं अपने घोंसले में रखा । नीचे तालाब था, उसमें हार की प्रभा पड़ने लगी । एक धोबी ने तालाव में काफी खोज की, पर हार नहीं मिला । तब योगी ने उसे तत्त्व समझाया—इसी प्रकार ज्ञान तो आत्मा में हैं, बाहर की दौड़-धूप से नहीं मिल सकता ।

११. आदाणाणपमाणं, णाणं णेयप्पमाणमुद्दिट्ठं ।
णेयं लोयालोयं, तम्हा णाणं तु सव्वगयं ॥
—**प्रवचनसारोद्धार** १।२३

आत्मा ज्ञानप्रमाण (ज्ञान जितना) है, ज्ञान ज्ञेयप्रमाण (ज्ञेय जितना) है, और ज्ञेय लोकालोकप्रमाण है, इस दृष्टि से ज्ञान सर्वव्यापी हो जाता है ।

१२. ज्ञानादयस्तु भावप्राणा, मुक्तोऽपि जीवति स तर्हि ।
तस्माज्जीवत्वं हि, नित्यं सर्वस्य जीवस्य ॥

प्राण धारण करने से 'जीव', जीव कहलाते हैं । ज्ञान-दर्शन आदि 'भाव-प्राण' हैं, उन्हें धारण करने के कारण मुक्त-जीव (सिद्ध भगवान) भी जीवित रहते हैं एवं 'जीव' कहलाते है ।

★

५ ज्ञान की आवश्यकता

१. णाणेण विना न हुंति चरणगुणा। —**उत्तराध्ययन २८।३०**

ज्ञान के विना चरित्र-संयम नहीं होता।

२. निरंकुसे य मातंगे, छिन्नरस्सी हए विवा।
णाणपग्गहन्नट्ठे, विविधंपवते नरे॥

— **ऋषिभाषित ६।४**

निरंकुश हाथी और लगामविहीन घोड़े की तरह ज्ञान की लगाम से भ्रष्ट-मनुष्य अनेक प्रकार से धूम मचाता है एवं नष्ट होता है

३. ज्ञान बिना हटता नहीं, मन का मैलापन।
पड़ा कोयला आग में, पाया धौलापन॥

—**दोहासंदोह**

४. पढमं नाणं तओ दया। —**दशवैकालिक ४।१०**

पहले ज्ञान है और पीछे दयारूप क्रिया है।

५. जहा सूइ ससुत्ता, पडियावि न विणस्सइ।
एवं जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ॥

—**उत्तराध्ययन २९।५९**

जैसे धागा पिरोई हुई सूई गिर जाने पर नष्ट नहीं होती, वैसे ही ज्ञानरूप सूत्र में पिरोई हुई आत्मा, संसार में नष्ट-भ्रष्ट नहीं होती।

६. दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन, स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्दनेन ।
मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन, ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मण्डनेन ॥

—चाणक्यनीति १७।१२

जैसे हाथ की शोभा दान देने से है, कंकण पहनने से नहीं। शरीर की शुद्धि स्नान से है, चन्दन के लेप से नहीं। मन की तृप्ति सम्मान से है, भोजन से नहीं। उसी प्रकार मुक्ति ज्ञान से मिलती है, बाह्यश्रृंगार से नहीं।

●

६ ज्ञान से लाभ

१. सव्वजगुज्जोयकरं नाणं, नाणेण नज्जए चरणं ।

—व्यवहारचूलिका भाष्य ७।२१६

ज्ञान विश्व के समग्र रहस्यों को प्रकाशित करनेवाला है। ज्ञान से ही चारित्र (कर्त्तव्य) का बोध होता है।

२. णाणेण य मुणी होई। —उत्तराध्ययन २५।३२

ज्ञान से ही मुनि होता है।

३. नाणेण जाणइ भावे। —उत्तराध्ययन २८।३५

ज्ञान द्वारा ही पदार्थ जाना जाता है।

४. ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुते क्षणात् ।

—गीता ४।३७

ज्ञानरूप अग्नि कर्मों को तत्काल भस्म कर देती है।

५. सुयस्स आराहणयाएणं अन्नाणं खवेइ ।

—उत्तराध्ययन २९।२४

ज्ञान की आराधना करने से जीव अज्ञान का क्षय करता है।

६. नाणसंपन्नयाएणं जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ ।

—उत्तराध्ययन २९।५९

ज्ञान की सम्पन्नता से जीव सभी पदार्थों का ज्ञान कर लेता है।

७. अपुव्वणाणग्गहणे······तित्थयरत्तं लहइ जीवो ।

—ज्ञातासूत्र ८

नये-नये ज्ञान का अभ्यास करने से—जीव तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन करता है ।

८. तत्त्वावबोधादपयाति मोहः । —हृदयप्रदीप

तत्त्व के ज्ञान से मोह-अज्ञान दूर होता है ।

९ कर्मणा बद्धचते जन्तु-र्विद्यया तु प्रमुच्यते ।

—महाभारत शान्तिपर्व २४०।७

जीव कर्म से बंधता है और ज्ञान से मुक्त होता है ।

१०. यदा किंचिज्ज्ञोहं द्विपइवमदान्धः समभवं,
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदाकिञ्चित-किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं,
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ।।

—भर्तृहरि-नीतिशतक-३

जब मुझे नाम-मात्र थोड़ा-सा ज्ञान था, तब मैं अभिमानवश स्वयं को सर्वज्ञ मानने लगा, जब ज्ञानीजनों की संगति से कुछ-कुछ ज्ञान हुआ, तब ज्वर आने पर शक्ति की तरह मेरा सारा मद नष्ट हो गया और मैं अपने आपको मूर्ख समझने लगा ।

११. इल्म से जाना था कि 'कुछ जानेंगे' ।
जाना तो यह जाना कि 'नहीं जाना कुछ भी' ।।

—जौक

७ ज्ञान की महिमा

१. णाणं पयासगं । —आवश्यक निर्युक्ति १०३

ज्ञान प्रकाश करने वाला है ।

२. णाणं णरस्स सारो । —दर्शनपाहुड ३१

ज्ञान मनुष्यजीवन का सार है ।

३. ज्ञानमेव शक्तिः । —सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

ज्ञान ही सच्ची शक्ति है ।

४. नॉलेज इज वरच्यु । —सुकरात

ज्ञान ही गुण है ।

५. ज्ञानं जगल्लोचनम् । —सूक्तमुक्तावलि

ज्ञान दुनियां की आँख है ।

६. सुयं तइयं चक्खू । —बृहत्कल्पभाष्य १।२

ज्ञान तीसरा नेत्र है ।

७. ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिः । —शुक्लयजुर्वेद २३।४८

ब्रह्म अर्थात् ज्ञान का प्रकाश सूर्य के समान है ।

८. ज्ञान सबसे बड़ी अच्छाई है और अज्ञान सबसे बड़ी बुराई । —डायोजिनीस

९. पीयूषमसमुद्रोत्थं, रसायनमनौषधम् ।
अनन्यापेक्षमैश्वर्यं, ज्ञानमाहुर्मनीषिणः ।।

'ज्ञान' समुद्र के विना प्रादुर्भूत अमृत है, बिना औषधि का रसायन है और किसी की अपेक्षा न रखनेवाला ऐश्वर्य है—ऐसा मनीषियों ने कहा है ।

१०. नास्ति ज्ञानात् परं सुखम् । —**चाणक्यनीति** ५।१२
ज्ञान से बढ़कर कोई सुख नहीं है ।

११. ज्ञान पूर्ण कूप है और मस्तिष्क एक छोटी बाल्टी के समान । तुम उतना ही ज्ञान पा सकोगे, जितनी तुम्हारी ग्रहणशक्ति है । —**डा० हरदयाल**

१२. **ज्ञान की विशेषता**—एक कारखाने में मशीन बिगड़ी, मिस्त्री ने दस हजार रुपयों में सुधारना स्वीकार किया । कुछ समय तक देख-भाल करके एक हथौड़ा मारा कि मशीन चल पड़ी । मालिक ने विस्मित होकर पूछा – एक हथौड़ा मारने के दस हजार ! मिस्त्री ने कहा—हथौड़ा मारने का तो एक ही रुपया है, लेकिन **कहां मारना**—इसको सोचने के नौ हजार नौ सौ निन्नानवे रुपये हैं ।

- श्रीगंगानगर में एक रोगी की उलटियाँ बन्द नहीं हुईं । डाक्टर, वैद्य हार गए । वैद्य रामेश्वरजी ने तीन पुड़ियाँ दीं, रोग मिट गया, वह पाँच रुपया देने लगा । वैद्यजी ने इक्यावन ५१) रुपये मांगे । रोगी ने कहा—तीन पुड़ियों के ५१) रुपये ? वैद्य जी बोले—पुड़ियों का तो एक रुपया भी नहीं लगता; लेकिन **उल्टी बन्द कसे हो** ? इसे सोचने के पचास रुपये लगे हैं ।

★

८ ज्ञान का उपदेश

१. भवक्लेशविनाशाय, पिब ! ज्ञानसुधारसम् ।

—शुभचन्द्राचार्य

जन्म-मरण के दुःख को मिटाने के लिये ज्ञान-सुधारस का पान करो ।

२. उत्तिष्ठत ! जागृत ! प्राप्य वरान्निबोधत !
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया, दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति।

—कठोपनिषद् १।३।१४

उठो ! जागो ! और श्रेष्ठजनों के पास जाकर आत्मज्ञान प्राप्त करो ! जैसे-छुरे की धार तीखी होने के कारण छुई नहीं जा सकती, वैसे ही आत्मज्ञान के मार्ग को बुद्धिमानपुरुष दुर्गम बतलाते हैं ।

३. इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः।

—कठोपनिषद् २।५

यदि तुमने इस जन्म में वास्तविक तत्त्व को जान लिया तब तो ठीक है, अन्यथा बड़ी हानि है ।

४. तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा, उत्तमट्ठगवेसए ।
जेणप्पाणं परं चेव, सिद्धिं संपाउणेज्जासि ।

—उत्तराध्ययन ११।३२

उत्तम अर्थ की गवेषणा करनेवाले व्यक्ति को ज्ञान पढ़ना चाहिये, जिसके द्वारा अपनी एवं दूसरों की आत्मा को मोक्ष पहुँचाया जा सके ।

५. यदि तुमने ऋग्वेद को जान लिया तो सब देवताओं का रहस्य जान लिया, यजुर्वेद को जान लिया तो यज्ञों का रहस्य जान लिया और सामवेद को जान लिया तो सब वेद जान लिए, किन्तु मनुष्य मात्र में निहित अन्तर्वेद को जानकर ही तुम ब्रह्म को जान सकोगे ! —**कूटवेद से**

६. दार्शनिक विषयों का ज्ञान भारत से और भौतिक विषयों का ज्ञान यूरोप से लेना चाहिए । —**रामतीर्थ**

★

६ ज्ञान के भेद

१. एगे णाणे । —स्थानांग १।४३

उपयोग की अपेक्षा से ज्ञान एक प्रकार का है ।

२. दुविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा—पच्चक्खे चेव, परोक्खे चेव । —स्थानांग २।१।७१

ज्ञान दो प्रकार का कहा है—प्रत्यक्ष और परोक्ष । अवधि, मनःपर्यव, केवल—ये तीन ज्ञान प्रत्यक्ष है तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान परोक्ष हैं ।

३. सुयं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—लोइयं, लोगुत्तरियं । —अनुयोगद्वार सूत्र १४५

ज्ञान दो प्रकार का है, लौकिक-भारत-रामायण आदि और लोकोत्तर-आचाराङ्ग आदि ।

४. पंचविहे नाणे, पण्णत्ते तं जहा—आभणिबोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलणाणे । —स्थानांग ५।४६३

ज्ञान पाँच प्रकार का कहा है, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान और केवलज्ञान ।

५. **जातिस्मरणज्ञान**—

वेदाभ्यासेन सततं, शौचेन तपसैव च ।
अद्रोहेण च भूतानां, जातिं स्मरति पौर्वकीम् ।

—मनुस्मृति ४।१४८

वेदाभ्यास से, आत्मशुद्धि से, तपस्या से और प्राणियों के प्रति अद्रोहभाव से जातिस्मरणज्ञान होता है ।

- पुव्वभवा सो पिच्छइ, इक्को दो तिन्नि जाव नवगं वा ।
  उवरिम तस्स अविसओ, सहावओ जाइसरणस्स ।

—**अभिधानराजेन्द्र भाग ४ पृ० १४४५**

जातिस्मरण ज्ञानवाला व्यक्ति एक, दो, तीन, यावत् पिछले नव-भव देख लेता है । इससे आगे जातिस्मरण ज्ञान में देखने की शक्ति स्वभाव से ही नहीं है ।

६. जानना दो तरह का है—ऊपर का और हृदय का। ऊपर के ज्ञानी झूठ-चोरी आदि को बुरा जानकर भी उन्हें छोड़ते नहीं और हृदय के ज्ञानी सांप-बिच्छू की तरह-इन दुर्गुणों को दूर फैंकने की चेष्टा करते हैं ।

★

सम्यग्ज्ञान

१. प्रमाण-नय निक्षेपै-र्यो याथात्येन निश्चयः ।
जीवादिषु पदार्थेषु, सम्यग् ज्ञानं तदिष्यते ।

—**तत्त्वानुशासन, ३६**

जीव आदि पदार्थों में जो प्रमाणों, नयों और निक्षेपों द्वारा यथार्थरूप से निश्चय होता है, उसे सम्यग्ज्ञान कहते हैं ।

३. **ज्ञानमार्ग की सात भूमिकाएँ**—

(१) **शुभेच्छा**—वैराग्यपूर्वक केवल मोक्ष की इच्छा ।

(२) **विचारणा**—शास्त्राध्ययन, सत्संग एवं वैराग्य के अभ्यासपूर्वक सदाचार में प्रवृत्ति करना ।

(३) **तनुमानसा**—शुभेच्छा और विचारणा द्वारा अनासक्त होकर विचरना ।

(४) **सत्त्वापत्ति**—अत्यन्त विरक्त होकर आत्मस्वरूप में रमण करना ।

(५) **संसक्ति**—चारों भूमिकाओं का अभ्यास हो जाने पर अत्यन्त असङ्ग हो जाना, तत्पश्चात् अन्तःकरण की समाधि में आरूढ़ हो जाना ।

(६) **पदार्थभावना**—पूर्व अभ्यास के बाद बाह्य-आभ्यन्तर पदार्थों के प्रति बेभान-सा हो जाना ।

(७) **तुर्यगा**—दूसरों के प्रयत्न करने पर भी मान नहीं होना अर्थात् उत्कृष्ट स्वभावलीनता हो जाना।

—योगावशिष्ठ, उत्पत्तिप्रकरण, सर्ग ११८।५-१५

३. इस्लामधर्म के अनुसार परमज्ञान (मारिफत) पाने के लिए ये सात जरूरी बातें—

(१) तोबा[1]—पापों का पश्चात्ताप करना आदि।

(२) जहद—इच्छा से गरीबी को अपनाना।

(३) सब्र—संतोष करना।

(४) शुक्र—अल्लाह के प्रति कृतज्ञता।

(५) रिजाअ—दमन।

(६) तवक्कुल—अल्लाह की कृपा पर पूरा भरोसा।

(७) रजा अल्लाह की मर्जी को अपनी मर्जी मानना।

१—तोबा के छः अर्थ—

(१) कृत पापों का पश्चात्ताप।

(२) फिर न होने के लिए सावधानी।

(३) अल्लाह के लिए किये जानेवाले कर्मों की कमियों को दूर करना।

(४) किसी के साथ अनुचित व्यवहार हुआ हो तो उससे क्षमा मांगना।

(५) गलत भोगों से बढ़े हुए खून-मांस को सुखाना।

(६) जिस मन ने पाप का मजा चखा हो, उसे साधना की कड़वी घूंट पिलाना। **—अबूबकर केतानी**

११ अतिज्ञान और अल्पज्ञान

अतिज्ञान—

१. अतिज्ञान भी दुःख का मूल है। **—बाइबिल**

२. जो अपने ज्ञान को अति बढ़ाता है, वह अपने दुःखों को भी बढ़ाता है। **—बाइबिल**

३. आज हम अधिक पढ़कर पूर्वजों को मूर्ख एवं अल्पज्ञ समझने लगते हैं, किन्तु हमारे लिए भी, आती हुई पीढ़ी यही विचार करेगी। **—पोप**

अल्पज्ञान—

१. नहि सर्वविदः सर्वे।

सभी प्राणियों में सब कुछ जाननेवाले कोई नहीं हैं।

२. एक व्यक्ति सब कुछ नहीं जान सकता। **—होरेस**

३. ज्ञानलवदुर्विदग्ध्या—दज्ञता प्रवरा मता।

अल्पज्ञता से अज्ञता उत्तम है।

४. बड़ां स्युं पहली तेल पीवे। **—राजस्थानी कहावत**

५. हूँ डाह्यो ते बहु खरड़ाय, डाह्यो कागड़ो बे पगे बंधाय।

—गुजराती कहावत

६. जो वि पगासो बहुसो, गुणिओ पच्चक्खओ न उवलद्धो।
जच्चंधस्सं व चंदो, फुडो वि संतो तहा स खलु॥

—**बृहत्कल्प भाष्य, १२२४**

शास्त्र का बार-बार अध्ययन कर लेने पर भी यदि उसके अर्थ की साक्षात् स्पष्ट अनुभूत न हुई हो, तो वह अध्ययन वैसा ही अप्रत्यक्ष रहता है, जैसा कि जन्मान्ध के समक्ष चन्द्रमा प्रकाशमान होते हुए भी अप्रत्यक्ष ही रहता है।

७. अगी अत्थस्स वयणेणं अमयंपि न घुंटए।

—**गच्छाचार ४६**

अगीतार्थ—अल्पज्ञानी के कहने से अमृत भी नहीं पीना चाहिए।

८. सव्व जीवाणं पि य णं अक्खरस्स अणंतभागो पिच्चुग्घाडियो।

—**नन्दीसूत्र ७५**

सभी संसारी जीवों का कम से कम ज्ञान का अनन्तवां भाग तो सदा उद्घाटित ही रहता है।

१२ ज्ञानी

१. णाणी नो पमायए कयावि । —आचारांग ३।३

ज्ञानी पुरुष को किसी भी परिस्थिति में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।

२. नाणी नो परिदेवए । —उत्तराध्ययन २।१३

ज्ञानी (परिदेवन) शोक नहीं करता ।

३. कुसले पुण नो बद्धे नो मुक्के । —आचारांग २।६

कुशल-ज्ञानी पुरुष न तो बद्ध है और न-ही मुक्त है ।

४. उवएसो पासगस्स नत्थि । —आचारांग २।६

ज्ञानवांन के लिए उपदेश की आवश्यकता नहीं है ।

५. किमत्थि ओवाहि पासगस्स ? न विज्जई ।

—आचाराग ३।४

क्या द्रष्टा-ज्ञानी पुरुष के उपाधि होती है ? नहीं होती ।

६. का अरई ! के आणंदे ? इत्थंपि अग्गहे चरे ।

—आचारांग ३।३

ज्ञानी महात्माओं के लिए अरति क्या और आनन्द क्या ? उन्हें हर्ष-शोक के विषय में अनासक्त रहकर विचरना चाहिए ।

७. मेहाविणो लोभ-भयावतीता । —सूत्रकृतांग १२।१५

ज्ञानी पुरुष लोभ और भय से रहित होते है ।

८. तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः । —**ऋग्वेद ९।३१।११**

ज्ञानी पुरुष परमेश्वर के नियमों का उल्लंघन नहीं करते ।

९. परकिरियं च वज्जए णाणी । —**सूत्रकृतांग ४।२।२१**

ज्ञानी को चाहिये कि वह दूसरों के लिए उपभोग-परिभोग की सामग्री जुटाना छोड़ दे ।

१०. चिकित्वांसो अचेतसं नयन्ति । —**ऋग्वेद ७।६०।७**

ज्ञानी मनुष्य अज्ञानियों को मार्ग दिखलाते हैं ।

११. बुद्धा धम्मस्स पारगा । —**आचारांग ८।८।२**

तत्त्वज्ञानी धर्म के पारगामी होते हैं ।

१२. ज्ञानी निमज्जति ज्ञाने, मराल इव मानसे । —**ज्ञानसार**

मानसरोवर में हंस की तरह ज्ञानी पुरुष ज्ञानसमुद्र में क्रीड़ा करते हैं ।

१३. जह विसमुवभुंजंतो, वेज्जो पुरिसो ण मरणमुवयादि ।
पुग्गलकम्मस्सुदयं, तह भुंजदि णेव वज्झए णाणी ।।

—**समयसार १९५**

जिस प्रकार वैद्य (औषधरूप में) विष खाता हुआ भी विष से मरता नहीं, उसी प्रकार सम्यग्दृष्टि आत्मा कर्मोदय के कारण सुख-दुःख का अनुभव करता हुआ भी उनसे बद्ध नहीं होता ।

१४. यस्तु विज्ञानवान् भवति, युक्तेन मनसा सदा ।
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि, सदश्वा इव सारथेः ।।

—**कठोपनिषद् १।३।६**

अच्छे घोड़े, जैसे सारथी के अधीन रहते हैं। उसी प्रकार संयमचित्तवाले ज्ञानी पुरुष के अधीन—ये इन्द्रियां भी रहने लगती हैं।

१५. अक्रोध-वैराग्य-जितेन्द्रियत्वं, क्षमा-दया-सर्वजनप्रियत्वं।
संतोष-दाने भय-शोकमुक्ति-र्ज्ञानान्वितानां दश लक्षणानि॥

(१) अक्रोध, (२) वैराग्य, (३) जितेन्द्रियता, (४) क्षमा, (५) दया, (६) सर्वजनप्रियता, (७) संतोष, (८) दान, (९) निर्भयता, (१०) शोकशून्यता - ज्ञानी पुरुषों के ये दश लक्षण हैं।

१६. एकोभावः सर्वथा येन दृष्टः, सर्वेभावाः सर्वथा तेन दृष्टाः।
सर्वेभावाः सर्वथा येन दृष्टाः, एकोभावः सर्वथा तेन दृष्टः॥

जिसने एक भाव को सर्वथा समझ लिया, उसी ने सब भावों को सर्वथा समझा है तथा जिसने सर्वभावों को सर्वथा समझ लिया, उसी ने एक भाव को सर्वथा समझा है।

१७. जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ,
जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ। **—आचारांग ३।४**

जो एक (परमाणु आदि सूक्ष्म वस्तु) को जानता है, वह सब को जानता है और जो सबको जानता है, वह एक को जानता है।

१८. जो जीवेवि वियाणेइ, अजीवेवि वियाणइ।
जीवाजीवे वियाणंतो, सो हु नाहीइ संजमं॥

—दशवैकालिक ४।१३

जो जीव को भी जानता है, अजीव को भी जानता है। जीव-

अजीव के स्वरूप को जानता हुआ वह साधक, संयम के स्वरूप को भी जान सकेगा।

१९. एवं खु णाणिणो सारं, जं न हिंसइ किंच णं।

—सूत्रकृतांग १।४।१०

ज्ञानी के ज्ञान सीखने का सार यही है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

२०. न तत्र धनिनो यान्ति, यत्र यान्ति बहुश्रुताः।

जहां बहुश्रुत-ज्ञानी पहुँच सकते हैं, वहां धनी नहीं पहुँच सकते।

★

१३ विज्ञान एवं वैज्ञानिक

१. विज्ञान ने तैरना, उड़ना एवं चढ़ना तो सिखाया, लेकिन पड़ौसी के साथ कैसे रहना ? यह नहीं सिखाया। इसने आकाश-पाताल की खोज तो करली, किन्तु आत्मा की नहीं।

२. विज्ञान के मत से भी सूर्य करोड़ों मील दूर है। प्रतिमिनिट २०० गिनें तो ग्यारह मास, प्रतिघंटा ६० मील चलें तो १७५ वर्ष, डेढ़ पाई प्रति मील के हिसाब से खर्च हो तो सात लाख रुपये, आवाज प्रतिसैकिंड ११०० फुट के हिसाब से चले तो सूर्य तक पहुंचने में १४ वर्ष लगेंगे।

—**सौरपरिवार अध्याय ५**

३. पृथ्वी का तोल ६।। हजार मिलियन टन है। [टन-२७। मन का] इसका व्यास ८ हजार मील और घेरा २५ हजार मील है। यह सूर्य के चारों ओर १९ मील प्रति-सेकिंड की गति से चक्कर काट रही है। सूर्य इससे १३ लाख गुना बड़ा है। ९।। करोड़ मील दूर है। प्रकाश की गति १ लाख ८६ हजार मील प्रतिसेकिंड है। ६।। मिनिट में प्रकाश धरती तक पहुंचता है। —**संकलित**

४. एक सेकिंड में शब्द का परमाणु १७६० फीट चलता है, जबकि प्रकाश का परमाणु १ लाख ८६ हजार माइल की दौड़ करता है।

५. एक मिनिट में ६० सेकिंड, सेकिंड का हजारवां अंश मिलिसेकिंड, दसलाखवां अंश माइक्रोसेकिंड और उसका हजारवां अंश अर्थात् सेकिंड का दस अरबवां अंश नैनोसेकिंड है। प्रतिसेकिंड १ लाख ८६ हजार माइल की गति से चलनेवाली बिजली एक नैनोसेकिंड में १२ इंच अर्थात् एक फीट चलती है।

—वाल्टर फाउलर के लेख से

'सम्यग्यदर्शन' ५ अक्टूबर १९६५

६. 'दि मेकेनिजम ऑफ नेचर' नामक पुस्तक में एक अध्यापक लिखते हैं कि 'एक औंस पानी में मोलेक्यूलस (स्कन्ध) की गणना इतनी अधिक है कि इस संसार के समस्त स्त्री-पुरुष उसे गिनने बैठें और प्रति सेकिंड ५ के हिसाब से गिने तो ४० लाख वर्ष व्यतोत होंगे।

७. हजार क्यूबिक सेन्टीमीटर हवा में [जीरो डिग्री गर्मी हो वहाँ] 1293/1000 ग्राम वजन होता है। [453 ग्राम का पौण्ड]

८. ताजा हवा १२ घंटे में $२\frac{३}{४}$ मील चलती है।

—विश्वदर्पण २९

९. १३-१३ सैकिंड पश्चात् अमेरीका की आबादी लिखी जाती है। **—मिलाप से**

१०. अमेरिका में प्रातः ६ बजे जो घास, घास के रूप में होती है, वह मशीनों द्वारा कागज बनकर एवं छपकर नौ बजे अखबार का रूप लेकर बाजार में आ जाती है।

११. जार्ज मैथ्यूज ने सूर्य की शक्ति से चलनेवाले टेलीफोन में बातचीत शुरू की है।

१२. अमेरिका में एक विमान ११०० माइल प्रतिघंटा की गति से उड़ा था।

१३. आठ घंटा, आठ मिनिट, ४१ सेकिंड में केनेडी का जेट विमान २० मई १९६३ को अमेरिका से मास्को ५००४ माइल पहुंचा।

—हिन्दुस्तान दैनिक २१ मई १९६३

१४. जर्मनी हॉस्पिटल **में डॉ० वेन्सी** ने शिर के बालों में से शक्तिवर्धक खुराक की खोज की है।

१५. **अजबमशीनें**—जर्मनी के एक वैज्ञानिक ने नींद का आराम देनेवाली मशीन बनाई है। उसके नीचे दो मिनट सिर रख देने से आठ-दस घंटा नींद लेने जितना आराम मिल जाता है।

१६. एक वैज्ञानिक ने सत्य-असत्य का पता लगानेवाली मशीन बनाई है। उसका एक सिरा अपराधी की बांह से जोड़ दिया जाता है। झूठ बोलते ही खून के दबाव में परिवर्तन हो जाता है एवं निर्णायक को पता लग जाता है कि अब यह झूठ बोल रहा है।

१७. **गजब की गोलियां**—अमेरिका के एक वैज्ञानिक ने ऐसी

गोलियां बनाई हैं, जो तीन, चार चूस लेने पर भोजन की आवश्यकता नहीं रहती।

—**'विज्ञान के नए आविष्कार' पुस्तक से**

१८. **प्लास्टिक की थैली में बच्चा**—उपर्युक्त सभी बातों से भी औत्पातिकी-बुद्धि का अद्भुत उदाहरण कांच की पेटी में रक्खी हुई प्लास्टिक की थैली में बच्चे को पैदा करना है। जो केनेडा के एक फ्रांसीसी डाक्टर प्रोफ़ेसर 'गेगनान' ने १६ फरवरी सन् १९४५ को शाम को ६ बजे अपनी प्रयोगशाला में किया। उन्हीं की अनुमति से १५ अगस्त १९ ३ को 'मिलाप' [दैनिक-उर्दू] समाचार पत्र में बच्चा पैदा होने की आश्चर्य-जनक घटना प्रकाशित हुई, उस समय वह बच्चा लगभग सात वर्ष का था।

१९. **पानी पर चलनेवाले जूते**—(लंदन २९ अक्टूबर,) रूसी इंजिनियर ने ऐसे जूते बनाए है, जो अपने आप खुलनेवाली छोटी छत्री जैसे हैं, पानी पर उतरते ही छतरी खुल जाती है और जब कदम उठता है, बन्द हो जाती है। छतरी वाले जूते के भीतर हवा की परत पैदा हो जाती है जिससे पहननेवाला जल में डूबता नहीं!

—**हिन्दुस्तान ३० अक्टूबर १९६६ मास्को रेडियो के अनुसार**

२०. टोकियो (जापान) में बिजली की आंखोंवाले बिड़ाल

मुख बनाए गए हैं, जो प्रति मिनिट १४ बार म्याऊँ-म्याऊँ करेगें।

२१. **मशीन से स्नान**—जापान की बिजली के सामान की एक कंपनी ने अब इस तरह का नहाने का टब बनाया है जो पूरी तरह स्वचालित है। दो मीटर लम्बा यह टब स्नानार्थी को टब के भीतर लगी फव्वारोंवाली अनेक टोंटियों से सबसे पहले शावर बाथ देता है। इस तरह पांच मिनट तक शावर बाथ देकर स्नानार्थी के देह की थकावट हर ली जाती है।

इसके बाद उस टब में अपने आप गरम पानी भर जाता है, उस समय एक पम्प खुद-बखुद टब मे पानी को ऊपर-नीचे घुमाना शुरू कर देता है।

एक अतिस्वन तरंग प्रेषक यंत्र झाग फेंककर तमाम देह का मैल दूर कर देता है, रंग-बिरंगी "मालिश की गेंदें" टब के कौनों से प्रकट होकर देह की मालिश करती हैं। इसके अनंतर टब का तमाम जल बाहर निकल जाता है और शावर की टोंटियाँ पुनः चालू होकर देह को पूरी तरह धो-पोंछ देती हैं।
शरीर बिना तौलिये के ही सुखाने के लिए टब के भीतर से हल्की गरम वायु निकलती है। इस सारी प्रक्रिया में १५ मिनट लगते हैं।

—**नवभारतटाइम्स** २३ मई १९७०

२२. न्यूयार्क हुन्नर-विज्ञान स्थान संग्रह में एक घड़ी है, जो सोलह फुट ऊँची है। उसमें ६६ काँटे हैं। धीमे काँटे को एक चक्कर लगाने में २६ हजार वर्ष लगते हैं।

२३. अमेरिका में एक मकान में चार हवा भरे यन्त्र है— पहला यन्त्र खोलने से मकान में हवा भर जाती है, दूसरा खोलने से बादल हो जाते है, तीसरा खोलने से बिजली चमकने लगती है, चौथा खोलते ही वर्षा होने लगती है।

२४. **कैमरा**:—रूस की प्रदर्शनी में एक कैमरा दिखाया गया है, जो एक क्षण में ३ करोड़ २० लाख दृश्यों का चित्र खींच सकता है।

— हिन्दुस्तान दैनिक ३१ जुलाई १६६६ 'जगदीश शर्मा'

२५. **आणविकप्रक्रिया से प्राचीनअन्वेषण**—अर्जेण्टाइना (केलिफोर्नियाँ) के अणु वैज्ञानिक डा० 'ग्रेगोरिया बोरो' ने आणविक सक्रियन विश्लेषण प्रक्रिया से सन् १५८७ में मृत स्वीडन के सम्राट् **एरिक चौदस** के पार्थिव अवशेषों से पता लगाया कि भोजन में बिष देने से उनकी मृत्यु हुई थी। **नेपोलियन बोनोपार्ट** के अवशेष के रूप में संग्रहीत केशों के गुच्छे की आणविक प्रक्रिया द्वारा यह पता लगाया गया कि उसमें पर्याप्त संखिया है। नेपोलियन की मृत्यु सन् १८२१ में हुई थी।

—हिन्दुस्तान दैनिक १८ अक्टूबर १९६३

२६. **अद्भुत पेटी**—२३ सितम्बर १६३८ के दिन वर्तमान युग की ओर से आज से ५ हजार वर्ष आगे के संसार को जानकारी देने के लिए वैज्ञानिकों की मन्त्रणा से मज़बूत धातुओं की एक संदूक बनाई गई थी। जिसकी लम्बाई-चौड़ाई ७½ एवं ८ फिट थी। वह १० मन वजन एवं ६ खानों से युक्त थी। उसमें ३५ पदार्थ रखे गये, जिनमें कागज़, लोहा, रबर, कोयला, पैट्रोल, चावल, गेहूं, कपास, ऊन, गाजर, सन, तम्बाकू, पेचकस, कैमरे आदि भी शामिल थे। ११०० फिट लम्बी फिल्म थी, जिसमें १०० पुस्तकें जितनी सामग्री थी। इनके सिवा, तीनसौ भाषा के नमूने, अस्सी मासिक व दैनिक पत्रों के नमूनें, दो विख्यात उपन्यास एवं दो किताबें (बाइबिल और समस्त पदार्थों का विवरण) रखी गई थीं। न्यूयार्क में एक जगह जमीन में ५० फिट गहरी वह सन्दूक दाट दी गई।

—विज्ञान के नए आविष्कार के आधार पर

२७. **अद्भुत दृष्टि**—

एलेन और लायनल नामक दो अमरीकियों के बारे में बड़े-बड़े वैज्ञानिक काफी हैरान हैं। दोनों में विलक्षण बात यह है कि ईंट, सीमेंट और कंकरीट से बनी ठोस दीवार चाहे कितनी चौड़ी क्यों न हो, वे उसके आर-पार देख सकते है। उनकी परीक्षा लेते ससय लोहे की एक भारो तिजोरी में बन्द सामान के बारे में उनसे पूछा गया और उन्होंने अन्दर की सभी चीजों के नाम

इस प्रकार गिना दिए जैसे वे किसी खुली आलमारी में रखी हों।

—**'विचित्रा' त्रैमासिक पटना वर्ष ३, अंक ४, १९७१ से**

२८. **आविष्कारकर्ता-वैज्ञानिक**—

पैदल चल-चल हुए विकल,
मैकमिलन ने बनाई साईकल।
तय करने को लम्बी सफर,
डैमलर ने बनाई मोटर।
दूर न हो सकी जब कठिनाई,
स्टीफेंशन ने रेल चलाई।
फुल्टन ने जलयान चलाए,
राइट ने विमान बनाए।
थका-सा मानव बैठा मौन,
लाए बली **ईनर** ग्रामोफोन।
बढ़ाने को सबका मनोरंजन,
सिनेमा लिये आए **एडिसन**।
सुनने को नित नये गान,
दिया **मार्कोनी** ने रेडियो दान।
बैल ने टेलीफोन बनाया,
घर बैठे वार्तालाप कराया।
गटनवर्ग ने प्रेस चलाया,
छापे का साधन बतलाया।
एक्सरे के दाता **रोएण्टजेन**,
फाउंटेनपेन के **वाटरमैन**।

—**विश्वदर्पण पृष्ठ ४४**

२६.

आविष्कार	आविष्कर्त्ता	देश	तिथि
१ एक्सरे मशीन	—विल्हेम रोएण्टजेन	—जर्मनी	—१८६५
२ कताई की चर्खी	—जेम्स हरग्रीव्ज	—ब्रिटेन	—१७६४
३ कागज बनाने की मशीन	—लुई रोबर्ट	—फ्रांस	—१७६८
४ गैस की रोशनी	—विलियम मरडक	—ब्रिटेन	—१ ७६
५ छापाखाना	—जोहान गूतेनवर्ग	—जर्मनी	—१४५०
६ टाइप मशीन	—चार्ल्सथर्बर	—ब्रिटेन	—१८४३
७ टारपीडो	—रोबर्टव्हाइटहेड	—ब्रिटेन	—१८६६
८ टेलीविजन—			
◆ आइकनोस्कोप	—ब्लादिमिरज़ोरीकिन	—अमरीका	—१९२३
◆ टेलीवाइज़र	—जान एल. बेअर्ड	—ब्रिटेन	—१९२५
◆ प्रतिविम्बविच्छेदक	-फिलो टी. फार्न्सवर्थ	—अमरीका	—१९२८
९ डीजलइंजन	—रुडोल्फ डीजल	—जर्मनी	—१८९२
१० तार	—सेम्युअल एफ. बी. मोर्स	—अमरीका	—१८३७
११ थर्मामीटर	—गैलिलिओ गैलिली	—इटली	—१५९३
१२ दियासलाई	—जॉनवाकर	—ब्रिटेन	—१८२७
१३ दूरबीन	—हैन्स लिपरशी	—नीदरलैण्ड	-१६०८
१४ पनडुब्बी	—जान पी. हालैंड	—अमरीका	-१८९१
१५ पैराशूट	—फ्रैंकोई ब्लैंकार्ड	—फ्रांस	—१७८५

१६ सीमेण्ट (पोर्टलैण्ड)
—जोसेफ एस्पडेन —ब्रिटेन —१६७२
१७ फाउण्टेनपेन —लेविस ई. वाटरमैन–अमरीका—१८८४
१८ फोटोग्राफी (रंगीन)
—गैब्रिएल लिपमैन —फ्रांस —१८६१
१६ फोनोग्राफ (ग्रामोफोन)
—टॉमस एडिसन —अमरीका—१८७७
२० फौजी टैंक —सर अर्नेस्ट स्विण्टन-ब्रिटेन —१६१४
२१ बहुरूपदर्शी —सर डेविड ब्रेक्स्टर–ब्रिटेन —१८१६
२२ बाईसिकिल —किर्कपैट्रिक मैकमिलन-ब्रिटेन —१८३६
२३ बिजली का बल्ब-टामस एडिसन —अमरीका—१८७६
२४ बैरोमीटर —इवानजेलिस्ता टॉरीसेली
—इटली —१६४३
२५ भाप का इंजन-जेम्स वाट —ब्रिटेन —१७६५
२६ मशीनगन —रिचार्ड जे० गैटलिंग-अमरीका —१८६१
२७ रक्षा नौका — हेनरी ग्रेटहेड —ब्रिटेन —१७८६
२८ रेडियो —गुगल्येल्गो मार्कोनी–इटली —१८६५
२६ लाइनोटाइप मशीन
—ओटमार मर्जेन्थेलर-अमरीका —१८८५
३० लिथो छपाई —एलयस सेनेफेल्डर –जर्मनी —१७६६
३१ वाष्पचालित रेल इंजन
—रिचार्ड ट्रेविथिक—ब्रिटेन —१८०४

३२ स्टीमबोट —रॉबर्ट फुल्टन —अमरीका —१८०७

३३ स्वचालित बन्दूक

—जॉन एम० ब्राउनिंग-अमरीका —१९१८

३४ हवाई जहाज़ —विल्बर राइट और ओरविल

—अमरीका —१९०३

—सचित्र विश्वकोष भाग ६, पृष्ठ १०

●

१४ ज्ञान और क्रिया

१. आहंसु विज्जा-चरणं पमोक्खं । —**सूत्रकृतांग १२।११**

सर्वज्ञ भगवान ने ज्ञान और चारित्र से मोक्ष कहा है ।

२. दोहिं ठाणेहिं जीवे संसारकंतारं वीइवएज्जा ।
तं जहा—विज्जाए चेव, चरणेण चेव ।

—**स्थानांग २।१**

दो स्थानों से जीव संसाररूप अटवी को पार करता है—विद्या-ज्ञान से और चारित्र से ।

३. उभाभ्यां चेव पक्षाभ्यां, यथा खे पक्षिणां गतिः ।
तथैव ज्ञान-कर्माभ्यां, प्राप्यते ब्रह्मशाश्वतम् ।।

—**योगवाशिष्ठ १।१।७**

पक्षी जैसे दोनों पंखों के सहारे से आकाश में उड़ते हैं । उसी तरह ज्ञान और क्रिया दोनों के संयोग से शाश्वत ब्रह्म की प्राप्ति होती है ।

४. अन्धंतमः प्रविशन्ति, येऽविद्यामुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो, य उ विद्यायां रताः ।
विद्यां चाऽविद्यां च, यस्तद्वेदोभयं सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा, विद्ययामृतमश्नुते ।

—**ईशोपनिषद् १।९-११**

जो केवल अविद्या (कर्ममार्ग) का सेवन करते हैं, वे अज्ञानरूपी घोर अन्धकार में रहते हैं और जो केवल विद्या (ज्ञानमार्ग)

में रत हैं, वे उनसे भी अधिक अन्धकार में हैं। अतः जो इन दोनों मार्गों के सामञ्जस्य को समझता है, वह कर्म-मार्ग द्वारा मृत्यु से तर कर विद्या-ज्ञान से अमृतत्व का अनुभव करता है।

५. विज्जाचरणसंपन्नो, सो सेट्ठो देवमानुसे।

—मज्झिमनिकाय २।३।५

जो विद्या और चरण से सम्पन्न है, वह सब देवताओं और मनुष्यों में श्रेष्ठ है।

६. संसार नदी है, ज्ञान पांगला है, क्रिया अन्धो है। पांगला एवं अन्धा दोनों ही नदी को पार नहीं कर सकते। आँख एवं पैर दोनोंवाला व्यक्ति चाहिए।

७. संजोगसिद्धिए उ गोयमा ! फलं,
न हु एगचक्केण रहं पयाइ।
अंधो य पंगू य वणे समेच्चा,
ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा।

—महानिशीथ १।३७

गौतम ! ज्ञान-क्रिया के संयोग से सिद्धिरूप फल मिलता है। एक चक्के से रथ नहीं चलता। अंधा और पंगु बन में मिले एवं दोनों एक दूसरे से संयुक्त होकर नगर को प्राप्त हुए।

८. हयं नाणं कियाहीणं, हया अन्नाणओ किया।
पासंतो पंगुलो दड्ढो, धावमाणो य अंधओ।।

—विशेषावश्यकभाष्य गाथा ११५८

क्रियाशून्य ज्ञान निष्फल है और ज्ञान बिना क्रिया निष्फल है। आग लग जाने पर पंगु का देखना एवं अंधे का दौड़ना उन्हें नहीं बचा सके, दोनों ही आग में जल गये।

९. अवशेन्द्रियचित्तस्य, हस्तिस्नानमिव क्रिया।
दुर्भगाभरणप्रायो, ज्ञानं भारः क्रियां विना॥
—हितोपदेश १।१८

इन्द्रिय-मन को वश न करनेवाले व्यक्ति की तप-संयमादि क्रियाएं हस्ति के स्नान के समान है (हस्ति स्नान करके पुनः धूल डाल लेता है) तथा दुर्भग-कुरूप मनुष्य के आभूषण के समान क्रियाशून्य ज्ञान भी भारस्वरूप है।

१०. ज्ञान अंक है और क्रिया बिन्दु है, ज्ञानरूप मिश्री को आचरणरूप जीभ पर रखो। नुस्खे को न घोटकर, दवा को घोटो। भगवती सूत्र में ज्ञानवादी-क्रियावादी की चर्चा है। **सुयसेयं** कहनेवाले विचारों के आकाश में उड़ते हैं और **सीलंसेय** कहनेवाले तेला के बैल की तरह ज्ञान-शून्य क्रिया करते हैं **तामलीतापस** ने ६० हजार वर्ष की तपस्या की किन्तु **भरतचक्रवर्ती** ने शीशमहल में ही केवल ज्ञान पा लिया। अन्न-जल, तन-मन, एवं प्रकृति-पुरुष की तरह ज्ञान-क्रिया का जोड़ा है। ज्ञान **कृष्ण** है और क्रिया **अर्जुन** है। दोनों के संयोग से ही कर्मों का महाभारत जीता जायगा।

★

१५ बिना ज्ञान की क्रिया

१. बिना ज्ञान की क्रिया, अन्धे का निशाना है।

२. कच्छ-वासिनी स्त्री ने बम्बई में एक सेठानी के हाथ लाल देखे। पूछने से पता चला कि मेंहदी से हाथ लाल हुए हैं। मेंहदी के सैकड़ों पत्ते बांधे, कुछ नहीं हुआ। अफ्रीका से लौटते समय पूछकर रहस्य समझा कि मेंहदी पीसकर लगाने से हाथ रचते हैं।

३. कच्छ की बात हैं—संध्या का प्रतिक्रमण **देवसी भाई** और सुबह का **रायसी भाई** सुनाया करते थे एवं स्थान-स्थान पर देवसी-रायसी शब्द का प्रयोग स्वभावतः होता ही था। एकदा **खेतसी भाई** को प्रतिक्रमण सुनाने का प्रसंग आया तो उन्होंने देवसी की जगह प्रतिक्रमण में खेतसी जोड़ लिया। खूब हंसी हुई।

*

१६ अज्ञान

१. 'तू और तेरा' ज्ञान है **'मैं और मेरा'** अज्ञान है ।

—श्रीरामकृष्ण

२. अविज्जा परमं मलं । **—धम्मपद** १।८६

अज्ञान उत्कृष्ट मल है ।

३. अविद्या दुःखमूलम् । **—बुद्धचरित**

अज्ञान दुःख का मूल है ।

४. तन रोगों की खान है, धन भोगों की खान ।
ज्ञान सुखों की खान है, दुःख खान अज्ञान ।।

—दोहा-संदोह

५. नह्यज्ञानात् परः पशुरस्ति । **—नीतिवाक्यामृत** ५।३७

अज्ञान से बढ़कर कोई पशु नहीं है ।

६. अज्ञता कस्य नामेह, नोपहासाय जायते ?

—कथासरित्सागर

अज्ञता किसके हास्य का कारण नहीं बनती ?

७. अज्ञान एक ऐसी रात्रि के समान है, जिसमें न चांद हैं। न तारे । **—कन्फ्युसियस**

८. अज्ञानता ही मोह और स्वार्थ की जननी है, अतः अज्ञानी दुष्ट या कापुरुष होते हैं । **—गांधी**

९. अज्ञान ईश्वर का शाप है। ज्ञान वह पाँख है, जिससे हम स्वर्ग को उड़ सकते हैं। —**शेक्सपियर**

१०. बालभावे अप्पाणं नोउवदंसिज्जा। —**आचारांग ५।५**

अपनी आत्मा को बालभाव-अज्ञानदशा में नहीं दिखाना चाहिए।

११. अज्ञान की सबसे बड़ी सम्पत्ति है, मौन ! और जब वह इस रहस्य को जान जाता है, तब अज्ञान नहीं रहता।

—**प्लेटो**

१२. अर्धं सज्जनसंपर्का-दविद्याया विनश्यति।
चतुर्भागस्तु शास्त्रार्थे, चतुर्भागः स्वयत्नतः।

—**योगवाशिष्ठ ६।उ० १२।२७**

अविद्या-अज्ञान का आधाभाग-सत्संगति से, चतुर्थ - भाग शास्त्रार्थ-चिन्तन से और शेष चौथाभाग अपने प्रयत्न से नष्ट होता है।

१३. ऐसा भी समय आता है, जब अज्ञानता भी वरदान सिद्ध हो जाती है। —**डिकेन्स**

१४. नाम न जाने गांव का, बिन जाने कित जाव।
चलते-चलते जुग भया, पावकोस पर गांव।

—**कबीर**

★

१७ अज्ञानी

१. अन्नाणिया नाणं वयंतावि निच्छियत्थं न जाणंति ।

—**सूत्रकृतांग १।२।१६**

अज्ञानी-जीव ज्ञान की चर्चा करते हुए भी निश्चित अर्थ को नहीं जान सकते ।

२. अप्पणो य परं नालं, कुतो अन्नाणुसासिउं ।

—**सूत्रकृतांग १।२।१७**

अज्ञानी अपने आप पर भी अनुशासन नहीं कर सकता, दूसरों पर तो करेगा ही क्या ?

३. अन्नाणी किं काही, किं वा नाहीहि सेय-पावगं ।

—**दशवैकालिक** ४।१०

अज्ञानी क्या करेगा तथा पुण्य-पाप को क्या समझेगा !

४. अन्नाणमओ जीवो कम्माणं कारगो होदि ।

—**समयसार ९२**

अज्ञानी-आत्मा ही कर्मों का कर्त्ता होता है ।

५. न कम्मुणा कम्म खवेंति बाला । —**सूत्रकृतांग २।१५**

अज्ञानी-जीव अपने कर्मों द्वारा कर्मों का क्षय नहीं कर सकते ।

६. बालः पश्यति बाह्यरूपम् ।

अज्ञानी केवल बाहर की वेष-भूषा देखता है, गुण-दोष को नहीं !

७. मज्जन्त्यविचेतसः ! —**ऋग्वेद ६।६४।२१**

अज्ञानी डूबा करते हैं।

८. जहा अस्साविणि णावं, जाइअंधो दुरुहिया।
इच्छई पारमागंतु, अंतरा य विसीयई ॥
—**सूत्रकृतांग १।२।३१**

अज्ञानी साधक उस जन्मांध व्यक्ति के समान है, जो सछिद्र नौका पर चढ़कर नदी के किनारे पहुँचना तो चाहता है, किन्तु किनारा आने से पहले ही बीच प्रवाह में डूब जाता है।

९. अबोध बालक जैसे कुत्ते के बदले अपने भाई को भी लाठी मार देता है, अज्ञानी उसी प्रकार क्रोधादि दुर्गुणों को निकालने के बदले क्षमादि आत्मिकगुणों को निकाल रहा है।

१०. अकोविया दुक्खं नाइतुट्टंति, सउणी पंजरं जहा।
—**सूत्रकृतांग १।२।२२**

जैसे-शकुनि पिंजरे को नहीं तोड़ सकती, उसी तरह अज्ञानी दुःखों को भी नहीं तोड़ सकते।

११. मंदा विसीयंति, उज्जाणंसि व दुब्बला।
—**सूत्रकृतांग ३।२।२०**

ऊँची जमीन पर चढ़ते हुए, दुर्बल बैलों की तरह अज्ञानी-जीव विषाद को प्राप्त होते हैं।

१२. बाले य मंदिए मूढे, वज्झइ मच्छिया व खेलंमि।
—**उत्तराध्ययन ८।५**

श्लेष्म में मक्खियों की तरह अज्ञानी काम-भोगों में फंस जाता है।

१३. मंदा विसीयंति, मच्छा विट्ठा व केयणे ।

—सूत्रकृतांग ३।१।१३

जाल में फंसे हुए मत्स्यों की तरह अज्ञानी-जीव विषाद को प्राप्त होते हैं ।

१४. वित्तं पसवो य नाइओ, तं बालो सरणंति मन्नइ ।

—सूत्रकृतांग २।३।१६

ये धन, पशु एवं ज्ञातिजन मेरे रक्षक हैं—ऐसे अज्ञानी मानता है ।

१५. मरणंतम्मि बाले संतस्सइ भया । —उत्तराध्ययन ५।१६

अज्ञानी-जीव मरणान्त समय में भय से संत्रस्त होता है ।

१६. मंदा नरयं गच्छंति, बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ।

—उत्तराध्ययन ८।७

मंद-बुद्धिवाले अज्ञानी-जीव अपनी पापदृष्टि के कारण नरक में जाते हैं ।

१७. जावन्तऽविज्जा पुरिसा, सव्वे ते दुक्खसंभवा ।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा, संसारम्मि अणंतए ।

— उत्तराध्ययन ६।१

जितने भी अविद्वान् (अज्ञानी) पुरुष हैं, वे सब दुःखों के संभव-उत्पादक हैं। वे मूढ़ बहुत बार अनन्तसंसार में पीड़ित होते हैं ।

१८. बालाणं अकामं तु मरणं असइं भवे ।

—उत्तराध्ययन ५।३

बाल-अज्ञानियों का अज्ञानदशा का मरण बार-बार होता है ।

१९. अज्ञो भवति वै बालः, पिता भवति मन्त्रदः।

—मनुस्मृति २।१५३

अज्ञानी बालक है और मन्त्र [ज्ञान] देनेवाला पिता है।

२०. ण केवलं वयबालो... कज्जं अयाणओ बालो चेव।

—आचारांगचूर्णि १।२।३

केवल अवस्था से ही कोई बाल (बालक) नहीं होता, किन्तु जिसे अपने कर्त्तव्य का ज्ञान नहीं है, वह भी बाल ही है।

★

१८ ज्ञानी-अज्ञानी में अन्तर

१. पश्यदक्षण्वान्न विचेदन्धः । —ऋग्वेद १।१६४।१६

जिसके आंख है, जो ज्ञानी है, वही देखता है। अंधा तथा अज्ञानी नहीं देखते।

२. णाणी रागप्पजहो, सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो ।
णो लिप्पइ रजएण दु, कद्दममज्झे जहा कणयं ।
अण्णाणी पुणरत्तो, सव्वदव्वेसु कम्ममज्झगदो ।
लिप्पइ कम्मरएण दु, कद्दममज्झे जहा लोहं ।।

—समयसार २१८-२१९

जिस प्रकार कीचड़ में पड़ा सोना, कीचड़ से लिप्त नहीं होता, उसे जंग नहीं लगता। उसी प्रकार ज्ञानी संसार के पदार्थ-समूह में विरक्त होने के कारण कर्म करता हुआ भी कर्म से लिप्त नहीं होता।

किंतु जिस प्रकार लोहा कीचड़ में पड़कर विकृत हो जाता है, उसे जंग लग जाता है। उसी प्रकार अज्ञानी पदार्थों में रागभाव रखने के कारण कर्म करते हुए विकृत हो जाता है, कर्म से लिप्त हो जाता है।

३. सेवंतो वि ण सेवइ, असेवमाणे वि सेवगो होई ।

—समयसार १९७

ज्ञानी-आत्मा (अन्तर् में रागादि का अभाव होने के कारण) विषयों का सेवन करता हुआ भी, सेवन नहीं करता। अज्ञानी-

आत्मा (अंतर् में रागादि का भाव होने के कारण) विषयों का सेवन नहीं करता हुआ भी, सेवन करता है।

४. जं अन्नाणी कम्मं, खवेइ बहुयाहिं वासकोडिहिं।
तं नाणी तिहिं गुत्तो, खवेइ सासमित्तेण ॥

—महाप्रत्याख्यान प्र० गाथा १०१

अज्ञानी जिन कर्मों को करोड़ों वर्षों में खपाता है। तीन गुप्तियुक्त ज्ञानी महात्मा उच्छ्वासमात्रकाल में उन कर्मों का क्षय कर देता है।

५. ज्ञानी से ज्ञानी मिले, करे ज्ञान की बात।
मूरख से मूरख मिले, के मुक्का के लात ॥

६. अज्ञानी अहंकार का गुलाम होता है और ज्ञानी विनय का भक्त।

६. दीपक के प्रकाश में एक नन्हा बच्चा अपने हाथों की छाया को पकड़ने के लिए दौड़-धूप करने लगा। माता बैठी-बैठी उसका तमाशा देखकर हंस रही थी। आखिर छाया को न पकड़ सकने से बच्चा चिल्लाया। तब माता ने उसके दोनों हाथ उसी के सिर पर रख दिये। छाया अन्दर समा गई एवं वह शान्त हो गया।
(तत्त्व यह है कि अज्ञानी दृश्य पदार्थों को प्राप्त न कर सकने से रोने लगते हैं। ज्ञानी आत्मज्ञान देकर उन्हें शान्त करते हैं।)

★

विद्या

१. पावका नः सरस्वती । —सामवेद पूर्वार्चिक २।१०।५

हमारी विद्या पवित्र विचारों को फैलानेवाली हो ।

२. जेण बंधं च मोक्खं च, जीवाणं गतिरागतिं ।
आयाभावं च जाणंति, सा विज्जा दुक्खमोयणी ।

—ऋषिभाषित १७।२

जिसके द्वारा बन्ध-मोक्ष, गति-अगति एवं आत्मस्वरूप का ज्ञान हो, वही विद्या दुःख से विमुक्त करनेवाली है ।

३. तत्कर्म यन्न बन्धाय, सा विद्या या विमुक्तये ।

कर्म वही श्रेष्ठ है, जिससे आत्मा न बन्धे और विद्या वही श्रेष्ठ है, जिससे मुक्ति मिले ।

४. विद्या हि का ? ब्रह्मगतिप्रदा या,
बोधो हि को ? यस्तु विमुक्तिहेतुः । —शंकरप्रश्नोत्तरी ११

विद्या कौन-सी है ? जो ब्रह्मगति को देनेवाली हो !
ज्ञान कौन-सा है ? जो मुक्त का हेतु हो ।

५. मातेव का या सुखदा ? सुविद्या,
किमेधते दानवशात् ? सुविद्या । —शंकरप्रश्नोत्तरी २५

माता के तुल्य क्या चीज़ है सुख देनेवाली ? सुविद्या !
देने से बढ़नेवाली चीज़ क्या है ? सुविद्या !

६. अध्यात्म विद्याविद्यानाम् । —गीता १०।३२

आध्यात्मिक विद्या सब विद्याओं में श्रेष्ठ है ।

★

२० विद्या की महिमा

१. विद्या धनमधनानाम् ।
निर्धनों का धन विद्या है ।

२. विद्या रूपं कुरूपाणाम् । —**चाणक्यनीति ३।६**
कुरूप मनुष्यों का विद्या ही रूप है ।

३. न राजहार्यं न च चौरहार्यं,
न भ्रातृभाज्यं न च भारकारम् ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं,
विद्या धनं सर्वधनप्रधानम् ।।
जिसे न राजा ले सकता, न चोर ले सकते और न जिसका हिस्सा भाई ले सकते । तथा जो खर्च करने से उल्टा बढ़ता है, ऐसा विद्या-धन सभी धनों में श्रेष्ठ है ।

४. हर्तुर्न गोचरं याति, दत्ता भवति विस्तृता,
कल्पान्तेऽपिनया नश्येत्, किमन्यद् विद्ययासमम् ?
—**सुभाषितरत्न भाण्डागार, पृष्ठ ३०**
जो हरण करनेवाले के दृष्टिगोचर नहीं होती, देने से बढ़ती है और कल्पान्त में भी नष्ट नहीं होती, उस विद्या के समान दूसरी चीज़ ही क्या है ?

५. सआदत सयादत, इबादत है इल्म ।
हकूमत है, दौलत है, ताकत है इल्म ।। —**उर्दू शेर**

६. किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या ? —**भोजप्रबन्ध ५**

कल्पलता की तरह विद्या क्या-क्या काम सिद्ध नहीं करती ?

७. विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धनसंपत्ति - र्धनाद्धर्मं ततः सुखम् ।।

विद्या मनुष्य को विनय देती है, विनय से पात्रता मिलती है, पात्रता होने से उसमें धन-संपत्ति प्रवेश करती है, उससे धर्म मिलता है और धर्म से सुख मिलता है ।

८. किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि । **—भर्तृहरि-नीतिशतक २१**

यदि पवित्र विद्या है तो धन से क्या !

९. किं मण्डनं ? साक्षरता मुखस्य । **—शंकरप्रश्नोत्तरी २२**

मुख का शृंगार क्या है ? साक्षरता !

★

२१ विद्याप्राप्ति के साधन

१. विनयेन विद्या ग्राह्या, पुष्कलेन धनेन वा,
अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थं नैव कारणम् ।

विद्या तीन प्रकार से प्राप्त होती है—विनय से, विपुल धन से अथवा विद्या के द्वारा ।

२. आचार्य-पुस्तक-निवास-सहाय-बल्भा,
बाह्यास्तु पञ्च पठनं परिवर्धयन्ति ।
आरोग्य-बुद्धि-विनयोद्यम-शास्त्ररागा-
श्चाभ्यन्तराः पठनसिद्धिकरा भवन्ति ।

(१) आचार्य (२) पुस्तक (३) निवासस्थान (४) अर्थ आदि का सहायक (५) भोजन—ये पांच विद्याध्ययन की वृद्धि के बाह्य कारण हैं । (१) आरोग्य (२) बुद्धि (३) विनय (४) उद्यम (५) शास्त्र का प्रेम—ये पांच पठनसिद्धि के आन्तरिक कारण हैं ।

३. पुस्तकप्रत्ययाधीता, नाधीता गुरुसन्निधौ ।
सभामध्ये न शोभन्ते, जारगर्भा इव स्त्रियः ।

—**चाणक्यनीति** १७।१

गुरु के पास न पढ़कर जो केवल पुस्तकों द्वारा पढते हैं, वे जार का गर्भ धारण करनेवाली स्त्रियों के समान सभा में शोभा नहीं पाते ।

४. घोटो वाजे घम-घम, विद्या आवे छम-छम।

—**राजस्थानी कहावत**

५. मार विद्यासार। ,, ,,

६. चूने ऊपर ईंट है, फिर चूना फिर ईंट।
शिक्षा में इस ही तरह, साथ प्रेम के पीट॥

—**दोहासंदोह**

७. विद्याभ्यासो विचारश्च, समयोरेव शोभते।

विद्याभ्यास और विचार-विनिमय समान व्यक्तियों का ही शोभा देता है।

८. विणयाहीया विज्जा, देंति फलं इह परे य लोगम्मि।
न फलंति विणयहीणा, सस्साणि व तोयहीणाइं।

—**बृहत्कल्पभाष्य ५२०३**

विनयपूर्वक पढ़ी हुई विद्या, लोक-परलोक में सर्वत्र फलवती होती है। विनयहीन विद्या उसी प्रकार निष्फल होती है, जिस प्रकार जल के बिना धान्य की खेती।

९. दुरधीता विषं विद्या। —**सुभाषितरत्न भण्डागार, पृष्ठ १६९**

दुर्विधि से पढ़ी हुई विद्या जहर का काम करती है।

१०. आलस्योपहता विद्या, परहस्तगतं धनम्।
अल्पबीजं हतं क्षेत्रं, हतं सैन्यमनायकम्॥

—**चाणक्यनीति ५।७**

आलस्य से विद्या, दूसरे के हाथ में जाने से धन, बीज की न्यूनता से खेत और सेनापति के बिना सेना नष्ट हो जाती है।

११. वरमज्ञानं नाशिष्टजनसेवया विद्या।

—**नीतिवाक्यामृत ५।७१**

ज्ञानशून्य रहना अच्छा है लेकिन अशिष्टजनों की सेवा से विद्या प्राप्त करना ठीक नहीं है।

१२. गृहासक्तस्य नो विद्या। —**मनुस्मृति ११।४**

घर में फंसे हुए व्यक्ति को विद्या नहीं आती।

१३. दाम गंठे, विद्या कंठे। —**राजस्थानी कहावत**

१४. पुस्तकेषु च या विद्या, परहस्तेषु यद्धनम्।
समुत्पन्नेषु कार्येषु, न सा विद्या, न तद्धनम्॥

—**चाणक्यनीति १६।२०**

पुस्तकों में रही हुई विद्या और दूसरों के हाथ चढ़ा हुआ धन-ये दोनों समय पड़ने पर काम नहीं आते।

१५. दश हज़ार विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र देकर पढ़ाने वाला कुलपति कहलाता है।

●

२२ विद्याध्ययन की प्रेरणा

१. कणशः क्षणशश्चैव, विद्यामर्थं च साधयेत् ।

—सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूषा

कण-कण के संग्रह से धन और क्षण-क्षण के उपयोग से विद्या की साधना करनी चाहिए ।

२. श्लोकेनापि तदर्द्धेन, तदर्धार्धक्षिरेण वा ।
अवन्ध्यं दिवसं कुर्याद्, दानाध्ययनकर्मभिः ।।

—चाणक्यनीति १२।३

एक श्लोक, आधा श्लोक, उसके आधे से भी आधा श्लोक अथवा एक अक्षर भी पढ़कर तथा दान, अध्ययन एवं सत्कार्य करके मनुष्य को अपना दिन अवन्ध्य करना चाहिए ।

३. गतेऽपि वयसि ग्राह्या, विद्या सर्वात्मना भृशम् ।
यदीह फलदा न स्यात्, सुलभा साऽन्यजन्मनि ।।

—भगवान् व्यास

वृद्धावस्था में भी विद्या-ग्रहण करना चाहिए । यहां फल न देगी तो अगले जन्म में तो सुलभ हो ही जायेगी ।

४. उत्तम विद्या लीजिये, यद्यपि नीच पे होय ।
पड्यो अपावन ठोर में, कंचन तजत न कोय ।।

—बृन्दकवि

५. लो जान बेचकर भी, इल्मो-हुनर मिले ।
जिससे मिले, जहां से मिले, जिस कदर मिले !—उर्दू शेर

६. अधीष्व पुत्रकाधीष्व, मोदकं प्रददामि ते।
अन्यथाऽस्मै प्रदास्यामि, कर्णमुत्पाटयामि ते॥

बेटा! पढ़! पढ़! तुझे लड्डू दूँगा अन्यथा लड्डू तो इसे दे दूँगा और तेरे कान खींच लूंगा।

७. पढ्योड़ै रै चार आंख्यां हुवै। —**राजस्थानी कहावत**

८. खेड़े तेनुं खेतर, मारे तेनी तलवार, भजे तेनां भगवान,
पाले तेनो धर्म, ने भणे तेनी विद्या।

—**गुजराती कहावत**

९. यद्यपि बहुनाधीषे, तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो मा भू—च्छकलं सकलं सकृच्छकृत्।

—**सुभाषितरत्न खण्ड मञ्जूसा**

पुत्र! अधिक न पढ़ना हो तो व्याकरण अवश्य पढ़। इसके बिना स्वजन—श्व-जन (कुत्ता), सकल—शकल (टुकड़ा) एवं सकृत्—शकृत् (विष्ठा) न हो जाय।

१०. व्याकरणरहितश्चान्धो, बधिरो कोषवर्जितः।
साहित्यरहितः पङ्गु-मूकस्तर्कविवर्जितः॥

व्याकरण के बिना मनुष्य अन्धा है, कोष के बिना बहरा है, साहित्य के बिना पङ्गु एवं तर्करहित मूक के समान है।

★

२३ विद्या की आवश्यकता

१. तद्ब्रूयात् तत्परं पृच्छेत्, तदिच्छेत् तत्परो भवेत् ।
येनाऽविद्यामयं रूपं त्यक्त्वा विद्यामयं व्रजेत् ।

—समाधिशतक ५३

वही बोलना चाहिए, वही दूसरों से पूछना चाहिए, उसीकी इच्छा करनी चाहिए एवं उसी में तत्पर रहना चाहिये, जिससे अपना अविद्यामयरूप विद्यामय बन जाय ।

२. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं,
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं,
विद्या राजषु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

—भर्तृहरि-नीतिशतक २०

विद्या—मनुष्य का रूप है, प्रच्छन्न-गुप्तधन है, भोग, यश एवं सुख की करनेवाली है, गुरुओं की भी गुरु है, विदेश-गमन में स्वजन है. उत्कृष्ट देवता है, राजाओं में भी, पूजित धन नहीं किंतु विद्या ही है । विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है ।

३. शुनः पुच्छमिव व्यर्थ-जीवितं विद्यया विना ।
न गुह्यगोपने शक्तं, न च दंशनिवारणे ।

—चाणक्यनीति ७।१८

कुत्ते की पूंछ की तरह विद्या के बिना मनुष्य का जीना व्यर्थ है। कुत्ते की पूंछ न तो गुह्यप्रदेश को ढाँक सकती है और न मच्छर आदि को ही उड़ा सकती है।

४. रूप-यौवनसंपन्ना, विशालकुलसंभवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किंशुकाः ।

—**चाणक्यनीति** ३।८

जो व्यक्ति रूप-यौवन सम्पन्न है और विशालकुल में पैदा हुए हैं वे भी यदि विद्या से हीन हैं तो सुगंधिहीन फूलों की तरह शोभा नहीं पाते।

५. किं कुलेन विशालेन, विद्याहीनस्य देहिनः ।
अकुलीनोऽपि विद्यावान्, देवैरपि सुपूज्यते ।

—**चाणक्यनीति** ८।१९

विद्याहीन व्यक्ति चाहे बड़े कुल का भी क्यों न हो, उससे कुछ भी नहीं। विद्यावान अकुलीन होने पर भी देवों द्वारा पूजा जाता है।

★

२४ विद्या के पात्र-अपात्र

१. धर्मार्थौ यत्र न स्यातां, शुश्रूषा वापि तद्विधा ।
तत्र विद्या न वक्तव्या, शुभं बीजमिवोषरे ।।

—मनुस्मृति २।११२

जिस शिष्य को पढ़ाने में धर्म-अर्थ की प्राप्ति न हो तथा अनुरूप सेवा भी न हो, उसे विद्या न पढ़ानी चाहिये । ऊषर-भूमि में बोये हुए अच्छे बीज की तरह उसकी विद्या निष्फल जाती है ।

२. विद्या ब्राह्मणमेत्याह, शेवधिस्तेऽस्मि रक्ष माम् !
असूयकाय मां मादा-स्तथा स्यां वीर्यवत्तमा ।
यमेव तु शुचिं विद्या-न्नियतं ब्रह्मचारिणम् ।
तस्मै मां ब्रूहि विप्राय, निधिपायाप्रमादिने ।

—मनुस्मृति २।११४-११५

विद्या ब्राह्मण के पास आकर कहने लगी—मैं तेरी निधि हूं, मेरी रक्षा कर ! जो ईर्ष्यालु है, उसे मुझे मत दे ! तभी मैं विशेष शक्तिशाली बन सकूंगी । जिसे तू पवित्र और जितेन्द्रिय-ब्रह्मचारी समझता है, निधिवत् मेरी रक्षा करनेवाले उसी अप्रमादी छात्र को मुझे देना । (यह वर्णन निरुक्त २।४ में भी है)

३. विद्यया सहमर्तव्यं, न च देया कुशिष्यके ।
विद्ययालंकृतो मूर्खः, पश्चात् संपद्यते रिपुः ।

—सुभाषितरत्न भाण्डागार १६५

विद्या के साथ मर जाना चाहिये, किन्तु कुशिष्य को न देनी चाहिए क्योंकि विद्या से अलंकृत होने के बाद वह उलटा वैरी बन जाता है।

४. नही वंजर जमीं में फूल आते,
अकारथ बीज हैं, मेहनत के जाते।

५. अगर खाक पर फूंक मारेगा झूल,
तो अपनी ही आंखों में झोंकेगा धूल। —उर्दू शेर

६. चत्तारि अवायणिज्जा, पण्णत्ता, तं जहा—अविणीए,
विगइपडिबद्धे, अविउसवियपाहुडे, मायी॥

— **स्थानांगसूत्र** ४।३।३३६

चार व्यक्ति पढ़ाने के अयोग्य कहे हैं—(१) अविनीत, (२) स्वादेन्द्रिय में गृद्ध, (३) क्रोधी, (४) और कपटी।

इनसे प्रतिपक्षी ये चार पढ़ाने योग्य हैं—(१) विनीत, (२) स्वादेन्द्रिय में अगृद्ध, (३) क्षमाशील और (४) सरलहृदय।

★

२५ विद्या के भेद

१. 'विद्या दो प्रकार की होती है— **अपरा** और **परा**। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष—यह **अपराविद्या** है। जिसमें अक्षर-परमात्मा का ज्ञान हो वह **पराविद्या** है।

२. **चौदह विद्याएँ** :—

चत्वारो वेदाः, शिक्षा, कल्पो, व्याकरण-निरुक्त, छन्दो, ज्योतिरिति षडङ्गानीतिहास-पुराण-मीमांसा-न्याय-धर्मशास्त्रमिति चतुर्दशविद्यास्थानानि त्रयी।

—नीतिवाक्यामृत ७।१

चार वेद हैं—(१) प्रथमानुयोग, (२) करणानुयोग, (३) चरणानुयोग, (४) द्रव्यानुयोग। **वेदों के ६ अंग हैं**—(५) शिक्षा, (६) कल्प, (७) व्याकरण, (८) निरुक्त (९) छन्द, (१०) ज्योतिष, तथा (११) इतिहास-पुराण, (१२) मीमांसा, (१३) न्याय और (१४) धर्मशास्त्र ये चौदह विद्याए हैं।

विवेचन इस प्रकार हैं—

(५) **शिक्षा**—स्वर और व्यञ्जनादि वर्णों का शुद्ध उच्चारण और लेखन को बतानेवाली विद्या को 'शिक्षा' कहते हैं।

(६) **कल्प**—धार्मिक आचार-विचार या क्रियाकाण्डों (गर्भाधान आदि संस्कारों) के निरूपण करनेवाले शास्त्रों को 'कल्प' कहते हैं।

(७) **व्याकरण**—जिससे भाषा को शुद्ध लिखने, पढ़ने और बोलने का बोध हो उसे 'व्याकरण' कहते हैं।

(८) **निरुक्त**—यौगिक, रूढ़ और योग-रूढ़ शब्दों के प्रकृति और प्रत्यय-आदि का विश्लेषण करके प्राकरणिक, द्रव्य पर्यायात्मक या अनेक धर्मात्मक पदार्थ के निरूपण करनेवाले शास्त्रों को 'निरुक्त' कहते हैं।

(९) **छन्द**—पद्यों-वर्णवृत्त और मात्रावृत्त छन्दों के लक्ष्य और लक्षण के निर्देश करनेवाले शास्त्रों को 'छन्दशास्त्र' कहते हैं।

(१०) **ज्योतिष**—ग्रहों की गति और उससे विश्व के ऊपर होनेवाले शुभ-अशुभ फलों को तथा प्रत्येक कार्य के सम्पादन के योग्य शुभ समय को बतानेवाली विद्या को ज्योतिषविद्या कहते हैं।

इन शिक्षा आदि छहों अङ्गों के ज्ञान से ही चारों वेदोंका ज्ञान होता है।

इतिहास-पुराण—जिन शास्त्रों में प्राचीन इतिहास की बातें हों, वे 'इतिहास-पुराण' कहलाते हैं। इतिहास-पुराण वेदों के उपाङ्ग माने गए हैं।

(१२) **मीमांसा**—विभिन्न और मौलिक सिद्धान्तबोधक वाक्यों पर शास्त्राविरुद्ध युक्तियों द्वारा विचार करके समीकरण करनेवाली विद्या 'मीमांसा' कहलाती है।

(१३) **न्याय**—प्रमाण और नयों का विवेचन करनेवाला शास्त्र 'न्याय' कहलाता है।

(१४) **धर्मशास्त्र**—अहिंसादि धर्म के पूर्ण तथा व्यवहारिक रूप का विवेचन करनेवाले उपासकाध्ययन आदि शास्त्र 'धर्मशास्त्र' कहलाते हैं।

उक्त चौदह विद्यास्थानों को **त्रयीविद्या** कहते हैं।

विद्यार्थी

१. काकचेष्टा, बकध्यानं, श्वाननिद्रा तथैव च ।
अल्पाहार-विहारश्च, विद्यार्थी पञ्चलक्षणः ।

(१) काकवत् चेष्टा, (२) बकवत् ध्यान, (३) श्वानवत् निद्रा (४) अल्पाहारी, (५) अल्पविहार करनेवाला—ये पांच विद्यार्थी के लक्षण हैं ।

२. काम-क्रोधौ तथा लोभं, स्वादं शृंगार-कौतुके ।
अतिनिद्रातिसेवे च, विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत् ।

—**चाणक्यनीति ११।१०**

(१) काम, (२) क्रोध, (३) लोभ, (४) स्वादिष्ट-वस्तु, (५) शृंगार, (६) खेलतमाशा, (७) अतिनिद्रा, (८) अतिसेवा—ये आठों बातें विद्यार्थी को छोड़ देनी चाहिए ।

३. आलस्यं मदमोहौ च, चापलं गोष्ठिरेव च ।
स्तब्धता चाभिमानित्वं, तथा त्यागित्वमेव च ।
एते वै सप्त दोषाः स्युः, सदा विद्यार्थिनां मताः ।।

—**विदुरनीति ८।५**

सदैव विद्यार्थियों में पाये जानेवाले ये सात दोष माने गए हैं—(१) आलस्य का होना, (२) मद और मोह का होना, (३) चंचलता का होना, (४) संघ-सोसायटियों (गोष्ठी आदि) में तल्लीन रहना, (५) स्तब्धता अर्थात् नम्र होकर जड़वत् बने रहना, (६) अभिमान रखना और (७) त्याग की भावना का होना ।

४. सुखार्थी चेत् त्यजेद्विद्यां, विद्यार्थी चेत् त्यजेत् सुखम् ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या, सुखं विद्यार्थिनः कुतः ?

— चाणक्यनीति १०।३ ; विदुरनीति ८।६

यदि सुख चाहे तो विद्या को छोड़ दे और यदि विद्या चाहे तो सुख का त्याग कर दे । सुखार्थी को विद्या और विद्यार्थी को सुख कैसे होगा ?

५. **नन्हें बच्चों को पढ़ने का भय—**

कसाई चिल्लाते हुये बकरे को लेकर जा रहा था। नन्हें पुत्र ने पिता से उसका कारण पूछा। पिता ने कहा—मारने के लिये कसाई इसे कसाईखाने ले जा रहा है। विस्मित होकर पुत्र ने कहा—क्या यह मरने के डर से इतना रो रहा है ? मैंने तो समझा था कि इसे पढ़ने के लिये मास्टर के पास ले जा रहे हैं।

★

२७ विद्यार्थी और परीक्षा

१. एक विद्यार्थी ने परीक्षा में फेल हो जाने पर अपनी पत्नी की नाक काटली। उसका इसी वर्ष विवाह हुआ था। विवाह के कारण ही उसकी यह मनःस्थिति बिगड़ी—ऐसा उसका मानना है।

—नवभारत टाइम्स २४ मई १९६५

दियास (महाराष्ट्र) मांडवा की घटना

२. **विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता—** देश आजाद होने के बाद छात्रों में सबसे अधिक हड़तालें १९६४ में हुई। इस वर्ष, अब तक २६१ हड़तालें हुईं, जिनमें से २०७ कॉलेजों, ४३ स्कूलों और ११ विश्वविद्यालयों से संबंधित हैं। (प्रायः कॉलेज के छात्र ही अधिक अनुशासनहीन पाये गये)।

—नवभारत टाइम्स ६ जून १९६५, विचारप्रवाह से

३. **विद्यार्थियों की अप्रामाणिकता**—उत्तरप्रदेश के केन्द्र में परीक्षा हो रही थी। मित्र की सहायता के लिए एक छात्र मेहतर की लड़की बनकर आया और मित्र का प्रश्नपत्र ले गया। एक घंटा बाद उत्तर पत्र दे गया।

◆ बुलंदशहर में सौ से अधिक गेंदों में नकल के पर्चे भर

रखे थे। छात्र पेशाब के बहाने बाहर जाता और गेंद से पर्चा निकालकर ले आता। गेंद काटी हुई थीं।

—**हृषिकेश, २८ मार्च १९६५, अप्रेल हिन्दुस्तान से**

- मनरानापुर (झांसी) में बी० ए० के एक परीक्षार्थी ने परीक्षक की अंगुलियाँ दांतों से काट खाई। छात्र ने नकल का कागज मुंह में डाल रखा था, मुंह खोलते समय उक्त घटना घटी। —**हिन्दुस्तान २६ मार्च १९६४**
- अपने को परीक्षा में असफल देखकर एक छात्र ने दीवार पर लिखा—

हजारों की किस्मत तेरे हाथ है—
अगर पास कर दे तो क्या बात है!

अध्यापक ने उत्तर में लिखा—

किताबों की थप्पी तेरे पास थी,
अगर याद करता तो क्या बात थी?

४. **ज्ञान का दिवालियापन**—बैंगलोर १९ दिसम्बर १९६९ में पुलिसविभाग ने पुलिस-पदाधिकारियों के चयनार्थ इन्टरव्यू लिया। उसमें अनेक ग्रेजुएट एवं इतिहास के विद्यार्थियों ने ज्ञान का दिवाला निकाला।

प्रश्नोत्तर इस प्रकार थे—

प्र०—इंदिरा के आगे 'गांधी' शब्द क्यों?
उ०—महात्मा गांधी की पुत्री है।
प्र०—दलाईलामा कौन है?
उ०—एक जानवर।

प्र०—जाकिरहुसैन कौन हैं ?

उ०—पाकिस्तान के राष्ट्रपति ।

प्र०—राजगोपालचार्य कौन हैं ?

उ०—जयपुर के महाराजा एवं जगत प्रसिद्ध निशानेबाज।

प्र०—गंगा किधर बहती हैं ?

उ०—दक्षिण में । **—समाचार पत्र के आधार पर**

८. **परीक्षा में सफल कैसे हो** ?—

सर्वप्रथम ज्ञानप्राप्ति के लक्ष्य से पढ़ना, व्यवस्थित ढंग से पढ़ना (अत्यधिक पढ़ना निषिद्ध है), अधिक न बोलकर ध्यानपूर्वक धीरे-धीरे पढ़ना, एकान्त एवं शान्त वातावरणवाले स्थान में पढ़ना (विषय-वासना को जागृत होने का अवसर मिले ऐसे स्थान में पढ़ना निषिद्ध है), पाठ्य पुस्तक के सभी विषयों को महत्त्व देते हुए सबका अध्ययन करना, आवश्यक अंशों का नोटस् बनाते हुए पढ़ना, पुराने प्रश्नपत्र एवं गैसपेपर ध्यानपूर्वक देखना, प्रश्नपत्र मिलने पर उसे ध्यानपूर्वक पढ़ना, जिन प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह याद हों उन्हें सबसे पहले करना, लेकिन ऐसा न हो कि एक-दो प्रश्नों में सारा समय लग जाए एवं शेष प्रश्न यों ही रह जाएँ। इन सब बातों को ध्यान में रखनेवाला विद्यार्थी प्रायः परीक्षा में सफल होता है ।

—'पंकजकुमार', हिन्दुस्तान ६ मार्च १९६९

★

१. कुछ वस्तुओं के विषय में सब कुछ और सब वस्तुओं के विषय में कुछ-कुछ जानना ही वास्तविक शिक्षा है।
—एक अध्येता

२. शिक्षा माता के चरणों से प्रारम्भ होती है।
—कैथराल

३. शैशव की बातों में कहा गया प्रत्येक शब्द बच्चों का चरित्र-निर्माण करता है। —बैल

४ विद्यालयों—महाविद्यालयों में पढ़ाई गई शिक्षा, शिक्षा नहीं, एक साधन-मात्र है। —इमर्सन

५. वास्तविक शिक्षा तभी मिलती है, जब आदमी विद्यालय—विश्वविद्यालय से निकलता है।
—संत निहालसिंह

६. शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधार स्तम्भ हैं—अधिक निरीक्षण, अधिक अनुभव, अधिक अध्ययन।

७. प्रत्येक व्यक्ति को दो शिक्षाएँ मिलती हैं—एक तो दूसरों से प्राप्त, दूसरी स्वयं से उद्भूत। —गिबन

८. मैंने बातून से मौन, असहिष्णु से सहिष्णुता एवं निर्दय से दयालुता सीखी है। —खलील जिब्रान

९. स्थाणुरयं भारहारः किलाभूद्,
अधीत्य वेदं न जानाति योऽर्थम् ।

—निरुक्त १।१८

जो वेद को पढ़कर उसके अर्थ को नहीं जानता, वह बोझ से लदे हुए स्थाणु-खंभ के समान है ।

१०. वह शिक्षित आलसी है, जो कोरे अध्यापन द्वारा अपने समय का नाश करता है । **—बर्नार्डशा**

★

२६ शिक्षा-ग्रहण

१. डहरेण बुड्ढेणणुसासिए उ, राइणिएणावि समव्वएणं।
सम्मं तयं थिरतो णाभिगच्छे, णिज्जंतएवाविअपारए से।

—**सूत्रकृतांग १४।७**

गुरु-निकटवर्ती साधु को कोई बालक, वृद्ध, आचार्य या समान-वय वाला साधु शिक्षा देवे और जो उसे स्वीकृत न करे, वह साधु संसार का अन्तकर्ता नहीं होता।

२. अट्ठजुत्ताणि सिक्खिज्जा, निरट्ठाणि उ वज्जए।

—**उत्तराध्ययन १।८**

अर्थयुक्त (सारभूत) बातें सीखिए, निरर्थक बातें छोड़ दीजिए।

३. पहले वह सीखो, जो आवश्यक हो,
फिर वह सीखो, जो उपयोगी हो।
फिर वह सीखो, जिससे प्रतिष्ठा बढ़े।

—**सिगुरिनी**

४. शिक्षा ग्रहण करने की तीन सीढ़ियाँ—
(१) ज्ञानी विवेक से सीखते हैं, (२) मूर्ख आवश्यकता से सीखते हैं और (३) पशु अनुसरण से सीखते हैं।

—**सिसरो**

५. दृश्य-अदृश्य पदार्थ जो, सबसे मिलता ज्ञान।
लेने वाले ले रहे, भूले पड़े अजान।

—**दोहासंदोह**

६. सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, समुद्र, वृक्ष आदि प्रत्येक प्राकृतिक वस्तुओं से कुछ न कुछ सीखो !

(तर्ज—दिल्ली चलो !)

सीख जाओ-सीख जाओ-सीख जाओ जी !
इन कुदरती चीजों से कुछ सीख जाओ जी ।। ध्रुवपद।।

खिले हुए फूलों से भइया ! खिलना सीख लो !
दूध और पानी से असली मिलना सीख लो !
गंगाजल से निर्मल रहना सीख जाओजी ! इन०।।१।।

फले हुए वृक्षों से नीचे झुकना सीख लो !
पतझड़-वृक्षों से तुम धीरज रखना सीख लो !
बारिश से निस्वार्थदान तुम सीख जाओ जी ! इन०।।२।।

अग्नि और धूएँ से ऊँचा चढ़ना सीख लो !
इस हवा से अप्रतिबद्ध-विचरना सीख लो !
वसुन्धरा से गम का खाना सीख जाओ जी ! इन०।।३।।

रवि-किरणों से जगना और जगाना सीख लो !
दीपक से अज्ञान-अंधेर मिटाना सीख लो !
सागर से गभीरता तुम सीख जाओ जी !इन०।।४।।

सत्य-सरलता दो बातें बचपन से सीख लो !
यौवन की अस्थिरता बूढ़ापन से सीख लो !
सीख-सीख **धन** ऐसे भवसागर तर जाओ जी ! इन०।।५।।

७. बांटकर खाना किसने सिखाया ?
भय और प्रेम ने ।

- लूटकर खाना किसने सिखाया ?
  भूख और बेसब्री ने।
- बेईमानी करना किसने सिखाया ?
  आलस्य और फिजूल खर्ची ने।
- कमाकर खाना किसने सिखाया ?
  अहंकार और आत्मसम्मान ने।

—अमरभारती मार्च १९६७ पृष्ठ २६

८. विनयं राजपुत्रेभ्यः पण्डितेभ्यः सुभाषितम्।
अनृतं द्यूतकारेभ्यः स्त्रीभ्यः शिक्षेत कैतवम्॥

—चाणक्यनीति १२।१९

विनम्रता राजपुत्रों से, प्रिय वचन पण्डितों से, असत्य जुआरियों से और छल स्त्रियों से सीखना चाहिए।

८. सिंहादेकं बकादेकं, शिक्षेच्चत्वारि कुक्कुटात्।
वायसात् पञ्च शिक्षेत, षट् शुनस्त्रीणि गर्दभात्।

—चाणक्यनीति ६।१५

सिंह से एक, बगुले से एक, कुक्कुट से चार, कौवे से पाँच, कुत्ते से छः और गधे से तीन गुण सीखने चाहिये !

सिंह से एक—छोटा-बड़ा कोई भी करने योग्य कार्य पूरे प्रयत्न से करना।

बक से एक—देश, काल, एवं बल के अनुसार इन्द्रियों का संयम करके काम सिद्ध करना।

कुक्कुट से चार—जल्दी उठना, युद्ध के लिए तैयार रहना, बन्धुओं को हिस्सा देना एवं आक्रमण करके भोजन करना।

काक से पांच—(१) गुप्त-मैथुन, (२) धृष्टता, (३) समय पर संग्रह करना, (४) सावधान रहना एवं (५) विश्वास नहीं करना।

कुत्ते से छः—(१) बहुत खा सकना, (२) थोड़े में संतुष्ट होना, (३) सुख से सोना, (४) जल्दी जागना, (५) स्वामि-भक्ति, (६) वीरता।

गदहे से तीन— (१) थकने पर भी भार ढोते रहना, (२) सर्दी-गर्मी की परवाह न करना, (३) सदा संतुष्ट रहना।

१०. तदेतदेवैषा दैवीवागनुवदति स्तनयित्नुर्ददद इति। दम्यतदत्त दयध्वमिति तदेतत् त्रयं शिक्षेद्दमं दानं दयामिति॥

—**बृहदारण्यकोपनिषद् ५।२।३**

मेघ आज भी गरज-गरजकर प्रजापति का यह संदेश दोहराते हैं—"द-द-द" अर्थात् दमन करो! दान करो!! दया करो!!!

एकदा देव, मनुष्य और दानव ज्ञानप्राप्ति के लिए **रुचि** प्रजापति के पास आये। प्रजापति ने गम्भीर ध्वनि से "द-द-द" इस मन्त्र का उच्चारण किया अर्थात् इन्द्रियदमन करो, दान करो और दयावान बनो - ऐसा उपदेश दिया। (भगवान महावीर ने इसी मंत्र द्वारा इन्द्र-भूति की **जीव है या नहीं**—इस शंका का समाधान किया था)।

११. रबिया (इस्लामधर्म की साध्वी) ने एक सूफी-संत के पास मोम, सूई और बाल—ये तीन चीजें भेजकर संदेश दिया कि मोम की तरह जलकर दूसरों को रोशनी दो! सूई नंगी रहकर भी दूसरों को कपड़े सीकर पहनाती है—तुम भी विश्व की निःस्वार्थ सेवा करो! ऐसा करने से तुम बाल की तरह लचकीले, इलाम और बेखतर हो जाओगे। ●

३० शिक्षादान

१. जो सीखो, किसी को सिखाते चलो !
दिये से दिये को जलाते चलो !
दिखा दो जो कुदरत ने जौहर दिया ।
जलाओ न मटके के अन्दर दिया ! —उर्दू शेर

२. कटुता से हितसीख भी, बन जाती प्रतिकूल ।
किरकिराट होती अगर, मिली खांड में धूल ।
—तात्त्विक-त्रिशती २०६

३. शिक्षा तस्मै प्रदातव्या, यो भवेत् तत्र यत्नवान् ।
— विवेकविलास

शिक्षा उसे देनी चाहिए, जो उसके लिए प्रयत्नशील हो !

४. सीख उन्हीं को दीजिए, जाके हिये सुहाय ।
सीख बन्दर कूं देवतां, घर बैया का जाय ।
—राजस्थानी दोहा

५. यदि अपने घर की सीढ़ियां मैली हैं तो दूसरों को छत पर पड़ी गंदगी की शिकायत मत करो !

३१ शिक्षा के योग्य-अयोग्य पात्र

१. अह अट्ठहिं ठाणेहिं, सिक्खासीलेत्ति वुच्चइ ।
अहस्सिरे सयादन्ते, न य मम्ममुदाहरे ।।
नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए, सिक्खासीलेत्ति वुच्चई ।।

—उत्तराध्ययन ११।४-५

आठ गुणोंवाला व्यक्ति शिक्षा प्राप्त करनेवाला होता है—
(१) हास्य न करनेवाला, (२) इन्द्रियदमन करनेवाला, (३) श्रेष्ठआचारवाला, (४) मर्म को न बतानेवाला, (५) अखण्डितआचारवाला, (६) रसों में आसक्त न होनेवाला, (७) अक्रोधी, (८) सत्य में रक्त ।

२. अह पंचहिं ठाणेहिं, जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थंभा कोहा पमाएणं, रोगेणालस्सएण य ।

—उत्तराध्ययन ११।३

शिक्षा प्राप्त न होने के पाँच कारण हैं—(१) अभिमान, (२) क्रोध, (३) प्रमाद, (४) रोग, (५) आलस्य ।

३. तओ दुसन्नप्पा पण्णत्ता, तं जहा—दुट्ठे, मूढे, वुग्गहिए !
तओ सुसन्नप्पा पण्णत्ता, तं जहा—अदुट्ठे, अमूढे, अवुग्गहिए ।

—स्थानांग ३।४

इन तीनों को समझाना कठिन कहा है—(१) दुष्ट (ज्ञानियों के द्वेषी) को, (२) मूढ़ (गुण-दोष के अनजान) को, (३) व्युद्ग्राहित (कुगुरु के बहकाये हुए) को।

तीनों को समझाना सरल है—(१) अदुष्ट को, (२) अमूढ़ को, (३) अव्यद्ग्राहित को।

४. अज्ञः सुखमाराध्यः, सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विग्धं, ब्रह्मापि तं नरं न रञ्जयति।

—भर्तृहरि-नीतिशतक ३

अज्ञानी को समझाना सरल है और विशेषज्ञानी को समझाना उससे भी सरल है; किन्तु थोड़ा ज्ञान होने पर अपने आपको पण्डित माननेवाले व्यक्ति को ब्रह्मा भी रञ्जित नहीं कर सकता।

●

१. **तीन बातें ध्यान में रखो**—(१) भगवान का नाम (२) दूसरों का सम्मान (३) अपने सभी दोष।

२. **तीन बातें याद रखो**—(१) व्यापार के बिना धन नहीं बढ़ता, (२) चर्चा के बिना ज्ञान नहीं बढ़ता, (३) प्रभाव के बिना शासन नहीं चलता। **—शेखसादी**

३. **तीन बातें याद रखो**—(१) सुख का मूल धर्म है (२) धर्म का मूल दया है, (३) दया का मूल विवेक है।

४. **तीन बातें करो**—(१) प्रेम सबसे करो (२) विश्वास थोड़ों का करो (३) बुरा किसी का मत करो!

५. **दो बातें कभी न करो**—(१) प्रेम में वहम (२) प्रतिज्ञा में अहम्। **—गांधी**

६. **तीन बातें मत देखो**—(१) अपने गुण, (२) दूसरों के दोष, (३) दुर्जनों का महत्त्व।

७. **तीन बातें देखो**—(१) अपने दोष, (२) दूसरों के गुण, (३) सज्जनों का महत्त्व।

८. **तीन बातें मत खोलो**—(१) पराया छिद्र, (२) अपना पुण्य, (३) गुप्त शुभ-मन्त्रणा।

९. **तीन बातें खोल दो**—(१) अपने पाप, (२) दूसरों का गुण, (३) परोपकार के साधन।

१०. **तीन से सदा सच्चे रहो**—(१) हाथ से, (२) कान से, (३) जीभ से।

११. **तीन के सदा पास रहो**—(१) सज्जनों के, (२) सत्य शास्त्रों के, (३) स्वीकृत नियमों के।

१२. **तीन का सम्मान करो**—(१) बूढ़ों का, (२) विद्वानों का, (३) निर्धनों का।

१३. **तीन की सेवा में कभी संकोच न करो**—(१) अपने मित्र की, (२) अपनी धर्मपत्नी की, (३) द्वार पर आये अतिथि की।

१४. **तीन को मत रोको**—(१) दान देनेवाले दाता को, (२) धर्म-प्रचार करनेवाले संत को, (३) सेवा करनेवाले सेवक को।

१५. **तीन बनने से बचो**—(१) महन्त बनने से, (२) नेता बनने से, (३) मालिक बनने से।

१६. **तीन बनो**—(१) नम्र, (२) सरल, (३) सुशील।

१७. **तीन न बनो**—(१) कृतघ्न, (२) अभिमानी, (३) मायावी।

१८ **तीन में देर करो**—(१) मुकदमेबाजी में, (२) लड़ाई-झगड़े में, (३) दोष का निर्णय करने में।

१९. **तीन समय पर रुको**—(१) क्रोध के समय, (२) काम-वासना के समय, (३) लोभ के समय।

२०. **तीन कार्य नित्य करो**—(१) श्रेष्ठ ग्रन्थों का स्वाध्याय, (२) भगवान का ध्यान, (३) निज दोषों का चिन्तन।

२१. **तीन में मर्यादा रखो**—(१) खाने-पीने में, (२) सोने-बैठने में, (३) बड़े-छोटे की ।

२२. तीन पाकर कभी न फूलो—(१) धन-सम्पत्ति, (२) पराई निन्दा, (३) अपनी प्रशंसा ।

२३. **तीन की कीमत तीन से पूछो**—(१) धन की गरीब से (२) आरोग्य की बीमार से, (३) जवानी की बूढ़ों से।

—तीन बात पुस्तक से

२४. **चार की बात पर गौर करो**—(१) माता-पिता की, (२) अनुभवी की, (३) मित्र की, (४) धर्मपत्नी की ।

२५. **दो पर अमल करो**—(१) कहो वह जो सच्चा हो, (२) करो वह जो अच्छा हो ।

२६. **चार शिक्षाएँ**—

(१) जुआ खेलने का दिल हो तो जुआरी को खाना खाते देखो ! (२) मिठाई खाने का मन हो तो उसे बनाते समय देखो ! (३) वेश्या के पास जाने को इच्छा हो तो उसे सुबह के वक्त देखो । (४) राजपुरुष से प्रेम करना हो तो पहले जरा अपना कार्य करवा कर देखो !

चौथा कोष्ठक

१ विद्वान्

१. सत्यं तपो ज्ञानमहिंसिता च,
विद्वत् प्रणामश्च सुशीलता च।
एतानि यो धारयते स विद्वान्,
न केवलं यः पठते स विद्वान्।

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ४०

सत्य, तपस्या, अहिंसकता, विद्वत्प्रणमन, सुशीलता—इन गुणों को जो धारण करता है, वही वास्तव में विद्वान् होता है। केवल पढ़लेने मात्र कोई विद्वान् नहीं होता।

२. स खलु सुधीर्योऽमुत्र सुखाविरोधेन सुखमनुभवति॥

—नीतिवाक्यामृत १।४७

निश्चय ही वह मनुष्य बुद्धिमान होता है, जो परलौकिक सुख का घात न करता हुआ, सुखों का अनुभव करता है तथा न्याय प्राप्त भोगों को भोगता है।

३. वेश्यानामिव विद्यानां, मुखं कैः कैर्न चुम्बितम्।
हृदयग्राहिणस्तासां, द्वित्राः सन्ति न सन्ति वा॥

—सुभाषितरत्नभाण्डागार पृष्ठ ४०

वेश्याओं के मुख की तरह विद्याओं के मुख का चुम्बन तो अनेकों ने किया है, किन्तु उन विद्याओं को हृदय में धारण करनेवाले व्यक्ति जगत में दो-तीन हैं अर्थात् विरले ही हैं।

४. विशोक आनन्दमयो विपश्चित्,
स्वयं कुतश्चिन्न, बिभेति कश्चित् ।

विद्वान् शोकरहित एवं आनन्दमय होता है, वह किसी से भय नहीं खाता ।

५. हंसो विभाति नलिनीदलपुञ्जमध्ये,
सिंहो विभाति गिरिगह्वरकन्दरासु ।
जात्यो विभाति तुरगो रणभूमिमध्ये,
विद्वान्विभाति पुरुषेषु विचक्षणेषु ।। —**विल्हणकवि**

जैसे कमलिनी के पत्तों में हंस, गिरि-कन्दराओं में सिंह और रणभूमि में जातिमान घोड़े शोभा पाते हैं, उसी प्रकार विद्वान्-पुरुष पंडितों में शोभित होते हैं ।

६. हंसो न भाति बलिभोजनवृन्दमध्ये,
गोमायुमण्डलगतो न विभाति सिंहः ।
जात्यो न भाति तुरगः खरयूथमध्ये,
विद्वान् न भाति पुरुषेषु निरक्षरेसु । —**विल्हणकवि**

जैसे कागों के समूह में हंस, गीदड़ों के मण्डल में सिंह तथा गदहों के समूह में जातिमान घोड़ा शोभित नहीं होता, उसी प्रकार मूर्खमण्डली में विद्वान् भी शोभा नहीं पाते ।

७. विद्वानेव हि जानाति, विद्वज्जनपरिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति, गुर्वी-प्रसववेदनाम् ।।
—**कुवलयानन्द**

विद्वान् के परिश्रम को विद्वान् ही जान सकता है । बाँझस्त्री गर्भिणी की पीड़ा कैसे जान सकती है ?

८. बांझ कांई जाणैं जणनरी पीड़ा । —**राजस्थानी कहावत**

९. बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद ! —**हिन्दी कहावत**

१०. शूर को शूर, सती को सती,
अरु दास जती को जती पहचाने ।

—**भाषाश्लोक सागर**

११. काव्यशास्त्र-विनोदेन, कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन हि मूर्खाणां, निद्रया कलहेन वा ।।

—**हितोपदेश १।१**

विद्वानों का समय काव्यशास्त्रों के विनोद में व्यतीत होता है एवं मूर्खों का व्यसन, निद्रा तथा लड़ाई में ।

१२. प्रातर्द्यूतप्रसङ्गेन, मध्याह्ने स्त्रीप्रसङ्गतः ।
रात्रौ चौरप्रसङ्गेन, कालो गच्छति धीमताम् ।।

—**चाणक्यनीति ६।११**

विद्वानों का प्रातःकाल द्यूत का प्रसंग (महाभारत) सुनने में, मध्याह्न स्त्री का प्रसंग (रामायण) सुनने में और रात का समय चोरों की कथा (कृष्णचरित्र-भागवत) सुनने में व्यतीत होता है ।

१३. विद्वत्त्वं च नृपत्वं च, नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।।

—**पञ्चतन्त्र २।५६**

विद्वत्ता और राजापन कभी बराबर नहीं होते क्योंकि राजा अपने देश में पूजा जाता है और विद्वान सब देशों में ।

१४. विद्वान् सरल से मिलो, विद्वान् दुष्ट से बचते रहो !
सरल मूर्ख पर दया रखो और दुष्ट मूर्ख से बचते रहो !

१५. जो जानता नहीं, और यह भी नहीं जानता कि मैं कुछ भी नहीं जानता, **वह मूर्ख** है, उसे छोड़ दो !
जो जानता नहीं, पर अपने अज्ञान को समझता है वह **साधारण पुरुष है** उसे सिखाओ !
जो जानता है, पर उसे भान नहीं है कि मैं कुछ जानता हूं, वह **सुप्त है** उसे जगाओ !
जो जानता है और उसे ज्ञान भी है कि मैं कुछ जानता हूं, वह **विद्वान् है**, उसका अनुसरण करो !

—एक इंग्लिश विचारक

१६. साक्षरा विपरीताश्चेद्, राक्षसा एव केवलम् ।
साक्षर अर्थात् पढ़े-लिखे विद्वान् जब प्रतिकूल हो जाते हैं तब ठीक राक्षस का काम करने लगते हैं ।

२ बुद्धि का महत्व

१. अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा। —चाणक्यनीति ५।११

बुद्धि अज्ञान को नाश करनेवाली है।

२. प्रज्ञाह्यमोघं शस्त्रं कुशलबुद्धीनाम्।

—नीतिवाक्यामृत २१।५

प्रज्ञा-कुशल-बुद्धिवालों का अमोघशस्त्र है।

३. बुद्धिबोध्यानि शास्त्राणि, नाबुद्धिः शास्त्रबोधकः।
प्रत्यक्षेऽपि कृते दीपे, चक्षुर्हीनो न पश्यति॥

शास्त्रों का बोध बुद्धि से होता है, अबुद्धि से नहीं। दीपक सामने होने पर भी चक्षुहीन व्यक्ति देख नहीं सकता।

४. मतिरेव बलाद् गरीयसी, यदभावे करिणामियं दशा।

—हितोपदेश २।८६

बल की अपेक्षा बुद्धि बड़ी है। उसके अभाव में ही बलवान हाथी मनुष्य की सवारी बन रहा है।

५. अकल बिना नो आंधलो, पैसा बिना नो पांगलो।

—गुजराती कहावत

६. उपायेन हि यत्कुर्यात्, तन्न शक्यं पराक्रमैः।

—पंचतन्त्र १।२२८

बुद्धिमय उपाय से जो काम किया जाता है, वह पराक्रम से नहीं किया जा सकता।

७. बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेश्च कुतो बलम् ।
वने सिंहो मदोन्मत्त, शशकेन निपातितः ।।

—**चाणक्यनीति १०।१६**

जिसके पास बुद्धि है, उसी के पास बल है । निर्बुद्धि के पास बल कहाँ ? देखो ! खरगोश ने बन में मदोन्मत्त सिंह को मार डाला ।

८. बल सूं बुद्धि आगली, जो उपजै तत्काल ।
बानर-सिंह विगोविया, एकलड़ै सियाल ।।

◆ इणरो नाम है आकण-माकण, इणमें पूरो रस ।
आगे ही खल मण छः खाग्यो, आ खासूँ मण दस ।।

◆ सौ की हो गई सींधड़ी, पच्चासाँ की दड़ी ।
आछी म्हारी एकली, लंबे खाल खड़ी ।।

—**राजस्थानी कथाओं के दोहे**

●

३ बुद्धि के भेद

१. चउव्विहा बुद्धि पण्णत्ता, तं जहा—१ उप्पइया २ विणइया ३ कम्मिया ४ परिणामिया।

—**स्थानांग** ४।४।३६४

चार प्रकार की बुद्धि कही है—(१) यथा औत्पातिकी, (२) वैनयिकी, (३) कार्मिकी, (४) पारिणामिकी।

२. चउव्विहा बुद्धि पण्णत्ता तं जहा - (१) अरंजोदगसमाणा, (२) विदरोदगसमाणा, (३) सरोदगसमाणा, (४) सागरोदगसमाणा।

—**स्थानांग** ४।४

चार प्रकार की बुद्धि कही है—(१) **घट-जल** के समान परिमित अर्थ को धारण करनेवाली, (२) **कूपजल** के समान नए-नए अर्थ को ग्रहण करनेवाली, (३) **तालाब के पानीवत्** बहुत अर्थ का लेन-देन करनेवाली (लोकोपकारिणी), (४) **समुद्रजल के तुल्य** अथाह तत्त्व को धारण करनेवाली।

३. गीता में तीन प्रकार की बुद्धि कही है—सात्त्विकी, राजसी तथा तामसी। विवेचन यथा—

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च, कार्याकार्ये भयाभये ॥
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति, बुद्धिः सा पार्थ ! सात्त्विकी ॥
यया धर्ममधर्मं च, कार्यं चाकार्यमेव च ॥
अयथावत्प्रजानाति, बुद्धिः सा पार्थ ! राजसी ॥

अधर्मं धर्ममिति या, मन्यते तमसावृता ।।
सर्वार्थान् विपरीतांश्च, बुद्धिः सा पार्थ ! तामसी ।।

—**गीता अध्याय १८।३०-३१-३२**

जो बुद्धि प्रवृत्ति-निवृत्तिमार्ग[1] को, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को, भय-अभय को और बंध-मोक्ष को तत्त्व से जानती है। हे अर्जुन ! वह **सात्त्विकीबुद्धि** है।

जिस बुद्धि के द्वारा मनुष्य धर्म-अधर्म एवं कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य को यथार्थ रूप से नहीं जानता, वह **राजसीबुद्धि** है।

तमोगुण से आवृत जो बुद्धि अधर्म को धर्म मानती है और सब पदार्थों को विपरीत समझती है, वह **तामसीबुद्धि** है।

४. तीन प्रकार की बुद्धि—

तेलिया—पानी में तेलबिन्दु की तरह फैलनेवाली।

मोतिया—मोती में किये गये छिद्रवत्, समान रूप से रहनेवाली।

नमदा—कम्बल आदि में किये गये छिद्र की तरह नष्ट हो जानेवाली।

---

१ घर में रहकर फल और आसक्ति को त्यागकर भगवत्-अर्पण-बुद्धि से केवल लोकशिक्षा के लिये राजा जनक की तरह प्रवृत्ति करना **प्रवृत्तिमार्ग** है।

देहाभिमान को त्यागकर केवल सच्चिदानन्दघन परमात्मा में एकीभाव से स्थित शुक-सनकादिवत् संसार से उपरत होकर विचरना **निवृत्तिमार्ग** है।

५. चार प्रकार की बुद्धि—

(१) सेवाबुद्धि, (२) कर्त्तव्यबुद्धि, (३) उपकारबुद्धि, (४) स्वार्थबुद्धि।

सेवाबुद्धिवाला सफलता को मुख्यता देता है।

कर्त्तव्यबुद्धिवाला जिम्मेदारी से पीछे **नहीं** हटता।

उपकारबुद्धिवाला अहसान करना चाहता है।

स्वार्थबुद्धिवालों के लिए कहावत है—

गंजेड़ी यार किसके, दम लगाया; खिसके।

४ सुबुद्धि एवं कुबुद्धि

१. सुमति के बिना शान्ति केवल मूर्खता और पागलपन है।

—शेखसादी

२. जहाँ सुमति, तहां सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति, वहाँ विपति निदाना॥

—रामचरितमानस

३. **कबीर** ! कुबुद्धि संसार में, घट-घट मांहि अड़ी।
किन-किन को समझाइये, कुवै भांग पड़ी॥

४. **बुद्धि का सुधार एवं बिगाड़—**

धर्माख्याने श्मशाने च, रोगिणां या मतिर्भवेत्।
सा सर्वदैवतिष्ठेच्चेत् कोन मुच्येत बन्धनात्॥
उत्पन्नपश्चात्तापस्य, बुद्धिर्भवति यादृशी।
तादृशी यदि पूर्वे स्यात्, कस्य न स्यान्महोदयः॥

—**चाणक्यनीति** ४।६-७

धर्मावस्था में मरघट में और रोगावस्था में जो बुद्धि होती है, वह यदि सदा रह जाय तो कौन बन्धनों से मुक्त न हो! पश्चात्ताप के समय जैसी बुद्धि होती है, वह यदि पहले हो जाय तो हर एक को मोक्ष मिल जाए।

५. काम क्रोध जल आरसी, शिशु त्रिया मद फाग।
होत सयाने वावरे, आठबात चित लाग॥

५ बुद्धि एवं उसके फल और गुण

१. बुद्ध्यतेऽनयेति बुद्धिः । —स्थानांग टीका

जिसके द्वारा बोध हो, उसे बुद्धि कहते हैं ।

२. ज्ञान तो अध्ययन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु बुद्धि महान् अनुभवों के बीच उत्पन्न होती है ।

—निर्मला हरवंशसिंह

३. बुद्धेः फलमनाग्रहः ।

आग्रह न करना ही बुद्धि का फल है ।

४. बुद्धेः फलं तत्त्वविचारणं च, देहस्य सारं व्रतधारणं च ।

बुद्धि का फल है, तत्त्व का विचार करना और मनुष्यदेह पाने का सार है, व्रत धारण करना ।

५. उदीरितोऽर्थः पशुनापि गृह्यते,
हयाश्च नागाश्च वहन्ति नोदिताः ।
अनुक्तमप्यूहति पण्डितो जनः,
परेङ्गितज्ञानफला हि बुद्धयः ॥

—हितोपदेश २।४९

कहा हुआ तथ्य तो पशु भी ग्रहण कर लेते हैं । प्रेरणा के अनुसार घोड़े-हाथी चलते ही हैं । बुद्धिमान व्यक्ति बिना कहे अर्थ जान लेता है । दूसरे के इङ्गित का ज्ञान कर लेना ही बुद्धि का फल है ।

६. सुश्रूषा श्रवणं चैव, ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहोपोहोर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धी-गुणाः ॥

—**अभिधानचिन्तामणि** २।२२४-२२५

(१) सुनने की इच्छा करना (२) सुनना, (३) सुनकर तत्त्व को ग्रहण करना, (४) ग्रहण किये हुए तत्त्व को हृदय में धारण करना, (५) फिर उस पर विचार करना, अर्थात् उसे तर्क की कसौटी पर कसना, (६) विचार करने के पश्चात् उसका सम्यक् प्रकार से निश्चय करना, (७) निश्चय द्वारा वस्तु को समझना, (८) अन्त में उस वस्तु के तत्त्व की जानकारी करना—ये आठ बुद्धि के गुण हैं।

७. यः सततं परिपृच्छति, श्रृणोति संधारयत्यहर्निशम्।
तस्य दिवाकरकिरणै-र्नलिनीव वर्धते बुद्धिः ॥

— **पञ्चतन्त्र** ५।८८

जो बार-बार पूछता है, सुनता है और दिन-रात याद करता रहता है। सूर्य-किरणों से कमलिनीवत् उसकी बुद्धि बढ़ती है।

८. बुद्धिरूपी हाथी पर अध्यात्मवाद का अंकुश चाहिए।

६ अक्ल के विषय में कहावतें

१. अकल हिया सूं उपजै, दीधा लागे डाम।
२. अकल उधारी ना मिले, हेत न हाट विकाय।

—राजस्थानी कहावतें

३. दीधी मत न माँगी तोण केटला दिवस चाले।

—गुजराती कहावत

४. मांरै पेट में सीख र कोई को आयोनी।

—राजस्थानी कहावत

५. ठोकरों खाता होशियार थाय,
लाख खाय त्यारे लाख नो थाय।
घाट-घाट नो पाणी पीये त्यांरे धड़ाय,
बत्रीश गोदा थाय त्यांरे बत्रीशलक्षणो थाय,
घणा टकोर खाय त्यांरे, पाको थाय।

—गुजराती कहावतें

६. पड़ता-पड़ता ही सवार हुवै, आखड्यां चेतो हुवै।
७. गाम कोटवाली सिखाय दै।

—राजस्थानी कहावतें

८. ठेकले बुद्धि पावे जाय। —बंगाली कहावत

९. अकल बड़ी के भैंस। —राजस्थानी कहावत

१०. पाघड़ी पहेरवाथी ज, भायड़ा थवाय नहीं ।

११. अकल कोई ना बापनी छे ! —गुजराती कहावतें

१२. स्यालियै वाली बुद्धि नेड़ा आयां घटती जावै ।

—राजस्थानी कहावत

१३. आम के आम गुठली के दाम ।

१४. आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से ।

—हिन्दी कहावतें

७ बुद्धिमत्ता

१. सा प्राज्ञता या न करोति पापं,
दम्भं विना यः क्रियते स धर्मः ॥

प्राज्ञता वही है, जो पाप न करे और धर्म वही है, जो निष्कपट भाव से किया जाये !

२. तच्चातुर्यं यत् परप्रीत्या, स्वकार्यसाधनम् ।

—नीतिवाक्यामृत

दूसरों के प्रेम से अपना कार्य कर लेना चतुरता है ।

३. बुद्धि वाही जानिये, जे सेवै जिनधर्म ॥
वा बुद्धि किण कामरी, जे पड़िया बांधे कर्म ।

—श्री भिक्षु गणी

४. बुद्धिमत्ता केवल सत्य में वास करती है । —गेटे

५. बुद्धिमत्ता के दक्षिणहस्त में दीर्घायु है एवं वामहस्त में अतुल धन-सम्पत्ति और सम्मान । —बाइबिल

६. चातुर कन्हैया जू पै बाला जुर आई-आठ,
कहो जु कन्हैया ! आज हमको दिलाइये !
गोद लेहो फूल देहो नाक न पिन्हाओ मोती,
पातल की पातरी हुताश प्यास लाइये !
ऊँचे से झरोखे मोहन ! बैसारो मोहि,
रतिपति की सूरत चलो सेझ जाइये !

"वारी ना" उत्तर एक दयो भेद सबे लह्यो,
ऐसी जग लाल ! तेरी युक्ति को सराहिये !

७. साख एक गीदड़सिंह जी की, साख एक लूंकड़सिंह जी की। —**'बनिये की बुद्धिमत्ता' कहानी के आधार पर**

८. वि० सं० २०१८ राजलदेसर में एक जाट-जाटणी के पास एक पाव अफीम पकड़ी गयी। थानेदार जाट को थाने में ले गया। जाटणी वहां गयी। उसने थानेदार से कहा—६-६ बच्चे हैं, इतना-इतना अफीम देने पर ही काम करने देते हैं। ऐसे कहकर जाट की ओर मुड़कर, **चाल रे मनोहरिया रा काका** कहती हुई जाट का हाथ पकड़कर ले गई। थानेदार हँसता ही रह गया।

८ बुद्धिमान

१. यो विद्याविनीतमतिः स बुद्धिमान् ।

—नीतिवाक्यामृत ५।३२

जो ज्ञान एवं नम्रतायुक्त है, वह बुद्धिमान है ।

२. केह् ने पूछा—बुद्धिमान कौन ?

कांगफ्यूत्सी ने कहा—जिसका आचरण शुद्ध है, जो सही रास्ते पर चलता है और जो अति नहीं करता ।

३. बुद्धिमान बनने के दो उपाय—

(१) थोड़ा पढ़ना अधिक सोचना ।

(२) थोड़ा बोलना अधिक सुनना ।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

४. बुद्धिमान अपने अनुभवों से और अधिक बुद्धिमान दूसरों के अनुभवों से सीखता है । **—चीनी सुभाषित**

५. किमज्ञेयं हि धीमताम् । **—कथासरित्सागर**

बुद्धिमानों के लिये अज्ञेय कुछ भी नहीं है ।

६. अपने प्रति बुद्धिमान बनने की अपेक्षा दूसरों के प्रति बुद्धिमान बनना सरल है । **—बाइबिल**

७. अवसर बीत जाने के बाद बुद्धिमान बनना सरल है।

—अंग्रेजी लोकोक्ति

८. अशस्त्र शूर इवाऽशास्त्रः प्रज्ञावानपि भवति विद्विषां वशः। **—नीतिवाक्यामृत ५।६**

शस्त्रहीन शूर की तरह शास्त्रज्ञानरहित बुद्धिमान भी विरोधियों के अधीन हो जाता है।

६ विशिष्टबुद्धिवाले व्यक्ति

१. अमेरिका के राष्ट्रपति **इब्राहिम लिंकन** पचास हजार व्यक्तियों के नाम जानते थे।

२. ईरान के राजा **साइरस** को अपने सब सैनिकों के नाम याद थे। —**विश्वदर्पण पृष्ठ ४३**

३. **गोपालकृष्ण गोखले** एक बार पढ़ा हुआ पत्र एक भी भूल किये बिना दूसरे दिन सुना देते थे।

४. निबन्धकार **लार्ड बेकन** स्वलिखित निबन्ध शब्द-ब-शब्द बोल देते थे!

५. इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध इतिहासकार राजनीतिज्ञ **लार्ड मेकाले** पढ़ी हुई प्रत्येक पुस्तक शब्द-ब-शब्द याद रख लेते थे। **मिल्टन का पेराडाइज-लोस्ट** जैसा महाकाव्य उन्होंने एक रात में यादकर लिया था।

६. अमेरिका के भूतपूर्वराष्ट्रपति **थेडोर रूजवेल्ट** एक बार मिलने के बाद उस आदमी को नहीं भूलते थे। एक बार जापान में पन्द्रह वर्ष बाद उन्हें एक बेंकर अकस्मात् मिले। बस मिलते ही पन्द्रह वर्ष पूर्व के विवाद की चर्चा शुरू करदी।

७. अमेरिका के **वनस्पति-विशेषज्ञ** पच्चीस हजार वनस्पतियों को पहचानते थे।

८. दक्षिण अफ्रिका के भूतपूर्वप्रधान जनरल **स्मटस्** को अपनी लायब्रेरी की सब पुस्तकों के प्रत्येक शब्द याद थे और वे यह बता सकते थे कि कौन्-सी पुस्तक कहां है एवं उसके कौन-से पृष्ठ पर कौन-सा शब्द है ?

९. **हरदयाल माथुर** ने पृथक्-पृथक् चार भाषाओं में एक साथ पढ़ी हुई चार पुस्तकें सुनकर उनका एक-एक शब्द सुना दिया था। —**नवभारत टाइम्स ३१ जुलाई १९५५**

एकबार हरदयालजी इंगलैण्ड में किसी के यहां ठहरे हुए थे। वहां पड़ी हुई एक किताब पढ़ी। फिर उसे लेकर रवाना होने लगे। मालिक ने किताब मांगी तब कहा— मेरी है। विवाद बढ़ा। कोर्ट में गये मजिस्ट्रेट के पूछने पर उन्होंने यह बतला दिया कि अमुक पत्र की अमुक पंक्ति पर अमुक शब्द है। मालिक केस हार गया। कोर्ट ने किताब उन्हें दे दी। फिर उन्होंने सत्य हकीकत कह कर किताब लौटा दी।

◆ मैट्रिक की परीक्षा में ८५० अंकों में से हरदयाल जी का १ अंक काट लिया गया। उसे अनुचित बताते हुए युनिवर्सिटी से कोर्ट में केस लड़ने गये। केस के अन्तर्गत युनिवर्सिटी को लाखों रुपए व्यय करने पड़े। अन्त में (मेम) युनिवर्सिटी की प्रिंसिपल महोदया ने ‘ , ’ कौमें

की एक गलती निकालकर युनिर्वासिटी को लाज रखी।

- परीक्षा हो रही थी, प्रश्न था—**व्हाट इज दी ब्रिटिश पॉलेसी** ? ब्रिटिश सरकार का क्या उद्देश्य है ? परीक्षा के बीच हरदयाल जी सो गये। लगभग १ घंटे पश्चात् उठकर तत्काल उत्तर लिख दिया **टु डि वाइड एण्ड रूल** दूसरों को लड़ाना और राज्य करना।
- आक्सफोर्ड यूनिर्वासिटी (इंगलैण्ड) की कुछ पुस्तकों के अध्ययन के पश्चात् हरदयालजी ने उस पर कुछ नोटस् लिखे। साथ ही **बाइबिल** पर कुछ ऐसा नोटस लिखा—जिसके आधारपर **ईसाईधर्म** का खण्डन होने लगा। वहाँ के इन्चार्ज ने चेतावनी दी कि तुम यहाँ से भाग जाओ अन्यथा मार दिए जाओगे। उस समय तो वह वहा से भाग खड़े हुए, किन्तु ब्रिटिश सरकार द्वारा इन पर कड़ी निगरानी रहने लगी। कुछ दिनों के पश्चात् सुनने में आया कि इन्हें विष देकर समाप्त कर दिया गया।

१०. **स्वामीविवेकानन्द** विश्वविद्या नामक ग्रन्थ पढ़ रहे थे। शिष्य ने पूछा—क्या इतना याद रह जाएगा ? उन्होंने कहा—तू पूछकर देखले ! कुतूहलवश शिष्य ने जो भी पूछा, उन्होंने सही-सही बता दिया।

११. श्रीजैनश्वेताम्बर तेरापंथ के पंचम आचार्य **श्रीमघराज जी** महाराज ने वि० सं० १९२२ पाली चातुर्मास में सारस्वत व्याकरण का पूर्वार्ध **श्रीजयाचार्य** को सुनाया

था। उसके बाद फिर वि० सं० १९४८ जयपुर में पण्डित **दुर्गादत्तजी** को उसका कुछ अंश अस्खलितरूप से सुना दिया। बीच के छब्बीस वर्षों में कभी नहीं दोहराया। था।

१२. **स्थूलिभद्रजी** की यक्षा आदि सात बहनें भी अद्भुत स्मरणशक्तिवाली थीं। उनमें पहली एकबार सुनकर यावत् सातवीं सातबार सुनकर कठिन से कठिन विषय को याद रख लेती थीं।

१० बुद्धिमानों के कर्त्तव्य

१. सुस्सूसइ पडिपुच्छइ, सुणइ गिह्लाइ ईहए वावि।
ततो अपोहए वा, धारेइ करेइ वा कम्मं॥

—**नन्दीसूत्र गाथा ९५**

बुद्धिमान व्यक्ति सर्वप्रथम—

(१) सुनने की इच्छा करता है, (२) पूछता है, (३) उत्तर को सुनता है, (४) ग्रहण करता है, (५) तर्क-वितर्क से ग्रहण किये हुए अर्थ को तोलता है, (६) तोलकर निश्चय करता है, (७) निश्चित अर्थ को धारण करता है, (८) फिर उसके अनुसार आचरण करता है।

२. अपमानं पुरस्कृत्य, मानं कृत्वा तु पृष्ठतः।
स्वकार्यमुद्धरेत् प्राज्ञः, कार्यध्वंसो हि मूर्खता।

—**घटखर्पर**

प्रज्ञावान वही है, जो अपमान को आगे करके एवं सम्मान को पीछे करके भी अपने काम को बना लेता है, क्योंकि कार्य को बिगाड़ लेना मूर्खता है।

३. बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृत-दुष्कृते। —**गीता२।५०**

बुद्धिमान मनुष्य **पुण्य** और **पाप** का यहीं परित्याग कर देता है।

४. धनानि-जीवितं चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत्।

—**हितोपदेश ३।१००**

बुद्धिमान-व्यक्ति को अपना धन और जीवन परोपकार में लगाना चाहिए।

५. आत्मच्छिद्रं न प्रकाशयेत् ।

बुद्धिमान को अपनी दुर्बलता नहीं दिखानी चाहिये ।

६. अर्थनाशं मनस्तापं, गृहे दुश्चरितानि च ।
वञ्चनं चापमानं च, मतिमान् न प्रकाशयेत् ॥

—**चाणक्यनीति ७।१**

धन का नाश, मन का दुःख, घर के बुरे आचरण, अपना ठगा जाना और अपमान—ये चीजें बुद्धिमानों को दूसरे के आगे प्रकट नहीं करनी चाहिये ।

७. आयुर्वित्तं गृहच्छिद्रं, मन्त्र-मैथुन-भेषजम् ।
तपो दानापमानं च, नव गोप्यानि यत्नतः ॥

—**हितोपदेश १।१३१**

बुद्धिमान-व्यक्ति को ये नव चीज़ें गुप्त रखनी चाहिये—
(१) आयु, (२) धन, (३) घर की त्रुटियां, (४) मन्त्र, (५) सम्भोग, (६) औषधि, (७) तप, (८) दान, (९) अपमान ।

८. परात्मनिन्दास्तोत्रे हि, नाद्रियन्ते मनीषिणः ।

बुद्धिमान लोग अपनी प्रशंसा एवं दूसरों की निन्दा को आदर नहीं देते ।

९. क्लिश्यन्ते केवलं स्थूलाः, सुधीस्तु फलमश्नुते ।
दन्ता दलन्ति कष्टेन, जिह्वा गिलति लीलया ॥

मोटी बुद्धिवाले मूर्ख तो केवल कष्ट ही उठाते हैं, उसका लाभ तो बुद्धिमान ही लेते हैं । देखो ! बेचारे दांत कितने कष्ट से भोजन को पीसते हैं और जीभ उसे लीला करती हुई फौरन गिल जाती है ।

११ बुद्धिमान एवं मूर्ख में अन्तर

१. सबसे अधिक बुद्धिमान वह है, जिसे अपनी बुद्धि का तनिक भी अभिमान न हो और सबसे अधिक मूर्ख वह है, जो दूसरों को मूर्ख बनाने की चेष्टा करता हो।

२. बुद्धिमान बोलने से पहले सोचते हैं एवं मूर्ख बोलने के बाद।

३. मूर्ख जो काम अन्त में करते हैं, बुद्धिमान उसे पहले ही कर लेते हैं।

४. मूर्ख स्वयं को बुद्धिमान समझते हैं, किन्तु वास्तविक बुद्धिमान स्वयं को मूर्ख ही समझते हैं। —**शेक्सपियर**

५. चातक चकवा चतुर नर, इतरा रहत नाराज।
खर घूघू मूरख पशु, सदा सुखी 'पृथ्वीराज' ॥

६. सकृत्कन्दुकपातेनो-त्पतत्यार्यः पतन्नपि।
तथा पतति मूर्खस्तु, मृत्पिण्डपतनं यथा।

—**पञ्चतन्त्र २।१६८**

पण्डित मनुष्य गिरकर भी गेंद की भांति एक बार पुनः उठता है। मूर्ख मनुष्य तो गिरते ही मिट्टी के ढेले के समान चूर-चूर हो जाता है, पुनः नहीं उठ सकता।

७. बुद्धिमान मूर्खों से जितनी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, मूर्ख बुद्धिमानों से उतनी नहीं। —**केटो**

८. कृत्स्नो हि लोको बुद्धिमतामाचार्यः शत्रुश्चाबुद्धिमताम् ।
—**चरक-संहिता**

बुद्धिमानों के लिए सारा संसार आचार्य-शिक्षक एवं हितैषी है तथा मूर्खों के लिए शत्रु है ।

९. एक मूर्ख भी एक मिनिट में उतने प्रश्न कर सकता है, जिनका उत्तर एक दर्जन बुद्धिमान एक घण्टे में भो नहीं दे सकते ।
—**लेनिन**

१०. सौ सुजाण र एक अजाण । —**राजस्थानी कहावत**

११. चन्दन की चुटकी भली, गाडा भला न काठ ।
चातुर तो एक ही भला, मूरख भला न साठ ।।

१२. अरबी-घोड़ा दुबला-पतला भी गदहों के पूरे अस्तबल से कहीं अच्छा है ।
—**शेखसादी**

१३. मूर्खों की प्रशंसा की अपेक्षा बुद्धिमानों की लताड़ श्रेयस्कर है ।
—**बाइबिल**

१४. अक्लमंद को इशारा और गधे को चाबुक ।
- बुद्धिमान को संकेत और बेवकूफ को बेंत ।

—**हिन्दी कहावतें**

१२ पण्डित

१. यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति, शीतमुष्णं भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वा, स वै पण्डित उच्यते ॥२४॥
निश्चित्य यः प्रक्रमते, नान्तर्वसति कर्मणः।
अवन्ध्यकालो वश्यात्मा, स वै पण्डित उच्यते ॥२९॥
न हृष्यत्यात्मसम्माने, नावमानेन तप्यते।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो, यः स पण्डित उच्यते ॥३१॥

—**विदुरनीति अ० १**

सर्दी, गर्मी, भय, अनुराग, समृद्धि अथवा असमृद्धि—ये सब जिसके कार्य में विघ्न नहीं डालते, वही पण्डित कहलाता है। ॥२४॥

जो निश्चयपूर्वक कार्य को करता है, कार्य के बीच में नहीं रुकता, समय को नहीं खोता और अपनी आत्मा को वश में रखता है, वही पण्डित कहलाता है ॥२९॥

जो अपने सम्मान में नहीं फूलता, अपमान में संतप्त नहीं होता एवं गंगाह्रद के समान सदा अक्षुब्ध रहता है, वही पण्डित कहलाता है। ॥३१॥

२. यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं, तमाहुः पण्डितं बुधाः॥

—**गीता ४।१९**

जिसके समस्त कार्य काम-संकल्प रहित है एवं जिसने ज्ञानरूप अग्नि से कर्मों को जला दिया है, उसको ज्ञानियों ने पण्डित कहा है।

३. मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठुवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः ।।

—चाणक्यनीति १।१४

जो पर स्त्रियों को माता के समान, दूसरों के धन को मिट्टी की ढेलेवत् और सब प्राणियों को आत्मा के तुल्य देखता है, वही पण्डित है।

४. पाठकाः पठितारश्च, ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः, यः क्रियावान् स पण्डितः ।।

पढ़ानेवाले, पढ़नेवाले और शास्त्रों का चिन्तन करनेवाले— वे सब व्यसनी एवं मूर्ख हैं। पण्डित तो वही है, जो पाठन-पठनादि के अनुसार क्रिया—आचरण करता है।

५. प्रस्तावसदृशं वाक्यं, प्रभावसदृशं प्रियम्।
आत्मशक्तिसमं कोपं, यो जानाति स पण्डितः ।।

—चाणक्यनीति १४।१५

जो प्रस्ताव के अनुकूल वाक्य, प्रकृति के अनुकूल प्रिय और अपनी शक्ति के समाम क्रोध को जानता है, वह पण्डित है।

१३ पण्डितों की विशेषता

१. विद्या-विनयसम्पन्ने, ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च, पण्डिताः समदर्शिनः ॥

—गीता ५।१८

विद्या-विनययुक्त ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल को पण्डित लोग समानदृष्टि से देखनेवाले होते हैं।

२. तन्नेत्रैस्त्रिभिरीक्षते न गिरिशो नो पद्मजन्माष्टभिः,।
स्कन्दो द्वादशभिर्न वा न मघवा चक्षुःसहस्रेण च।
संभूयापि जगत्त्रयस्य नयनैस्तद् वस्तु नो वीक्ष्यते,
प्रत्याहृत्सुदृशः समाहितधियः पश्यन्ति यत् पण्डिताः ॥

जिस वस्तु को महादेव तीन नेत्रों से, ब्रह्मा आठ नेत्रों से, कार्तिकेय बारह नेत्रों से, इन्द्र हजार नेत्रों से नहीं देख सकते तथा ये सारे मिलकर तीनों जगत की आँखों से भी जिसको नहीं देख सकते। उस वस्तुतत्त्व को, इन्द्रियों को विषयों से मोड़ सकनेवाले समाहितबुद्धियुक्त पण्डित देख लेते हैं।

३. अत्तानं दमयंति पण्डिता।

—धम्मपद

पण्डित लोग आत्मा का दमन करते हैं।

४. नष्टं मृतमतिक्रान्तं नानुशोचन्ति पण्डिताः।
पण्डितानां च मूर्खाणां, विशेषोऽयं यतः स्मृतः ॥

—पंचतंत्र १।३६३

पण्डित लोग नष्ट वस्तु, मृत स्वजन और बीती हुई बात का पश्चात्ताप नहीं किया करते। पण्डितों और मूर्खों में यही विशेष अन्तर है।

५. झटिति पराशयवेदिनो विज्ञाः।

—नैषधीय चरित

विज्ञपुरुष दूसरों के भावों को तत्काल समझनेवाले होते हैं।

१४ परोपदेश-कुशल पण्डित

१. परोपदेशे पाण्डित्यं, सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं, कस्यचित् तु महात्मनः ॥
—**हितोपदेश** १।१०३

दूसरों को उपदेश देने में पाण्डित्य दिखाना सब मनुष्यों के लिए सरल है, लेकिन उपदेश के अनुरूप अपना आचरण तो किसी एक महात्मा का ही होता है ।

२. पर उपदेश-कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे ।
—**रामचरितमानस**

३. कुकृत्ये को न पण्डितः ?

कुकर्म करने में कौन पण्डित नहीं है ?

४. अधर्मकर्मणि को नाम नोपाध्यायाः पुरश्चारी च ?
—**नीतिवाक्यामृत** १।८

अधर्म के काम में उपदेशदाता और अग्रसर कौन नहीं ।

५. आप व्यासजी बैंगण खावे, औरां नें परमोद बतावै ।

६. भूवाजी आप तो सासरे जावै कोनी र भतीजी ने सीख दै ।
—**राजस्थानी कहावतें**

७. आप ना वंजे सहुरी, सिख लोक सुनावे ।
—**पंजाबी कहावत**

८. आप मियाँ जी मंगते, बाहर खड़ा दरवेस ।
—**हिन्दी कहावत**

६. एक योगी झाड़ा-फूंका किया करता था, किन्तु आलसी इतना था कि अपनी झोंपड़ी को भी ठीक नहीं कर पाता था। एक दिन झाड़ते समय कह रहा था—"आकाश बांध, पाताल बांध, सात समुद्र बांध, तीन लोक बांध, बावन भैंरु बांध, चौसठ योगिनी बांध।" स्त्री ने चिमटा मारते हुए कहा – पहले झोंपड़ी तो बांध !

१०. रंडी बेचे शील को, पण्डित बेचे ज्ञान।
सत्पुरुषों के सामने, दोनों एक समान ॥

—दोहासंदोह

◆ अहमदाबाद (रायपुर) में एक ३१-३२ वर्षीय ज्योतिषी रहता था। भविष्यवाणी मिलने के कारण वकील, जज, मिल-मालिक आदि बड़े-बड़े आदमी उसके पास आते ही रहते थे। तीन-चार वर्षों में लाखों रुपये कमा लिए। एक बार धूमधाम से वह गुरु दर्शनार्थ गाँव में गया एवं सविनय कहने लगा—आपकी कृपा से लाखों रुपये कमा लिए व मकान के नीचे दिन भर मोटरें खड़ी रहती हैं। गुरु ने कहा—रंडियों के घर तेरे से भी ज्यादा मोटरों वाले जाते हैं। शिष्य शर्मिन्दा हुआ और गाँव में ही रहकर सादा जीवन व्यतीत करने लगा। (कपड़गंज मोडसा रोड पर उसकी यज्ञशाला चलती है।)

—घटना, वि० सं० १६७६ के लगभग

१५ चतुर

१. श्रवण नयन अरु नासिका, हैं सबके इक ठौर।
कहिबो सुनिबो समझिबो, चतुरन को कछु और ॥

२. चतुरनी चार घड़ी ने मूरख नो जमारो।

—गुजराती कहावत

३. स्याणा-स्याणा एक मत।

—राजस्थानी कहावत

◆ सौ सयाने एक मत। —हिन्दी कहावत

४. A word is enough to the wise.

—अंग्रेजी कहावत

ए वर्ड इज ईनफ टू दी वाइज।
अकलमन्द को इशारा काफी।

५. टट्टू ने मारै न तेजी कांपै। —गुजराती कहावत

६. सांप मरे न लाठी टूटै। —राजस्थानी कहावत

७. कहेवुं सासूने ने समझाववुं बहू ने।

—गुजराती कहावत

८. बड़े मियां सो बड़े मियां, छोटे मियां सुभान-अल्ला।

—हिन्दी कहावत

९. श्याम-वरण मुख-उज्ज्वल केता ?

(उड़द क्या भाव ?)

रावण-शीश मन्दोदरी जेता ।।

(११ सेर का !)

हनुमन्तपिता कर लेशां,

(पवन—साफ करके लूंगा !)

रामपिता कर देशां ।

(१० सेर का दूँगा !)

—लोकोक्ति

●

हाजिर-ज़बाब

१. एक आने का दूध पीया, उसमें भी मक्खी !
हजूर ! हाथी कहाँ से लाऊँ ?

२. खाग्योरे परडोरियो, तो कहै—कालींदर कठै सूं लाऊँ।

३. ऐसी घोड़ी लाओ, जो काली-पीली आदि किसी भी रंग की न हो।

उत्तर मिला—ऐसा समय बताओ, जब सोम-मंगल आदि कोई वार न हो।

४. नौसेना में भर्ती होते समय लार्ड **माउण्टबेटन** से पूछा गया—

तूफान आयेगा तो ? लंगर लगा दूंगा।
फिर आ जाएगा तो ? फिर लगा दूंगा।
फिर आएगा तो ? फिर लगा दूंगा।
इतने लंगर कहाँ से आएँगे ? इतने तूफान कहाँ से आएँगे ?

—**शतप्रतिशत उत्तीर्ण**

५. **परीक्षक ने पूछा**—पढ़ने क्यों आते हो ? एक छात्र घबड़ा

गया। दूसरा उद्दण्डता से बोला-यह पाठ हमारी **पुस्तकों** में नहीं है, कई छात्रों ने मास्टर, डाक्टर, बैरिस्टर, मिनिस्टर आदि बनने के लिए कहा—एक ने कहा—मैं इन्सान बनने के लिए पढ़ता हूं। उचित उत्तर पर उसे पारितोषिक के रूप में स्वर्णपदक दिया गया।

६. **अध्यापक ने कहा**—तेरी उम्रवाले लड़के बी० ए०, एम० ए० हो जाते हैं, तू अभी दसवीं कक्षा की खाक छान रहा है।
छात्र ने तत्काल उत्तर दिया—आप जितनी उम्रवाले **नेहरूजी** भारत के प्रधानमन्त्री बन गये थे। आप अभी प्रधानाध्यापक भी न बन सके।

७. **राणा भीम** ने केसरजी भण्डारी से पूछा—जैन के देव बड़े या विष्णु के ?
उत्तर—हजूर ! मैं खड़ा हूं और आप बैठे हैं। (सामने खड़े की अपेक्षा बैठा व्यक्ति बड़ा होता है)

८. **जयपुर नरेश** जब बालक थे तो एक बार उनके दोनों हाथ पकड़कर बादशाह ने पूछा - बोलो ! अब तुम्हारा क्या जोर है ? बालसुलभता से उत्तर देते हुए उन्होंने कहा—एक हाथ पकड़ने वाले पति का भी स्त्री को बल रहता है। आपने तो मेरे दोनों हाथ पकड़े हैं यह सुनकर बादशाह खुश हो गया।

९. सेठ ने मुनीम को सीख दी, उसने कहा—सीख दरवाजे तक ही रह जाती है, आगे अपनी अक्ल काम देती है। क्रुद्ध सेठ ने एक बन्द पेटी देकर उसे राजा के पास भेजा। पेटी भेंट की गई, खोलने पर केश निकले। राजा कुपित हुआ, बुद्धिमान मुनीम ने कहा- सर्वसिद्धि कारक हिमालयवासी योगिराज के अमूल्य केश हैं। राजा प्रसन्न हुआ।

१०. **नगोरनरेश बखतसिंहजी** के आगे जोधपुर के सिंघीजी दीवान थे। ५०० की तनख्वाह थी। नायबजी को ५० मासिक मिलते थे। नायबजी को दीवान बनाने के लिए जागीरदारों ने आग्रह किया। आखिर बना दिये गये। बुद्धिपरीक्षार्थ सोने की दो डब्बियों में राख भरकर नायबजी को जयपुर एवं सिंघीजी को उदयपुर भेजा।

नायबजी ने डब्बी भेंट की जयपुर नरेश ने खोली और राख देखकर अत्यन्त क्रुद्ध हुए। वह राख नायबजी के सिर पर डालकर उन्हें तत्काल निकाल दिया। इधर उदयपुर महाराणा भी राख देखकर लाल-पीले होने लगे तब बुद्धिमान सिंघीजी ने कहा—हजूर ! यह **हिंगलाद जी** की राख है, खाने से अपुत्रों के पुत्र हो जाता है। बस राणा और राणी जी उसी वक्त आधी-आधी चटकर गये (अपुत्र थे) फिर प्रसन्न होकर सिंघीजी को लाख पसाव एवं हजार रुपया तथा साथवालों को १००-१००

रुपये देकर विदा किया। यह समाचार सुनकर नगोर-नरेश ने सिंघीजी को पुनः दीवानपद पर स्थापित एवं नायबजी को बर्खास्त किया।

११. **अकबर** अन्त में जैनमतानुरागी बन गया था। हिन्दुओं ने उन्हें बहकाया कि जैन गंगा एवं सूर्य को नहीं मानते। **श्रीहीरविजयजी** ने कहा— वस्तुतः इन्हें हम ही मानते हैं—गंगा में पैर नहीं धरते एवं सूर्य छिपने के बाद पानी भी नहीं पीते (सब चुप!)

१२. जोधपुर के देशदीवान जयपुर गए। शौचालय में जोधपुर नरेश का चित्र लगा हुआ था। राजमहल आदि दिखलाते समय जयपुरनरेश ने वह भी दिखलाया। दीवान साहब से हंसकर कहा—आपने तो कोष्ठबद्धता की बहुत अच्छी औषधि बना रखी है। (जयपुरनरेश चुप!)

१३. वकील जी! किसी की गाय १०) रुपयों का दाना खा जाय तो क्या करना?

वकील बोले—उससे रुपये मांगना। अगर नहीं दे तो? कोर्ट में दावा करदो।

हजूर! आपकी ही गाय थी।

वकील ने शर्मिन्दा होकर १०) रुपये दिये, किंतु उसी वक्त सलाह की फीस के दस रुपये मांग लिये।

१४. समरकंद के बादशाह **'तैमूरलंग'** लंगड़ा था। अंधा

गवैया आया। नाम पूछा, उसने दौलतखां कहा। बादशाह ने मज़ाक में पूछा—क्या दौलत अंधी होती है ? हाज़िर ज़वाब गवैये ने कहा—हज़ूर अंधी नहीं होती तो लंगड़े तैमूर के पास क्यों आती ?

१५. बादशाह ने कहा—तम्बाकू गदहे भी नहीं खाते।

बीरबलने उत्तर दिया—हां हज़ूर ! जो गदहे होते हैं वे ही नहीं खाते।

१७ मूर्ख

१. **लक्षण**—

अमित्रं कुरुते मित्रं, मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च ।
कर्म चारभते दुष्टं, तमाहुर्मूढचेतसम् ।।३८।।
संसारयति कृत्यानि, सर्वत्र विचिकित्सते ।
चिरं करोति क्षिप्रार्थे, स मूढो भरतर्षभ !३९।।
परं क्षिपति दोषेण, वर्तमानः स्वयं तथा ।
यश्च क्रुद्ध्यत्यनोशानः, स च मूढतमो नरः ।।४२।।

—**विदुरनीति अ० १**

जो शत्रु को मित्र बनाता है, मित्र से द्वेष रखता है एवं उसे दुःख देता है तथा दुष्टकार्य शुरू करता है, उसे मूर्ख कहते हैं । ।।३८।।

जो कार्यों को तो फैला देता है, पर सर्वत्र संदेह करता है और जिस काम में शीघ्रता की आवश्यकता है, उसमें देर करता है । हे युधिष्ठिर ! वह मूर्ख है । ।।३९।।

जो स्वयं दोष-युक्त होता हुआ दूसरों पर दोषारोपण करता है, असमर्थ होता हुआ भी क्रोध करता है, वह मनुष्य सबसे बड़ा मूर्ख है । ।।४२।।

२. सामर्थ्ये विगतोद्योगः स्वश्लाघी प्राज्ञसंसदि ।
व्याख्याता चाश्रुते ग्रन्थे, प्रत्यक्षार्थे प्यपह्नवी ।।

अप्रस्तावे पटुर्वक्ता, प्रस्तावे मौनकारकः।
लुब्धे भूभुजि लाभार्थी, न्यायार्थी दुष्टशास्तरि ॥
स्वास्थ्ये वैद्यक्रियान्वेषी, रोगी पथ्यपराङ्मुखः।
लाभकाले कलहकृद्, मन्युमान् भोजनक्षणे ॥
वहुव्ययोल्परक्षार्थं, परिक्षायै विषाशनः ।
पण्डितोस्मीति वाचालः, सुभटोस्मीति निर्भयः ॥
दूतो विस्मृतसंदेशः, कासवाँश्चोरिकां गतः।
भूरिभोज्यव्ययः कीर्त्यै, श्लाघायै स्वल्पभोजनः ॥
तृतीयकः द्वयोर्मन्त्रे हितवादिनि मत्सरी ।
भिक्षुकश्चोष्णभोजी च, गुरुश्चशिथिलक्रियः ॥

(१) जो शक्ति होने पर भी उद्यम नहीं करता, (२) जो विद्वानों की सभा में अपनी प्रशंसा करता है, (३) जो नहीं सुने हुए ग्रंथ का व्याख्यान करता है, (४) जो प्रत्यक्ष वस्तु का अपलाप करता है, (५) जो बिना अवसर अच्छा वक्ता बन जाता है और मौके पर मौन धारण करता है, (६) जो लोभी राजा के पास लाभ की एवं दुष्ट शासक के पास न्याय की इच्छा करता है, (७) जो नीरोग अवस्था में वैद्य-क्रिया का अन्वेषण करता है और रोगी अवस्था में पथ्य नहीं रखता, (८) जो लाभ के समय झगड़ा और भोजन के समय क्रोध करता है, (९) जो थोड़ी वस्तु की रक्षा के लिए अधिक खर्च करता है, और विष की परीक्षा के लिए उसे स्वयं खाता है, (१०) जो मैं पण्डित हूं ऐसे बकवाद करता है और मैं सुभट हूं यों सोचकर निभर्य बन बैठता है, (११) जो दूत होकर स्वामी का संदेश भूलता है और कास-रोगी होकर चोरी करने जाता है, (१२) जो कीर्ति के लिए भोजन का अधिक

खर्च करता है अथवा स्वयं कम खाता है, (१३) जो दो व्यक्तियों की मन्त्रण में तीसरा बनता है, (१४) जो हित की बात कहनेवाले पर मत्सरभाव रखता है, (१५) जो भीखमंगा होकर गरमागर्म खाना चाहता है और गुरु होकर आचार-क्रिया में ढीला होता है—पूर्वोक्त सभी व्यक्ति मूर्ख कहलाते हैं।

३. मूर्खस्य पञ्च चिह्नानि, गर्वी दुर्वचनीयता।
हठी चाप्रियवादी च, परोक्तं नैव मन्यते॥

मूर्ख आदमी के पांच चिह्न हैं—वह अभिमानी, दुर्वचन बोलने-वाला, हठीला, कटुभाषी और दूसरों का कथन नहीं मानने-वाला होता है।

४. आत्मच्छिद्रं न पश्यति, परच्छिद्रमेव पश्यति बालिशः।

—**चाणक्यसूत्र ३४३**

मूर्ख आदमी अपने दोषों को नहीं देखता मात्र दूसरों के दोषों को देखता है।

५. कंठ बिना तो गावै गीया, बिना नयन फरकावे डीया।
बिन आदर करे अइया-अइया, यां तीनां रा फूट्या हीया।

६. जो बालो मञ्ञति बाल्यं, पण्डितो चापि तेन सो।
बालो य पण्डितमानी, स वे बालोति वुच्चति।

—**धम्मपद ६३**

जो मूर्ख अपनी मूर्खता को देखता है, उतने अंश में वह पण्डित है। असली मूर्ख तो वह है, जो मूर्ख होते हुए भी अपने आपको पण्डित समझता है।

७. मूर्खों के सामने विद्वत्ता दिखलानेवाले, विद्वानों के सामने मूर्ख दिखाई देंगे। —**किवकट**

८. तरुणों के विचारों में वृद्ध मूर्ख दिखाई देते हैं, जबकि वृद्ध तरुणों को मूर्ख समझते हैं। —**जार्ज चैपमैन**

६. अशिक्षित मूर्ख से शिक्षित मूर्ख अधिक भयंकर होता है। —**मोलियर**

१०. मूर्ख को स्वयं से अधिक मूर्ख प्रशंसा करनेवाला मिल ही जाता है। —**ब्यावली**

११. तिविहा मूढा पण्णत्ता तं जहा—
णाणमूढा दंसणमूढा चरित्तमूढा।

—**स्थानांग ३।४।२०३**

मूर्ख तीन प्रकार के कहे हैं—ज्ञान से मूर्ख, (ज्ञानहीन) दर्शन से मूर्ख और चरित्र से मूर्ख।

१८ मूर्ख को उपदेश

१. उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये ।
पयः पानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धनम् ॥

—पञ्चतन्त्र १।४२०

मूर्ख मनुष्यों को दिया हुआ उपदेश क्रोध का कारण बनता है, शांति का नहीं, क्योंकि सांप को पिलाया हुआ दूध केवल विष की ही वृद्धि किया करता है ।

२. प्रायः सम्प्रतिकोपाय, सन्मार्गस्योपदर्शनम् ।
विलूननासिकस्येव, विशुद्धादर्शदर्शनम् ॥

मूर्ख को हित की बात कहना—नकटे को आइना दिखाना है ।

३. यदि केवलहितबुद्ध्या, शिक्षा दीयेत हा तदपि मतिमन्दः ।
प्रत्युत गुणमवगण्य, फूत्कुर्वाणः, फणीव समुपैति ॥

—धनमुनि

यदि केवल हितबुद्धि से शिक्षा दी जाती है । हा ! हा ! फिर भी गुण न मानकर मूर्खव्यक्ति फुंकार करता हुआ सांप की तरह सामने आता है ।

४. स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया ।

—शाकुन्तल ७।२४

अन्धे के सिर पर यदि माला भी डाली जाय, तो भी वह सर्प की शंका से उसे गिरा देता है ।

५. फूलहि फलहि न वेंत, जदपि सुधा बरसहि जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरु मिलहिं विरंचि सम ।।

—रामचरितमानस

६. हिड़क्यो पड़्यो जु खाड में, काढ़े जिण ने खाय ।
मूरख ने समझावतां, ज्ञान गांठ से जाय ।

—राजस्थानी दोहा

७. ऊँचे धोरे जाय, बीज क्यों बोइये,
मूरख को समझाय, ज्ञान क्यों खोइये !

—राजस्थानी पद्य

८. मूरख नै टक्को देणो पण अक्कल नहीं देणो ।

—राजस्थानी कहावत

मूर्खों की मान्यता

१. मूर्खत्वं हि सखे ! ममापि रुचितं यस्मिन् यदष्टौ गुणा,
निश्चिन्तो बहुभोजनोऽत्रपमना नक्तं-दिवाशायकः।
कार्याकार्यविचारणान्धबधिरो मानापमाने समः,
प्रायेणामयवर्जितो दृढ़वपुः मूर्खः सुखं जीवति ॥

हे मित्र ! मुझे भी मूर्खता अच्छी लगती है। जिसमें आठ गुण हैं—(१) मूर्ख मनुष्य निश्चित रहता है, (२) बहुत खाता है, (३) उसके लाज-शर्म नहीं होती, (४) वह रात-दिन पड़ा रहता है, (५) कार्य-अकार्य का विचार करने में अन्ध-बधिर होता है, (६) मान-अपमान में एक-सा होता है, (७) नीरोग होता है, (८) मजबूतशरीरवाला होता है, अतः वह सुख से जीता है।

२. भणिया मांगै भीख, अणभणिया घोड़ां चढ़ै।
सुगणां ! आही सीख, भाईड़ां ! भणज्यो मती ॥

—राजस्थानी सोरठा

३. पठितव्यं तदपि मर्तव्यं, न पठितव्यं तदपि मर्तव्यं,
दन्तकड़ाकड़ किं कर्त्तव्यम्।

पढ़ें तो भी मरना होगा, न पढ़ें तो भी मरना होगा, फिर दन्त-कड़ाकड़ क्यों करनी चाहिए।

४. ओना मासी धम, बाप पढ़्या न हम।

—राजस्थानी कहावत

५. आज करे सो काल कर, काल करे सो परसों।
अब ही करके क्या करेगा? जीना तो है बरसों ॥

—हिन्दी दोहा

२० निन्दनीय मूर्ख-जीवन

१. किं जीवितेन पुरुषस्य निरक्षरेण !

—सुभाषितरत्न खण्डमंजूषा

मनुष्य का निरक्षर जीवन व्यर्थ है ।

२. शक्यो वारयितुं जलेन हुतभुक् छत्रेण सूर्यातपो,
नागेन्द्रो निशिताङ्कुशेन समदो दण्डेनगो-गर्दभौ ।
व्याधिर्भेषजसंग्रहैश्च विविधैर्मन्त्रप्रयोगैर्विषं,
सर्वस्यौषधमस्ति, शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ॥

—भर्तृहरि-नीतिशतक ११

अग्नि को जल से, धूप को छत्ते से, मस्त हाथी को तीखे अंकुश से, गाय एवं गदहे को डण्डे से, बीमारी को औषधियों से तथा विष को विविध मन्त्रों के प्रयोग से दूर किया जा सकता है । शास्त्रों में सबकी दवाइयां बताई गयी हैं, लेकिन मूर्ख की कोई दवा नहीं बताई गई ।

३. मूरख का मुख बिंब है, निकसत बचन भुयंग ।
ताकी औषधि मौन है, विष नहीं व्यापत अंग ।

४. विशेषतः सर्वविदां समाजे,
विभूषणं मौनमपण्डितानाम् । —भर्तृहरि-नीतिशतक ७

विद्वानों की सभा में मौन रखना ही मूर्खों का आभूषण है ।

★

२१ मूर्ख का संग-त्याज्य

१. वरं पर्वतदुर्गेषु, भ्रान्तं वनचरैः सह।
न मूर्खैः सह सम्पर्कः, सुरेन्द्रभुवनेष्वपि ॥

—भर्तृहरि-नीतिशतक १४

पर्वतों के दुर्गों में वनचरों के साथ भटकना अच्छा है, लेकिन इन्द्रभवन में भी मूर्खों के साथ रहना अच्छा नहीं।

२. सिंहन के वन में वसिये,
जल में घुसिये कर में बिछु लीजे।
कानखजूरे को कान में डारिके,
सांपन के मुख अंगुरी दीजे।
भूत-पिशाचन में रहिये अरु,
ज़हर हलाहल घोल के पीजे।
जो जग चाहे जीयो **रघुनन्दन** !
मूरख मित्र कदे नहीं कीजे।

२. मूर्खस्तु परिहर्तव्यः, प्रत्यक्षो द्विपदः पशुः।
भिनत्ति वाक्यशल्येन, हृदयं कण्टकं यथा ॥

—चाणक्यनीति ४।७

मूर्ख मनुष्य प्रत्यक्ष दो पैरवाला पशु है। वह अदृश्य कांटे की तरह वचन-शल्य से हृदय को बींध डालता है, अतः उसका परित्याग करना चाहिये।

४. मूर्खेषु विवादो न कर्त्तव्यः। —**कौटलीय-अर्थशास्त्र**

मूर्खों में बैठकर विवाद नहीं करना चाहिए।

५. सांड की अगाड़ी से, घोड़े की पिछाड़ी से और मूर्ख के चारों ओर से बचना चाहिए।

★

२२ मूर्खता

१. मूर्ख की भावना अथवा क्रिया 'मूर्खता' कहलाती है।

२. किसी को मन की बात कह कर कहना कि किसी को मत बतलाना—यह बड़ी-भारी मूर्खता है, क्योंकि जब तुम स्वयं नहीं पचा सके तो दूसरों से यह आशा क्यों करते हो!

३. सूचिप्रवेशे मुसलप्रवेशः। —संस्कृत कहावत

सूई की जगह मूसल डालना।

४. लङ्का को स्वर्ण मुद्रा दिखाना। —हिन्दी कहावत

सूर्य को दीपक दिखाना।

५. गुले वोस्तां वुर्दन। —पारसी कहावत

बाग में फूल ले जाना।

६. टू कास्ट पैर्ल्स विफोर स्वाइन्। —अंग्रेजी कहावत

भैंस के आगे मृदंग बजावै।

७. टू स्ट्रैन एट ए नेट एण्ड स्वालो ए केमल।

—अंग्रेजी कहावत

गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज। —हिन्दी कहावत

८. डिग्गी खोते तों गुस्सा कुमिआर ते।

गधे से गिरकर कुम्हार पर गुस्सा करना।

९. पल्ले नहीं धेला, कर दी मेला-मेला।
१०. सद्दी ना बुलाई मैं लाड़े दी लाई।
११. मज्झ नहीं मिलदी तां कहे ए दीयां लत्तां भनों।
१२. कोह ना चली बाबा तिहाई।
१३. विआह विच बी दा लेखा। —पंजाबी कहावतें
१४. बिलाड़ी ने दूध भलाववु, दाणी न घेर छाटी उतारवी।
१५. गधेड़ा ऊपर अंबाड़ी ने पींढोर (लीपण)।
१६. गाय दोही ने कुतरा नो पावु, कुपात्रे दान करवु,
गधेड़ा ने ध्रो भोलायवी ने शेकी ने बाव वु।
१७. पापी पहेलां मोजा उतारवा, मूआं पहेला पोक अने
परण्यां पहेला अघरणी।
१८. भैंस भागोले, छास छागोले, ने घेर घमाघम।
१९. घउं खेत मां, बच्चु पेट मां ने बसंतपांचम ना लगन
लीधा।
२०. कणक खेत, कुडी पेट आ जुआइया ! मंडे खा !
२१. नोतरां नी बाट जोइ चूल्हा मों पाणी रेड्यु।
२२. नाक बिंधाववा गई ने कान विंधावी आवी।
२३. बायड़ी नातरै जाय ने धणी बोलाववाने जाय।
२४. बांढा ने बेविशाल करवा मोकल्यो,
ते पोता नो करी आव्यो।
२५. पाडा ने दरद अने पखाली ने डाम।
◆ दुःखे पेट ने कूटे माथो।

२६. मांखो उंदर ने खोदवो डूंगर ।

◆ मारवी आँख ने चढ़ाववी तोप । —गुजराती कहावतें

२७. पेनी वाइज पौंड फुलिश । —अंग्रेजी कहावत

मुहरें लुटें, कोयलों पर कलम ।

२८. खाले डूचा नें बारणा उघाड़ा ।

२९. घास नो लोभ ने घी नी मोकल ।

◆ कोड़ी-कोड़ी मां कृपण, ने रुपिये दातार ।

◆ अर्ध सेर सारू, डोढिये जाय ने,

डोढ़ सेर घरमां उंदरा खाय ।

—गुजराती कहावतें

३०. कुछड़ कुड़ी पिंड ढिंढोरा । —पंजाबी कहावत

३१. काँख में लड़का, गाँव में टेर ।

३२. हजामत कराके बार पूछना ।

३३. पानी पीकर जाति पूछना । —हिन्दी कहावतें

३४. घर रा पूत कुंआरा फिरै, पाड़ौसी नै फेरा ।

◆ घर रा टाबर घट्टी चाटै, ओझाजी नै आटो ।

३५. चालणी में गाय दुहे र करम नै दोष दै ।

३६. नानी खसम करै, दोहितो दंड भरै ।

३७. घर आयां पूजै नहीं, बांबी पूजन जाय ।

—राजस्थानी कहावतें

३८. सूती बैठी डूमणी, घर में घाल्यो घोड़ो ।

पहलै पीती दूध कचोला, अब दूब खोदवा दोड़ो ।

—राजस्थानी दोहा

३९. घर घोड़ो नैं पालो जावै, घर धोणों नै लूखो खावै ।
राली ओढ़ जान में जावै, बागो पहर एवड़ में जावै ।
सांभर जाय अलूणों खावै, कुवै जाकर प्यासो आवै ।

४०. घर में धन अनैं, सिर पर ऋण ।

४१. पूछै बाप रो नाम, बतावै गाम रो नाम ।

◆ पूछै जमीन की र बतावै आसमान की ।

४२. कोई गावै होली रा तो कोई गावै दीवाली रा ।

४३. खोला मांयलो छोड़कर, पेटवाला री आस करै ।

४४. लाय नै दियो ले र देखै ।

४५. सलू साटै भैंस नैं मारै ।

४६. मण भर रो माथो हलावै, पण टकै भर री जीभ को हलाई जै नी ।

४७. मान मनायां खीर न खाय, ऐंठी पातल चाटण जाय ।

—राजस्थानी कहावतें

४८. सिरों गंजी हथ कंधीयां दा जोड़ा । —पंजाबी कहावत

४९. बादल उमड़ा देखकर घड़ा फोड़ता है । —हिन्दी कहावत

५०. मन में भावै मूंडै हिलावै ।

५१. झाड़े जावै जद लोटो याद आवै ।

५२. बिच्छु रो झाड़ो को आवै नी र हाथ घालै सांप नै ।

—राजस्थानी कहावत

५३. मक्षिका स्थाने मक्षिका । —संस्कृत कहावत

५४. काला-अक्षर ने कूटी काढ़ै जेवो । —गुजराती कहावत

५५. काला-आखर भैंस बराबर ।

५६. काला-काला किसन जी रा साला ।

५७. काला-काला मकोड़ा ।

५८. आप ही मारै र आप ही रोवै ।

५९. मैं ही कियो र मैं ही ढायो ।

६०. मूरख वार्‌यो को मानै नी, हार्‌यो मानै ।
मूरख बातां स्युं को मानैनी लातां स्युं मानै ।

६१. लातां रा देव बातां स्युं थोड़ा ही मानै ।

६२. पड़ गया खल्ला उड़ गई खेह, फूल फड़क सी हो गई देह ।

६३. मूरख खाय मरै के उठाय मरै ।

६४. मूर्खां रै किसा सींग हुवै !

६५. मूर्खां रा गाम न्यारा थोड़ा ही बसै !

६६. सित्तर-मित्तर कोनी समझूं, पूरा तीन बीसी लेस्यूं ।

—**राजस्थानी कहावतें**

६७. आणुं करवा गयो ने बहु ने भूली आव्यो ।

—**गुजराती कहावत**

★

२३ मूर्खता के उदाहरण

१. मूर्ख किसान ने पड़ौसी के घोड़े पर चढ़कर भी घास की गठड़ी सिर पर धरी।

२. मामा बोला—खेत में दो खंडी गेहूं होंगे। भानजा बोला—सवा दो खंडी गेहूं होंगे। दोनों लड़ने लगे, भानजा मामे की छाती पर चढ़ बैठा। लोगों ने कहा—मूर्खो! जितने भी होंगे मालिक के होंगे तुम क्यों नाहक झगड़ते हो!

३. चन्द मुसलमान छाछ के लिये भैंस खरीदने की बात करता-करता अपनी स्त्री को पीटने लगा। लोग इकट्ठे हुए और चन्द को पीटने लगे एवं कहने लगे कि तेरी भैंस हमारा खेत चर गई। चन्द ने कहा मेरे भैंस है ही नहीं, तब लोगों ने कहा—जब भैंस ही नहीं है तो छाछ कहाँ के आएगी, तूँ अपनी स्त्री को व्यर्थ क्यों पीट रहा है?

४. एक पण्डित जी सुबह उठकर ऊँचे स्वर से सामवेद पढ़ते थे। मूर्ख गड़रियों ने रोगी समझकर पशुओं की तरह उनके डाम लग्ा दिये।

५. पिचानवें वष की बुढ़िया गोबर इकट्ठा कर रही थी। दयालु राजा ने देखकर इच्छित वरदान मांगने को कहा। बुढ़िया ने दो तगारे गोबर प्रतिदिन के मांगे। उसी प्रकार सद्गुरु अनन्त मुक्तिसुख को देनेवाला ज्ञान दे रहे हैं, परन्तु संसारी लोग गोबर के समान भौतिकसुख मांग रहे हैं।

बीकानेर के महाराजा **गजसिंहजी** में एक जाट एक रुपया सवा नौ आना मांगता था, वे राजा बनें। जाट सुनते ही आया और कहने लगा। राजा कहां है ? एक रुपया सवा नव आने लेने हैं। महाराज ने सम्मान पूर्वक खाना खिलाकर १००) रुपये दे दिये, तो भी मूर्ख १)रुपये सवा नौ आने मांगता ही रहा। आखिर राजा ने हंसकर एक रुपया सवा नव आना देकर विदा किया।

७. **सरदार बलदेवसिंह** केन्द्र में मंत्री थे। उनके सेक्रेटरी की मां मर गई, तार आया, उसने भूल से तार को सरदार की टेबल पर रख दिया। सरदार के हाथ में आते ही वे अपनी मां को मरी समझकर रवाना होने लगे। असलियत सामने आने पर बड़ी हँसी हुई।

८. **भटिण्डा-स्टेशन** पर आग लगी। पटियाला तार दिया गया। एक साल बाद उत्तर आया—**आगबुझाओ** बम्बेवाले स्टेशन पर जल डालने लगे।

९. पिता ने पुत्र को शिक्षाएँ दी :—

मातृवत् परदारेषु, परद्रव्याणि लोष्ठुवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः॥

हे पुत्र ! परस्त्री को माता के समान, दूसरों के धन को ढेले के समान तथा सबको आत्मा के समान समझना चाहिये। मूर्ख पुत्र उल्टा समझकर कहने लगा—तब तो मेरी स्त्री आपकी माता के समान हलवाई की मिठाई मिट्टी के समान है और परस्त्री एवं परधन भी अपना ही है—ऐसे समझना चाहिये।

१०. **राणावास** में कुआँ चलानेवाले को एक सेठ ने अनार दिए। मूर्ख दानों को फैंककर छिलके खाने लगा और कहने लगा, ये तो कड़वे हैं।

११. **मूर्ख सूरदास** को पड़ौस का निमंत्रण मिला। परोसते समय पूछा—क्या है? खीर! खीर कैसी? चावल जैसी! चावल कैसा? बगुले जैसा! बगुला कैसा होता है? हाथ जैसा! तब तो खीर टेढ़ी है।

१२. बूझ बुझाकड़ बूझियो, और न बूझे काय,
पांवाँ चक्की बाँध के, हीरण कूद्यो सोय।
कहो गवेरन लोक, लाटयुत लख के धानी।
बूझाकड़पै आय, सबन मिल कही कहानी।
है जु कहा यह वस्तु, नाथ! निरधार वताओ!
हम तो सब हैं अज्ञ, आप सर्वज्ञ सुनाओ!
मस्तक धुनाय हँसिके तबे, कही जु बतिका जानिये।
ले गयो सिया रावन हरी, ताकी सुरमादानिये।

—भाषाश्लोक सागर

१३. साहुकार ने पुत्र को, कहा बहू ले आओ!
मैं रोऊँ या वह रोवेगी, जल्दी मुझे बताओ!

१४. साहुकार रो दीकरो, भण्यो नहीं तिलमात।
हांजी-नांजी सीखव्यां, बिगड़ी सगली बात॥

१५. शास्त्र पढ़्या अतिसामठा, अकलबिना दुःख पाय।
मूरख भाखै मुझ थकां (तूं) रांड हुई किण न्याय॥

१६. सुन्दर साथे सत कियो, देखो! टीलो जाट।
धोबी गमाया कापड़ा, काजी कुटाई टाट॥

—कथाओं के दोहे

★

परिशिष्ट

वक्तृत्वकला के बीज
भाग १ से ५ तक में
उद्धृत ग्रन्थों व व्यक्तियों की नामावली

१ ग्रन्थ सूची

अङ्गुत्तर निकाय
अंगिरास्मृति
अग्निपुराण
अथर्ववेद
अर्थशास्त्र
अध्यात्मसार
अध्यात्मोपनिषद्
अन्ययोगव्यवच्छेद द्वात्रिंशिका
अनुयोग द्वार
अपरोक्षानुभूति
अभिधम्मपिटक
अभिधानराजेन्द्र
अभिधानचिन्तामणि
अभिज्ञान शाकुन्तल
अमितिगति श्रावकाचार
अमृतध्वनि
अमर भारती (मासिक)
अवेस्ता
अत्रिस्मृति
अष्टांग हृदय-निदान
आगम और त्रिपिटक:एक अनुशीलन
आचाराङ्ग सूत्र
आर्थिक व व्यापारिक भूगोल
आप्त-मीमांसा
आत्मानुशासन
आवश्यकनिर्युक्ति
आवश्यक मलयगिरि
आवश्यक सूत्र
आत्म-पुराण
आत्मविकास
आतुर प्रत्याख्यान
आपस्तम्बस्मृति
आवां अद्धी सुर्यश्त
औपपातिक सूत्र
इतिहास समुच्चय
ईशोपनिषद्
इस्लामधर्म
इष्टोपदेश
ईश्वरगीता
उत्तरराम चरित्र

उत्तराध्ययन सूत्र
उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति
उदान
उपदेश तरङ्गिणी
उपदेशप्रासाद
उपदेशमाला
उपदेशसुमनमाला
उपासक दशा
ऋग्वेद
ऋषिभासित
ऐतरेय ब्राह्मण
कठोपनिषद्
कथासरित्सागर
कल्याण (मासिक)
कवितावली
कात्यायन स्मृति
किशन बावनी
किरातार्जुनीय
कीर्तिकेयानुप्रेक्षा
कुमारपालचरित्र
कुमार सम्भव
कुरानशरीफ
कुरुक्षेत्र
कुवलयानन्द
कूटवेद
केनोपनिषद्
कौटिलीय अर्थशास्त्र
खुले आकाश में
गच्छाचार प्रकीर्णक
गरुड़ पुराण
गृहस्थधर्म
गीता
गीता भाष्य
गुर्जरभजनपुष्पावली
गुरुग्रन्थ साहिव
गोम्मटसार
गौतमस्मृति
गोरक्षा-शतक
घटचर्पटपंजरिका
चन्द्रप्रज्ञप्ति सूत्र
चन्द-चरित्र
चरक संहिता
चरित्र रक्षा
चरकसूत्र
चाणक्यनीति
चाणक्यसूत्र
चित्राम की चोपी
चीनी सुभाषित
छान्दोग्य उपनिषद्
जपुजी साहिब

जागृति (मासिक)
जातक
जाबालश्रुति
जाह्नवी
जीतकल्प
जीवन-लक्ष्य
जीवन सौरभ
जीवाभिगम सूत्र
जैनभारती
जैनसिद्धान्त दीपिका
जैनसिद्धान्त बोलसंग्रह
टॉड राजस्थान इतिहास
टी. बी. हैण्डबुक
डिकेन्स
डेलीमिरर
तत्त्वामृत
तत्त्वार्थ-सूत्र
तन्दुलवैचारिकगाथा
तत्त्वानुशासन
ताओ-उपनिषद्
ताओ-तेह-किंग
तात्त्विक त्रिशती
तिरुकुरुल
तीन बात
तैत्तरोय उपनिषद्
दशाश्रुत-स्कन्ध
दशाश्रुत-स्कन्धवृत्ति
दक्षसंहिता
दर्शनपाहुड
दान-चन्द्रिका
दिगम्बर प्रतिक्रमण त्रयी
दीर्घनिकाय
दोहा-संदोह
द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका
द्रव्य-संग्रह
धन-बावनो
ध्यानाष्टक
धम्मपद
धर्मबिन्दु
धर्मयुग
धर्मसंग्रह
धर्मरत्न प्रकरण
धर्मशास्त्र का इतिहास
धर्मों की फुलवारी
तैत्तिरीय ताण्ड्य महाब्राह्मण
तोरा
थेरगाथा
दशवैकालिक सूत्र
दर्शन-शुद्धि
धर्म-सूत्र

न्याय दीप
नन्दी सूत्र
नवी
नविश्ते
नवभारत टाइम्स (दैनिक)
नवनीत (मासिक)
नवीन राष्ट्र एटलस
नारद पुराण
नारद नीति
नारद परिब्राजकोपनिषद्
निर्णयसिन्धु
नियमसार
निरुक्त
निशीथ चूर्णि
निशीथ भाष्य
निरालम्बोपनिषद्
नीतिवाक्यामृत
नैषधीय चरित्र
पंचतंत्र
पंचास्तिकाय
पंजाबकेशरी
पद्मपुराण
पहेलवी टेक्सट्स्
पब्लियस साइरस
पद्मानन्द पंचविंशति
प्रवचन सार
प्रवचन सारोद्धार
प्रवचन डायरी
प्रश्नव्याकरण सूत्र
प्रशमरति
प्रज्ञापना सूत्र
पातंजल योगदर्शन
पारस्कर स्मृति
प्रास्ताविक श्लोकशतकम्
पुरानी बाइबिल
पुरुषार्थ सिद्धिच्युपाय
पुराण
पूर्व मीमांसा
बृहत्कल्प भाष्य
ब्रह्मग्रन्थावली
ब्रह्मानन्द गीता
बृहदारण्यकोपनिषद्
बृहस्पतिस्मृति
बाइबिल
बुखारी
वीरपश्त्
बुद्ध-चरित्र
बेंदीदाद
बौद्ध-साधक
बंगश्री

भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक
भक्ति-सूत्र
भगवती-सूत्र
भर्तृहरि नीतिशतक
,, वैराग्य शतक
,, श्रृंगार शतक
भविष्य-पुराण
भावप्रकाश
भाषा श्लोकसागर
भामिनीविलास
भाल्लवीय श्रुति
भूदान पत्रिका
भोजप्रबन्ध
मज्झिमनिकाय
मन्थन
महाभारत
महानिद्देस पालि
महानिशीथ भाष्य
महानिर्वाण तन्त्र
मनुस्मृति
मनोनुशासनम्
मत्स्यपुराण
महाप्रत्याख्यान
मरकूस
मिलाप
मुण्डकोपनिषद्
मुस्लिम
मेडम द स्नाल
मेगजीन डाइजेस्ट
मोहमुद्गर
यश्न्
यश्त्
यशस्तिलकचम्पू
यजुर्वेद
याज्ञवल्क्य स्मृति
यूहन्ना
योगवाशिष्ठ
योगदृष्टि समुच्चय
योगशास्त्र
योगविन्दु
रघुवंश
रश्मिमाला
राजप्रश्नीय सूत्र
रामचरित मानस
रामसतसई
रामायण
रीड मेगजीन
लूका
व्यवहार चूलिका
व्यवहार-भाष्य

व्यवहार-सूत्र
व्यासस्मृति
व्यास-संहिता
वृहत्पाराशर संहिता
वृहद् द्रव्यसंग्रह
वाल्मीकि रामायण
वशिष्ठ-स्मृति
विचित्रा (मासिक)
विवेकचूड़ामणि
विदुर नीति
विनयपिटक
विवेक विलास
विशेषावश्यक भाष्य
विशेषावश्यक चूर्णि
विश्वकोष
विज्ञान के नए आविष्कार
विसुद्धिमग्गो
विष्णुस्मृति
विश्वमित्र (दैनिक)
वीतराग स्तोत्र
वैद्यक ग्रंथ
वैद्यक-शास्त्र
वैद्य रसराजसमुच्चय
वैशेषिक दर्शन
वैदिक धर्म क्या कहता है ?
वैदिक-विचार विमर्शन
शतपथ ब्राह्मण
श्वेताश्वेतारोपनिषद्
शंकरप्रश्नोत्तरी
शंख स्मृति
शार्ङ्गधर
शान्त सुधारस
शान्तिगीता
श्राद्ध विधि
शास्त्रवार्तासमुच्चय
श्रावकप्रतिक्रमण
शिशुपालवध
शिवपुराण
शिव-संहिता
श्रीमद्भागवत
शील की नवबाड़
शुकबोध
शुक्ल युजर्वेद
षट्प्राभृत
स्कन्ध पुराण
स्थानांग सूत्र
सभा तंरग
सचित्र-विश्व कोष
सत्यार्थप्रकाश
समयसार

समवायांग सूत्र
सम्बोधसत्तरि
सप्तव्यसन सन्धान काव्य
सरिता
सर्जना
सवैया शतक
स्वप्न शास्त्र
स्वर-साधना
समाधिशतक
सन्मति तर्कप्रकरण
स्टडीज इन डिसीट
सरल मनोविज्ञान
संयुत्तनिकाय
सामायिक सूत्र
सामवेद
सावधानी रो समुद्र
सिद्धान्त कौमुदी
सिन्दूर प्रकरण
सुखमणि संहिता
सुत्तनिपात
सुभाषितावलि
सुभाषितरत्न खण्ड-मंजूषा
सुभाषित रत्नभाण्डागार
सुभाषित संचय
सुत्तपाहुड
सुबोध पद्माकर
सुभाषित रत्न सन्दोह
सुश्रुत शरीर-स्थान
सूत्रकृतांग सूत्र
सूक्तरत्नावलि
सूक्तमुक्तावलि
सौर परिवार
हउश् मज्दा
हदीश शरीफ
हरिभद्रीयआवश्यक
हनुमान नाटक
हृदय प्रदीप
हृषिकेश
हितोपदेश
हिंगुलप्रकरण
हिन्दुस्तान (दैनिक व साप्ताहिक)
हिन्दसमाचार
क्षेमेन्द्र
त्रिषष्टि शलाकापुरुष चरित्र
ज्ञाता-सूत्र
ज्ञानार्णव
ज्ञान-सार
ज्ञानप्रकाश

□□

व्यक्ति-नामावली २

अफलातून
अबुमुर्ताज
अबीदाउद
अबूबकर केतानी
अल्फान्सीकर
अरविन्द घोष
अरस्तू
आचार्य उमाशंकर
आचार्य श्रीतुलसी
आचार्य रजनीश
आरकिंग
आरजू
आस्निऔमले
ओडोर पारकर
इपिक्टेट्स
इब्राहिम लिंकन
उमास्वाति
एच, मोर
एञ्जिलो
एनीविसेन्ट
एमर्सन
एडीसन
एविड
एलाव्हीलर
एलोसियस
कविराज हरनामदास
कबीर
कन्फ्युसियस
कण्डोर सेट
कांगफ्युत्सी
कार्लाइल
कार्लमार्क्स
कामवेल
क्विकक्
कालूगणी
कुन्दकुन्दाचार्य
कूपर
केटो
कैनेथवालसर
कैम्पिस
कैथराल
कोल्टन
खलील जिब्रान
ग्वाल कवि
गांधी
गिबन
गुरु गोरखनाथ
गुरु नानक
गेटे
ग्रेविल
ग्रेनविल
गोल्डस्मिथ
गोल्डो जी
गौतम बुद्ध
जगन्नाथ कवि
जयचन्द
जयशंकर प्रसाद
जयाचार्य
जवाहरलाल नेहरु
जार्ज चेपमैन

जान मिल्टन
जामी
जॉनसन
जाविदान ए. खिरद
जीनपाली
जुगल कवि
जुन्नैद
जुन्नून
जूर्वट
जेंगविल
जे. फरीश
जे. नोफेन
जे. पी. सी. बर्नार्ड
जे. पी. हालेण्ड
जौक
टप्पर
टालस्टाय
टामस कैम्पिस
टालमेज
टी. एल. वास्वानी
ड. ल. जार्ज
डाइट रॉट
डॉ. हरदयालमाथुर
डॉ. एलेग्जी केरेल
डॉ. ग्यास जे रोल्ड

डाड्रिज
डिकेन्स
डिजरायली
डी० जेरोल्ड
डी० एल० मूडी
डेलकार्नेगी
तिरमजी
तुलसीदास
थामस केम्पी
थामस फूलर
थेल्स
थैंकरे
थोरो
दादू
दीपकवि
धनमुनि
धूमकेतु
नकुलेश्वर
नर्जिन
नलिन
नाथजी
निकोलस
निपट निरंजन
निर्मला हरवंशसिंह
नीत्से

नेपोलियन
प्लुटार्क
प्लेटो
पटोरिया
पद्माकर
परसराम
पीटर वैरो
पीपाकवि
पेस्क
प्रेमचन्द
पेरोसेल्स
पोप
फुलर
फ्रैंकलिन
बर्टन
बनारसीदास
बर्नार्डशा
बलवर
ब्रह्मदत्त कवि
ब्रह्मानन्द
बालजक
बावरी साहिब
बिल्हण कवि
बीचर
बुल्लेशाह

बूलकोट
बेकन
बेताल कवि
बैल
बो. बो.
बोधा
भगवतीचरण वर्मा
भिक्षुगणी
भूधर दास
महात्मा भगवानदीन
मदन द० रियू
महर्षि रमण
मार्कटेन
माण्टेन
माघकवि
मिल्टन
मेरीकोन ए-डी
मुहम्मद-विन-वशीर
मेरी ब्राउन
मेसेंजर
मैकिन्तोस
मैथिलीशरण गुप्त
मोलियर
यशोविजय जी
यूसूफ अस्वात

रज्जबदास
रडयार्ड कियलिंग
रहीम
रविया
रवि दिवाकर
रस्किन
रवीन्द्रनाथ टैगोर
रामकृष्ण परमहंस
रामचरण कवि
रामतीर्थ
रामरतन शर्मा
रिस्टर
रिशर
रूसो
रोम्यांरोला
रोशे
रीशफूको
लाफान्टेन
लावेल
लांगफेलो
लीटन
लीनलिज
लुकमान हकीम
लूथर
लेलिन

लोकमान्य तिलक
क्लेर
व्यावली
वृन्द कवि
वायरन
वायर्स
वारटल
वाल्टेयर
वाशिंगटन इर्विन
विजयधर्मसूरि
विनोबा भावे
विलकाक्स
विलियमपिट
विलियमपेन
विवेकानन्द
शंकराचार्य
शापेनहावर
शिलर
शिवानन्द
शुभचन्द्राचार्य
शेक्सपियर
शेखसादी
स्टैनिलस
स्टील
स्पेंसर

सत्यदेवनारायण सिन्हा
सन्त आगस्तीन
संत ज्ञानेश्वर
संत तुकाराम
सन्त निहालसिंह
सद्गुरुचरण अवस्थी
समर्थगुरु रामदास
सायरस
सिगुरिनी
स्विट
सिसरो
सुकरात
सुन्दरदास
सूरत कवि
सूरदास
सेलहास्ट
सैनेका
सेमुअल जानसन
सोमदेव सूरि
हजरत अली
हज़रत मुहम्मद
हरिभद्र सूरि
हलवर्ट
हयहया
ह्यूम
हाफिज
हावेल
हालीवर्टन
हार्टले
हे एन. भांग
हेनरी वार्ड वीचर
हैजलिट
हैली वर्टन
होमर
होरेश बाल पोल
त्रायण्ट

□ □

लेखक की महत्त्वपूर्ण रचनाएं

प्रकाशित

१.	एक आदर्श आत्मा	०-४०	**हरकचन्द इन्द्रचन्द नौलखा** माधोगंज, लश्कर ग्वालियर (म० प्र०)
२.	चमकते चांद	०-४०	**रतीराम रामस्वरूप जैन** पो० कैथलमण्डी (हरियाणा)
३.	चरित्र-प्रकाश	२-५०	**श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा** बालोतरा (राजस्थान)
४.	भजनों की भेंट	०-६०	,, ,,
५.	लोक प्रकाश	१-२५	,, ,,
६.	चौदह नियम	०-२०	**आदर्श साहित्य संघ** पो० चूरु (राजस्थान)
७.	मोक्ष प्रकाश		,, ,,
८.	जैन-जीवन	०-६५	**श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा** टोहाना (हरियाणा)

९.	प्रश्न प्रकाश	०-८०	**श्री जैन श्वे० तेरापन्थी महासभा** ३, पोर्चगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
१०.	मनोनिग्रह के दो मार्ग	१-२५	**मदनचन्द सम्पतराय बोरड़** दुकान नं० ४०, धानमण्डी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)
११.	सच्चा धन	०-३०	**श्री दलीपचन्द** **द्वारा : ला० दयाराम बृजलाल जैन**
१२.	सोलह सतियां (द्वि. सं.)	२-००	टोहाना मण्डी (हरियाणा)
	सोलह सतियां (तृ. सं.)		**श्री चांदमल मानिकचन्द चोरड़िया** पो० छापर, (चूरू, राजस्थान)
१३.	ज्ञान के गीत (चौथा संस्करण)	१-००	**लाला दयाराम मंगतराम जैन** टोहानामण्डी (हरियाणा)
१४.	ज्ञान-प्रकाश	१-००	**श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा** पो० भीनासर (राजस्थान)
१५.	जीवन प्रकाश (उर्दू)		**श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा** नाभा (पंजाब)
१६.	सच्चा धन (उर्दू)	०-३०	,, ,,
१७.	तेरापन्थ एटले शुं?	०-६२	**नेमीचन्द नगीनचन्द जवेरी** 'चन्द्र महल' १३०,शेखमैमन स्ट्रीट, बम्बई-२
१८.	धर्म एटले शुं?	०-७५	
१९.	परीक्षक बनो!	०-७५	

२०.	वक्तृत्वकला के बीज (भाग १ से१० तक)		समन्वय प्रकाशन
	प्रत्येक भाग	५-५०	द्वारा : **मोतीलाल पारख**
	प्रकाशित ५ भाग		पो० बाक्स नं० ४२, अहमदाबाद-२२
	प्रेंस में ५ भाग		एवं **संजय साहित्य संगम** दासबिल्डिग नं० ५, बिलोचपुरा, आगरा-२

लेखक की अप्रकाशित रचनाएं

हिन्दी :
अवधान-विधि
उपदेश-द्विपञ्चाशिका
उपदेश सुमनमाला
जैनमहाभारत :
जैन रामायण
दौहा-संदोह
व्याख्यान मणिमाला
व्याख्यान रत्नमञ्जूषा
वैदिक विचार विमर्शन (बड़ा)
संक्षिप्त वैदिक विचार विमर्शन
संस्कृत बोलने का सरल तरीका

संस्कृत :
ऐक्यम्
एकाह्निक कालूशतकम्
देवगुरु धर्म द्वात्रिंशिका
प्रास्ताविकश्लोक शतकम्
भाविनी
श्रीकालू कल्याणमन्दिरम्
श्रीभिक्षुशब्दानुशासन वृत्तिद्धि-तप्रकरणम्

गुजराती :
गुर्जर व्याख्यान रत्नावलि
गुर्जर भजन पुष्पावलि

राजस्थानी :
औपदेशिक ढालें
कथा प्रवन्ध
ग्यारह छोटे व्याख्यान
छः बड़े व्याख्यान
धन बावनी
प्रास्ताविक ढालें
सवैया-शतक
सावधानी रो समुद्र

पंजाबी :
पंजाब पच्चीसी

□□

वक्तृत्व कला के बीज

कृति और कृतिकार

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी के नेतृत्व में आज प्रगति-शिखर पर पहुँच रहा है। मुनि श्री धनराज जी 'प्रथम' (श्री धनमुनि) इस धर्मसंघ के बहुश्रुत विद्वान, सरसकवि, लेखक कुशल संग्रहकार, मधुर-प्रवक्ता और सुयोग्य शिक्षक संत हैं। आप संघ के सर्वप्रथम शतावधानी हैं। वि०सं० २००४ माघ कृष्णा १४ रविवार को बम्बई में सर्वप्रथम आपने शतावधान का प्रयोग कर लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया। संस्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी तथा उर्दू आदि भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

प्रस्तुत कृति वक्तृत्वकला के बीज आपकी एक श्रमसाध्य अद्वितीय कृति है। वक्तृत्व एवं लेखन के योग्य इतना उपयोगी विशाल संग्रह सम्भवतः किसी भी भाषा में अब तक प्रकाशित नहीं हुआ होगा। यआपने शतावधान का प्रयोकोश (Encycl... को आश्चर्यचकित कर दिया

...स्कृत, हिन्दी, राजस्थानी, गुजरा...

इस ...बी तथा उर्दू आदि भाषाओं में आप...

श्री धन... ग्रन्थों का प्रणयन किया है।

जन्म-वि... प्रस्तुत कृति वक्तृत्वकला के बी...

दीक्षा-वि... एक श्रमसाध्य अद्वितीय ...ज०)

कृतियां-लगभग ...त्व एवं लेखन के योग्य

...विशाल संग्रह ...

आवरण पृष्ठ के मुद्रक : मोहन मुद्रणालय, आगरा-२

(Domestic & International Couriers) (Domestic & International Couriers) (Domestic & International Cou...